आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

श्री नमस्कार महामन्त्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

वर्ष 60 अंक 5
मई, 2003 वैशाख, 2060

अलंकारों के सौंदर्य शिल्प!

स्वर्ण आभूषणों को
सौंदर्य का मंगल प्रतिक
माना गया है।
समय समयानुसार
इन गहनों के रूप बदले,
जिन में हमारी
वैभवशाली एवं शालीन सभ्यता
की छवी स्पष्ट होती है।
ऐसे ही कुछ अलंकार शिल्पोंका
अनुपम दर्शन संजो लाये है।
देश के सुविख्यात स्वर्ण आभूषण निर्माता
''रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स'' जलगाँव
नई ऋतु एवं त्योहारों के स्वागत हेतु
सोने - चांदी एवं हीरों के
यह सुंदर अलंकार शिल्प!

सोने के गहने, हीरों के आभुषण
सब कुछ एक ही छत के नीचे

व्यापारियों के लिए सोने के गहने एवं
चांदी पात्रों की होलसेल बिक्री सुविधा

अवश्य पधारिए!
जहाँ विश्वास हि परम्परा है!

रतनलाल सी.बाफना,ज्वेलर्स

पारस महल
चांदी भांडी शोरुम
'शुद्ध आहार शाकाहार'

सुभाष चौक, जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३,
२२२६२९, २२२६३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)

कलामुद्रा

सावधान : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नही!

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

● प्रकाशक
प्रकाशचन्द डागा
मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 2565997

● संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

● सम्पादक
डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

● सम्पादकीय सम्पर्क.सूत्र
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005(राज.)
फोन नं. 0291-2730081

● सम्पादक मण्डल
डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

● भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. JPC/3825/02/2003-05

● सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

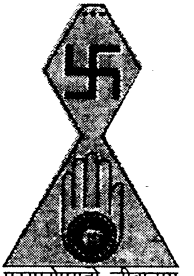

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

छिन्नावाएसु पंथेसु,
आउरे सुपिवासिए।
परिसुक्कमुहेऽदीणे,
तं तितिक्खे परीसहं।।
–उत्तराध्ययन सूत्र २.५

निर्जन पथ में यात्रा करते,
अत्यन्त तृषातुर हो करके।
सूखा मुँह मुनि दीनभाव तज,
चले प्यास को सह करके ।।५।।

मई 2003
वीर निर्वाण सं. 2529
वैशाख, 2060

वर्ष : 60 अंक : 05

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन/निबन्ध

महापुरुष का गुण–स्मरण	: आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	7
द्रव्य-निद्रा पर विजय पायी जा सकती है	: तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	12
मांसाहारी कृषि एवं मांस निर्यात : कलंक का टीका	: प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती जी	21
जैनदर्शनाभिमुख शिक्षा और उसकी उपयोगिता	: डॉ. आशा भंसाली	26
विचारों का प्रभाव	: श्री प्रकाशचन्द लोढ़ा	39
सेवा और साधना के आठ आयाम	: श्री दिलीप धींग 'जैन'	44
सम्यग्दर्शन	: डॉ. बिमला भण्डारी	48

विचार/तत्त्वचर्चा

ब्रह्मचर्य (3)	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	6
पंचमंगल से देह का द्रव्य-स्वास्थ्य एवं आत्मा का भाव-स्वास्थ्य	: श्री नवरतनमल डोसी	24
आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ	: श्री धर्मचन्द जैन	35
माता-पिता की सेवा	: श्री नितेश नागोता –'जैन'	36
साधु-साध्वी को सुपात्र दान के समय आचरण	: श्री आनन्दराज धीसुलाल तलेसरा	42

कथा/कविता/प्रेरक-प्रसंग

अहिंसा	: श्री दिलीप धींग	11
अनमोल जिन्दगी	: श्री भंवरलाल मेहता	18
फांसी पर चढ़ने से पूर्व की सामायिक	: डॉ. एस.एल. नागौरी	19
पशुबलि के प्रबल विरोधी थे दार्शनिक प्लेटो	: श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन 'एडवोकेट'	25
अहिंसा वर्ष द्वादशपदी	: श्री मनोज कुमार जैन 'निर्लिप्त'	37
घटना कल की	: आर. प्रसन्नचन्द चोरड़िया	41
सन्तान	: श्रीमती शर्मिला जैन खींवसरा	43
सम्यक् बनो मन	: श्री अशोक बोहरा	47
आओ पर्यावरण सुधारें	: डॉ. महेन्द्रसागर प्रचण्डिया	52

स्तम्भ/ अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
जिनवाणी पर अभिमत	: संकलित	51
साहित्य–समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	53
समाचार-संकलन	: संकलित	54
श्रद्धांजलि	: संकलित	66

अक्षय तृतीया

डॉ. धर्मचन्द जैन

भारतीय संस्कृति में अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ला तृतीया) विशिष्ट पर्व है। सभी जाति एवं धर्मों के लोग इस दिन को शुभ दिन स्वीकार करते हैं, क्योंकि यह तिथि कभी क्षय नहीं होती। क्षय नहीं होने से ही सम्भवतः इसका नाम अक्षय तृतीया है। मांगलिक कार्यों के लिए यह अबूझ मुहूर्त है। अर्थात् इसमें ज्योतिर्विद से परामर्श या पूछताछ की आवश्यकता नहीं है। किसान अपने बालक-बालिकाओं का विवाह इस दिन धूमधाम से करते हैं। यह भारत में लोक संस्कृति के पर्व के रूप में प्रतिष्ठित है।

भारतीय संस्कृति के इस महत्त्वपूर्ण दिवस का जैन परम्परा में भी तप एवं दान के पर्व के रूप में विशिष्ट स्थान है। यह तीर्थंकर ऋषभदेव के उत्कृष्ट तप एवं श्रेयांस कुमार के उत्कृष्ट दान की स्मृति दिलाता है। परम्परा के अनुसार इस दिन प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का पारणा हुआ था। भगवान ऋषभदेव ने चैत्र कृष्णा अष्टमी को दीक्षा ग्रहण कर तप प्रारम्भ किया था। इसका पारणा एक वर्ष से भी अधिक समय के पश्चात् उनके प्रपौत्र श्रेयांस कुमार के हाथों इक्षुरस से हुआ। यद्यपि समवायांग सूत्र में 'संवच्छरेण भिक्खा लद्धा' वाक्य में एक संवत्सर में भिक्षा प्राप्ति का उल्लेख है, किन्तु संवत्सर के पाँच प्रकारों में यह कौनसा संवत्सर है, यह स्पष्ट नहीं है। ऋतु संवत्सर के अनुसार ३६० दिन का वर्ष माना गया है। इस संवत्सर को ध्यान में रखते हुए चैत्र कृष्णा नवमी को एक वर्ष माना जा सकता है, किन्तु आगमपाठ में संवत्सर शब्द से एक वर्ष से कुछ अधिक समय का अर्थ ग्रहण किये जाने में व्यवहार भाषा बाधक नहीं बनती है। आज भी हम व्यवहार भाषा में अपनी उम्र को १८ वर्ष से ३०-४० दिन अधिक होने पर भी १८ वर्ष की ही कहते हैं। आगमकारों ने इस प्रकार के व्यवहार भाषा के प्रयोग अन्यत्र भी किए हैं। उदाहरण के लिए भगवान महावीर के छद्मस्थ काल का उल्लेख स्थानांग सूत्र में १२ वर्ष १३ पक्ष अर्थात् १२½ वर्ष और १५ दिन का मिलता है। ('दुवालस संवच्छराइं तेरस पक्ख छउमत्थ' स्था.९, उ.३, सूत्र ६६३) जबकि आचारांग सूत्र में १२ वर्ष का ही उल्लेख प्राप्त होता है।('बारस वासाइं वोसट्ठकाए चियत्त देहे जे केई उवसग्गा समुप्पज्जंति...ते सव्वे उवसग्गे, समुप्पण्णे समाणे सम्मं सहिस्सामि, खमिस्सामि, अहियासिस्सामि' आचारांग श्रु.२, अ.२३) इन दोनों कथनों से आगम- वाक्यों में पारस्परिक विरोध स्वीकार नहीं करना चाहिए। दोनों आगम-वाक्यों का एक ही अभिप्राय है। विवक्षा विशेष से कथन की भिन्नता है।

जिस प्रकार आचारांग सूत्र में १२½ वर्ष १५ दिन को मात्र १२ वर्ष कहा गया, उसी प्रकार भगवान ऋषभदेव के १ वर्ष १ माह १० दिन के पारणक को समवायांग सूत्र में 'संवच्छरेण' शब्द के द्वारा १ वर्ष का कह दिया गया। अक्षय तृतीया को भगवान ऋषभदेव का पारणक यदि किसी की दृष्टि में आगम सिद्ध नहीं है, उसे असिद्ध भी नहीं माना जा सकता, क्योंकि आगम की व्यवहार भाषा से यह सिद्ध है। दूसरी बात यह है कि आगम में चैत्र कृष्णा नवमी के पारणक का भी कहीं उल्लेख नहीं है, अत: अक्षय तृतीया के निमित्त से होने वाले तपाराधन एवं उसकी अनुमोदना के आयोजन को अनुचित ठहराना मात्र तपस्या में अवरोध के अलावा और कुछ प्रतीत नहीं होता है।

भगवान ऋषभदेव का पारणक अक्षय तृतीया को हुआ था, ऐसी स्पष्ट परम्परा है। इस परम्परा की पुष्टि आचार्य हेमचन्द्र सूरि के निम्नांकित कथन से होती है-

राघशुक्ल-तृतीयायां, दानमासीत्तदक्षयम्।
पर्वाक्षयतृतीयेति, ततोऽद्यापि प्रवर्तते।।

-त्रिषष्टिश्लाकापुरुष चरित, पर्व 1, सर्ग 3, श्लोक 301

जैन धर्म में समय-समय पर अनेक नई बातें जुड़ती रही हैं। उनका समावेश तप-त्याग की अभिवृद्धि के निमित्त से किया जाता रहा है। उसमें मुख्य बात यह है कि वे धर्म-क्रियाएँ आपेक्षिक दृष्टि से संवर और निर्जरा का पोषण करने वाली होनी चाहिए। यदि किसी क्रिया के द्वारा संवर एवं निर्जरा का पोषण नहीं होता है तो ऐसी क्रियाएँ व्यर्थ एवं त्याज्य हैं। आज द्वितीया, पंचमी, अष्टमी, एकादशी और चतुर्दशी इन पाँच तिथियों को पर्वतिथि के रूप में मान्यता प्राप्त है। आगम में पाँच पर्व तिथियों के रूप में सीधा-सीधा उल्लेख कहीं नहीं मिलता है। किन्तु आचार्यों ने धर्म-पोषण के लिए इन पाँच पर्व तिथियों को प्रतिष्ठित कर श्रावक समुदाय में तप-त्याग की वृत्ति को अभिवृद्ध किया है। इसी प्रकार दयाव्रत का सीधा उल्लेख आगम में नहीं है, परन्तु आज स्थानकवासी समाज में इसे जो प्रतिष्ठा प्राप्त है, उससे कोई असहमत नहीं है। यही नहीं आठ प्रकार की दया चार प्रहर की एवं उससे कम अवधि की भी प्रचलित हो रही है। अनेक प्रकार के प्रत्याख्यान आगम में उल्लिखित नहीं होने पर भी आगम- विरोधी न होने से सबके द्वारा स्वीकृत हैं।

कोई भी धर्म-प्रवृत्ति हो, देश काल परिस्थितियों के आधार पर भले ही वे नई जुड़ी हों, किन्तु उनकी समय-समय पर समीक्षा होती रहनी चाहिए। उन प्रवृत्तियों में आए विकारों को दूर करने का प्रयत्न होना चाहिए। समीक्षा होना, विकारों को दूर करने हेतु प्रयत्न करना-सकारात्मक पक्ष है, किन्तु हमारा कथन

ही सत्य, शेष सब मिथ्या, हम ही धर्म के अग्रणी शेष सब मूर्ख, ऐसा चिन्तन लेकर चलना नकारात्मक पक्ष है। अक्षय तृतीया के निमित्त से देश में हजारों तपस्याएँ होती हैं, उन्हें कोई भी नाम दिया जाए- वर्षीतप, अर्द्धवर्षीतप या मात्र एकान्तर उपवास, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। महत्त्व तपस्या का है। तपस्वी यदि शुद्ध भाव से तप करता है तो ही तप का महत्त्व है। यदि तपस्वी में अहंकार के पोषण की भावना बलवती हो जाती है, दिखावे का भाव आ जाता है या बाह्य आडम्बर में उलझ जाता है तो घाटे का सौदा है।

चातुर्मासों की घोषणा होती है तब उन चातुर्मासों में श्रद्धालु श्रावक-श्राविका बस, ट्रेन आदि से यात्रा करके भी पहुँचते हैं, उसी प्रकार अक्षय तृतीया के दिन यदि वे संत-मुनिराजों की सेवा में जाएँ, तो उसे भी दोष-पूर्ण नहीं समझा जाना चाहिए। स्थानकवासी संतों ने पालीताणा, हस्तिनापुर आदि अन्य स्थानों पर जाने वाले तपस्वियों को वहाँ जाने से रोककर स्थानकवासी परम्परा की ही रक्षा की है। उनके इस रक्षण के महत्त्व को भी गौण नहीं समझना चाहिए। यदि कोई सम्प्रदाय अपने यहाँ अक्षय तृतीया का पारणक दिवस नहीं मनाती है तो अच्छी बात है, किन्तु अन्य सम्प्रदायों की निन्दा-विकथा कर पापोन्मुख होना सदाचरण की कसौटी पर युक्तिसंगत नहीं कहा जा सकता है।

एक युग था जब पर्युषण में स्वाध्यायी भेजने का विरोध किया गया। किन्तु आज विरोध करने वाली सम्प्रदाएँ भी बड़े उत्साह से पर्युषण में स्वाध्यायी भेजने का कार्य कर रही हैं। किसी प्रवृत्ति में गुण नजर आता हो उसे अपनाने में संकोच होना भी नहीं चाहिए, किन्तु जिस प्रवृत्ति में गुण नजर नहीं आ रहा हो तो स्वयं उससे पृथक् रहकर आनन्दित रहना चाहिए। दूसरों में अनावश्यक दोष ढूँढने एवं स्वयं को सही सिद्ध करने की प्रवृत्ति किसी भी दृष्टि से उपादेय नहीं है।

आरम्भ-परिग्रह जितना कम हो, उतना अच्छा है। इसके लिए सम्यक् दृष्टि एवं सम्यक् सोच आवश्यक है। जब तक हमें मन, वचन, काया का योग प्राप्त है तब तक उसका शुभयोग में उपयोग ही साधना के लिए श्रेयस्कर है। स्वयं इनका शुभयोग में उपयोग करें तथा दूसरों को इस ओर प्रेरित करें। पर्व तिथि हो, पक्खी पर्व हो, पर्युषण पर्व हो अथवा अक्षय-तृतीया हो सभी पर्व- दिवसों को तप-त्याग पूर्वक मनाया जाना चाहिए अर्थात् मन, वचन और काया के शुभ योग का उपयोग करना चाहिए। जिन संत-सतियों के सान्निध्य में धर्माराधन हो, उन्हें भी अहं पोषण से बचना चाहिए तथा अपने अहं पोषण के लिए दूसरों को धर्मक्रिया में प्रवृत्त नहीं करना चाहिए। उनके उद्धार या आत्मोत्थान की भावना से ही धर्मक्रिया में प्रवृत्ति की प्रेरणा समुचित है।

ब्रह्मचर्य (3)

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

जहाँ स्त्री, नपुंसक और पशु निवास करते हों, वहाँ ब्रह्मचारी साधक को नहीं रहना चाहिए। ब्रह्मचारिणी स्त्री के लिए भी यही नियम जाति-परिवर्तन के साथ लागू होता है। इसी प्रकार मात्रा से अधिक भोजन करना, उत्तेजक भोजन करना कामुकता वर्द्धक बातें करना, विभूषा-शृंगार करना और इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति धारण करना, इत्यादि ऐसी बातें हैं जिनसे ब्रह्मचारी को सदैव बचते रहना चाहिए। जो इनसे बचता रहता है, उसके ब्रह्मचर्य व्रत को आंच नहीं आती। जिस कारण से भी वासना भड़कती हो, उससे दूर रहना ब्रह्मचारी के लिए आवश्यक है।

तारुण्य या प्रौढ़ावस्था में यदि सहशिक्षा हो तो वह ब्रह्मचर्य पालन में बाधक होती है। अच्छे संस्कारों वाले बालक-बालिकाएँ भले ही अपने को कायिक संबंध से बचा लें, किन्तु मानसिक अपवित्रता से बचना तो बहुत कठिन है और जब मन में अपवित्रता उत्पन्न हो जाती है तो कायिक अधः पतन होते क्या देर लगती है? तरुण अवस्था में अनंग क्रीड़ा की स्थिति उत्पन्न होने का खतरा बना रहता है। अतएव माता-पिता आदि का यह परम कर्त्तव्य है कि वे अपनी सन्तति के जीवन व्यवहार पर बारीक नजर रखें और कुसंगति से बचाने का यत्न करें। उनके लिए ऐसे पवित्र वातावरण का निर्माण करें कि वे गन्दे विचारों से बचे रहें और खराब आदतों से परिचित न हो पाएँ।

काम-वासना की उत्तेजना के यों तो अनेक कारण हो सकते हैं और बुद्धिमान व्यक्ति को उन सबसे बचना चाहिए, परन्तु दो कारण उनमें प्रधान माने जा सकते हैं। दुराचारी लोगों की कुसंगति और खानपान संबंधी असंयम। व्रती पुरुष भी कुसंगति में पड़कर गिर जाता है और अपने व्रत से भ्रष्ट हो जाता है। इसी प्रकार जो लोग आहार के संबंध में असंयमी होते हैं, उत्तेजक भोजन करते हैं, उनके चित्त में भी काम-भोग की अभिलाषा तीव्र रहती है।

जो पूर्ण ब्रह्मचर्य के आदर्श तक नहीं पहुँच सकते, उन्हें भी देशतः ब्रह्मचर्य का तो पालन करना ही चाहिए। परस्त्रीगमन का त्याग करने के साथ-साथ जो स्वपत्नी के साथ भी मर्यादित रहता है, वह विशेष रूप से देशतः ब्रह्मचर्य का पालन करके जीवन को ओजस्वी और तेजस्वी बनाता है।

महापुरुष का गुण-स्मरण

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

औरंगाबाद में वैशाख शुक्ला अष्टमी 1 मई 2001 को आचार्यप्रवर द्वारा यह प्रवचन आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्य तिथि पर दिया गया था। औरंगाबाद एवं महाराष्ट्र की धरा के परिप्रेक्ष्य में फरमाया गया यह प्रवचन आध्यात्मिकता की ओर चरण बढ़ाने हेतु महापुरुषों से प्रेरणा ग्रहण करने के लिए प्रेरित करता है। -*सम्पादक*

संसार में अपने स्वार्थ से जीने वाले अनन्त प्राणी हैं। किन्तु उपकार की भावना से हर-पल, हर-क्षण शासन सेवा में और ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना में जीवन समर्पित करने वाले विरले पुरुष होते हैं। वे महापुरुष जीवन के हर क्षेत्र में कीर्तिमान कायम करते हैं।

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज सा बचपन से वैरागी रहे। दस वर्ष की वय में उस महापुरुष ने संयम अंगीकार किया। पूज्य गुरुदेव ने अपने कृतित्व से नया इतिहास रच दिया। शासन में जितने भी प्रतिभासम्पन्न आचार्य हुए, उन्होंने बालवय में दीक्षा अंगीकार की। रत्नवंश के प्रथम से लेकर सातवें पाट तक सभी आचार्य बालवय में दीक्षित होने वाले रहे हैं। बाल्यकाल में सृजित संस्कार जीवनपर्यन्त रहते हैं। इसीलिए कहा जाता है- आज का बालक कल का संरक्षक बन सकता है। वह संघ-समाज को लेकर चलने वाला ही नहीं, शासन को दीप्तिमान करने वाला भी बन सकता है।

आचार्य भगवन्त ने उत्तर से दक्षिण तक संस्कार निर्माण करने वाली जैन पाठशालाओं, शिक्षण संस्थाओं, स्वाध्याय संघों और धार्मिक शिविरों की प्रेरणा की। वि.सं. २००६ से तो सेवा में साथ रहने के कारण मैं कह सकता हूँ कि भगवन्त निरन्तर प्रभावी प्रेरणा करने वाले युगपुरुष रहे हैं। उनका कथन था- आज का बच्चा कल शासन की धुरी बनेगा।

इतिहास गवाह है। आपने शायद सुना होगा- चन्द्रगुप्त को स्वप्न आये, जिनका समाधान भद्रबाहु ने दिया। उन स्वप्नों में एक स्वप्न यह भी था कि महावीर के इस रथ को चलाने वाले बैल नहीं, बछड़े होंगे। स्वप्न का अर्थ पूर्वधर आचार्य श्री भद्रबाहु ने किया, उसमें यही बात मुख्य थी कि जितने जवान दीक्षित नहीं होंगे उतने बाल दीक्षित होंगे। यह बात केवल स्थानकवासी समाज के लिए नहीं, मंदिरमार्गी, तेरापंथी, दिगम्बर आदि सभी समाजों के लिये थी। आज भी आप अनुभव करते होंगे कि दीक्षित होने वालों में बालवय वाले

ज्यादा हैं। गृहस्थ जीवन में आने के बाद दीक्षाएँ कम होती हैं। आप सुनने वाले हैं, किन्तु शासन को दिपाने में कोई-कोई ही आगे आता है। जरूरत है आप बाल्यकाल में संस्कार सृजित करें।

आप आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज का नाम लें या आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज का नाम लें। जितने भी प्रभावशाली आचार्य हुए, वे सब बालवय में दीक्षित हुए। आचार्यसम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज की प्रेरणा से पाथर्डी बोर्ड का गठन भी बालक-बालिकाओं में संस्कारों के बीजारोपण की भावना से किया गया। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. में बचपन से गुरु-गम्भीर ज्ञान था। एक पंडित उन्हें पढ़ा रहा था। पढ़ाते-पढ़ाते उस पंडित ने एक बात रखी कि अनपढ़ पंडित और पढ़ा लिखा साधु बराबर होता है। आपको ऐसी बात कह दें या सुनने में आए तो वह आपको लगे या न लगे, परन्तु आचार्य भगवन्त को पंडित की बात खल गई। भगवन्त ने स्वाध्याय का शंखनाद किया, धार्मिक पाठशालाओं की प्रेरणा की। आपने गोड़बोले का नाम सुना होगा। वह जैन साधुओं को पढ़ाने के लिए स्पष्ट मना कर जाता। उसका कथन था कि साधुओं को पढ़ाना पाप है। जैसे आचार्य भगवन्त (हस्तीमल जी महाराज) को पंडित की बात लगी, ऐसे ही आचार्यसम्राट् को वह बात खल गई। उन्होंने जैन पंडित तैयार करने की भावना से पाथर्डी बोर्ड का गठन किया।

मैं बहुत स्पष्ट कह रहा हूँ कि धनपति बनने में आपकी जितनी इच्छा है, रुचि और भावना है, वैसी ज्ञानी बनने की नहीं है। दूसरे-दूसरे देशों के छात्र-छात्राएँ जैन शास्त्रों का अध्ययन-अनुसंधान करने में सक्रिय हैं, हमारे देश में वैसी सक्रियता नहींवत् है। औरंगाबाद बड़ा शहर है, मैं आपसे पूछूँ आप यहाँ के दो-चार पंडितों के नाम तो बताओ? आपके यहाँ इंजीनियर मिलेंगे, सी.ए., बी.ए., अधिकारी मिलेंगे, सारे पद वाले मिल सकते हैं, किन्तु ज्ञानी या पंडित का पूछा जाय तो आपके पास कोई जवाब नहीं।

शासन कैसे चलता है, इस ओर भी आपका अपना कोई चिन्तन नहीं। संतों के आगमन से प्रेरणा पाकर कभी कोई वैरागी बनता भी है तो कई ऐसे श्रावक भी मिल जायेंगे जो दीक्षा रोकने में आगे रहेंगे। त्यागानुरागी भाई-बहिनों को सहयोग करके आगे बढ़ाने वाले विरले हैं। आप शासन-सेवा में कभी अपना चिन्तन तो करें। आपमें से कुछ लोग हैं जो पार्षद हैं, विधायक हैं, मंत्री भी हैं, पर वैरागी कितने हैं पूछा जाय तो....? मैं यह बात क्यों कह रहा हूँ? उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णन मिलता है- श्रावक भी जैन शास्त्रों का ज्ञाता है।

मैंने सुना है, पढ़ा है- कई साधु आगमों के अभ्यासी श्रावक के पास ज्ञानाभ्यास की दृष्टि से पहुँचते थे। आज विद्वान् और पंडित की बात तो दूर, श्रावक का कर्त्तव्य क्या, श्रावक धर्म क्या होता है, इसकी जानकारी भी शायद विरलों को है।

तीर्थंकर भगवन्तों ने आपको अम्मापिया कहा है। आपको धनपति समझकर यह उपमा नहीं दी गई। आप श्रमणोपासक हैं, साधु के जीवन-निर्माण में आपका सहयोग रहना चाहिए। पर, आज स्थिति कुछ अलग है। आज विरले श्रावक होंगे जो संतों को समझा सकें, उन्हें कुछ कह सकें। हाँ में हाँ मिलाने वाले और संतों को संयम-साधना से गिराने वाले बहुत मिल जायेंगे।

आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) बचपन में संस्कार-निर्माण पर बल देने वाले महापुरुष रहे हैं। आज हम उनके गुणगान तो कर लेंगे, पर उनके बताये मार्ग पर चलने का कभी विचार तक नहीं करते। विहार में हम गाँवों में जाते हैं तो शहर में भी आते हैं। जहाँ पर सौ-पचास बच्चे धार्मिक शिक्षण के लिए आते हों, प्रायः ऐसे कम स्थान हैं। इस्लाम समाज में प्रायः बच्चे से बूढ़े तक नमाज पढ़ने आते हैं। उनको उर्दू और नमाज पढ़ाने के लिए कितने फकीर आये? आपके यहाँ तो चौमासे होते होंगे। मैं आपसे पूछूँ- आप सबको सामायिक तो आती है? (चेहरा देखकर) क्यों नहीं आई सामायिक? क्या कभी चिंतन चला? सामायिक ही नहीं आती तो प्रतिक्रमण की बात क्या पूछूँ?

मैंने आज एक भाई से पूछा- क्या करते हो? वह बोला-बाबजी! पर्युषण में आठ दिन सामायिक करता हूँ। यह किसी एक व्यक्ति की नहीं, आप सबके सोचने की बात है कि आप कमाते रोज हैं, परिवार को रोज संभालते हैं, भोजन रोज करते हैं तो फिर सामायिक रोज क्यों नहीं? क्या आपका काम केवल धन कमाने का, बंगला बनवाने का और प्रतिष्ठा पाने तक का ही रह गया? आप सोचें तो सही-साथ क्या लेकर जायेंगे? आप जिस पुण्यशालिता से अभी आराम में हैं, आगे के लिए उसे भुला कर क्यों बैठे हैं?

आचार्य भगवन्त की स्वाध्याय संघ के पीछे भावना थी कि युवक स्वाध्याय के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करें, बुजुर्ग अवस्था के साथ व्यवस्था करें और आबाल-वृद्ध, सामायिक-साधना से शांति प्राप्त करें। भगवन्त ने बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों, स्वाध्यायियों और ध्यान-मौन साधना शिविरों की प्रेरणा की। आप दुकान पर बैठे-बैठे, घर में टी.वी. देखते- देखते और हथाइयों पर थांरी-म्हारी करते नहीं थकते। यहाँ एक से दूसरी सामायिक का कहा जाय तो वह भारी लगती है। औरंगाबाद में हजार से ऊपर जैन घर

होंगे। धर्मस्थान कब भरता है? संत आने पर कुछ लोग व्याख्यान में आ जायेंगे और संतों के विहार के साथ उनका आना भी बन्द हो जायेगा। आचार्य भगवन्त ने श्रावक संघ की इस कमी को दूर करने के लिए स्वाध्याय का शंखनाद किया। पहले-पहले इसकी आलोचना भी हुई। आज आलोचना करने वाले लोग स्वाध्याय प्रवृत्ति को चला रहे है और प्रायः सभी परम्पराओं में स्वाध्याय प्रवृत्ति चल रही है। मैं औरंगाबाद की बात पूछूँ- यहाँ कितने भाई और कितनी बहिनें हैं जो स्वाध्यायी हैं? यहाँ का बच्चा अमरीका में मिल सकता है, भारतीय प्रशासनिक सेवा में भी मिल सकता है, किन्तु स्वाध्यायी नहीं, जो आठ दिन पर्युषण में जाकर शासन की सेवा करे।

आपकी दस सन्तानें हैं, उन्हें अलग-अलग डिग्रियाँ जरूर मिलीं, पर दस में से किसी ने भी स्वाध्यायी बनकर शासन-सेवा में अपना नाम नहीं लिखाया। डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, फैक्ट्री मालिक और दुकानदार तो तैयार किये, माता-पिता ने किसी को स्वाध्यायी तैयार नहीं किया। आध्यात्मिक ज्ञान की उपेक्षा के कारण घर-घर में झगड़े हैं, अमन और चैन प्रायः कम जगह ही होंगे।

एक बार पति-पत्नी में झगड़ा हो गया। झगड़ा किस बात पर? पत्नी अपने लड़के को डाक्टर बनाना चाहती है और पिता वकील। पति-पत्नी की जोर-जोर से बातचीत चलते देख पड़ौसी वहाँ पहुँचा और पूछा- आप क्यों झगड़ रहे हैं? पत्नी बोली- मैं लड़के को डॉक्टर बनाऊँगी और ये वकील बनाना चाहते हैं। पड़ौसी ने पूछा- लड़का कहाँ है, पहले उससे तो पूछो वह क्या बनना चाहता है? पत्नी बोली- अभी लड़का हुआ ही कहाँ है। लड़का हुआ नहीं, झगड़ा पहले हो गया। आदमी अपने स्वार्थ को लेकर बच्चों के लिए बराबर सोचते हैं, क्या इसी तरह महावीर प्रभु के इस शासन के लिए कभी आपको विचार आया?

आचार्य भगवन्त की प्रेरणा से राजस्थान में ही नहीं, महाराष्ट्र में, कर्नाटक में, चेन्नई में, मध्यप्रदेश में स्वाध्याय संघ बने। स्वाध्याय संघ के माध्यम से उन गांव-नगरों में जहाँ संत-सतियों के चातुर्मास नहीं, वहाँ पर्युषण पर्वाराधन होता है। क्षेत्र अधिक हैं, साधु-साध्वी सीमित हैं और सभी स्थानों पर साधु-साध्वी नहीं पहुँच सकते, आचार्य भगवन्त(पूज्य हस्तीमल जी म.सा.)ने इस बात को समझ कर स्वाध्याय का बिगुल बजाया।

आप पर्वत की सैर करने चले जायेंगे, कोलकाता, मुम्बई देखने को समय निकाल लेंगे, पर वर्तमान में साधु-साध्वियों की सीमित संख्या की ओर

आपका ध्यान नहीं जाता। इसलिये जरूरत है कि आप अपने बच्चों में संस्कारों का निर्माण करें, स्वयं स्वाध्याय करें, बच्चों को इसमें जोड़ें और किसी बच्चें में वैराग्य भावना जगे तो उसे शासन सेवा में समर्पित करने को तत्पर हों, आचार्य भगवन्त ने इस जागृति में उत्साह जगाने का काम किया है।

आपको-हमको आचार्य भगवन्त के इस चिंतन को आगे बढ़ाना है। आचार्य भगवन्त ने ज्ञान-क्रिया के उन्नयन के लिए सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा की कि हमें इसका स्वरूप समझकर जीवन में उतारने का प्रयास करना है। आपने आज जो कुछ पाया है, मानकर चलिये वह आपकी करणी का फल है। आपने पहले करणी की, उसका आप फल भोग रहे हैं तो अब धर्म-साधना में अपने कदम क्यों नहीं बढ़ाते?

आचार्य भगवन्त ने अप्रमत्ततापूर्वक साधना की। आपने देखा होगा और कदाचित् देखा नहीं तो सुना जरूर होगा कि संथारा अंगीकार करने के बाद उस महापुरुष ने अपने शरीर से ममत्व हटा दिया। हाथ जिधर रख दिया वह वैसी ही अवस्था में पड़ा है, पाँव जैसा है उसे सीधा करने की चेष्टा नहीं की। संतों ने जिस करवट सुला दिया, आगे होकर कभी करवट नहीं बदली। पानी पिलाया तो पी लिया, नहीं पिलाया तो कभी संकेत तक नहीं किया। भगवन्त का तेरह दिन तप-संथारा चला। भगवन्त शरीर की दृष्टि से लेटे हुए थे, भीतर में जाग रहे थे। उनका स्मरण, आत्मचिंतन बराबर चलता रहा। आचार्य श्री जयमल जी महाराज के बाद किसी आचार्य को इस तरह संथारा नहीं आया। आचार्य भगवन्त के अनन्त-अनन्त उपकार हैं। हम उनके गुणों को स्मरण करके ही नहीं रहें, वरन् अपने जीवन में उन गुणों में से किसी एक गुण को उतारने का प्रयास करें तो हमारा स्मृति-दिवस मनाना सार्थक होगा। आचार्य भगवन्त की ज्ञान-आराधना, संयम-साधना और सहित की भावना आप-हम सबका मार्गदर्शन करती रहेगी, हम उस महापुरुष के जीवनादर्श का अनुसरण करें, इस मंगल भावना के साथ.....

अहिंसा

दिलीप धींग

ममता के बिना मातृत्व पूरा नहीं होता।
करुणा के बिना कवित्व पूरा नहीं होता।
मनुष्य अधूरा है मनुष्यत्व के बिना मगर।
अहिंसा के बिना मनुष्यत्व पूरा नहीं होता।

-बम्बोरा-३९३७०६

द्रव्य निद्रा पर विजय पायी जा सकती है

☆ *तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.*

अरिहन्त भगवान 'निद्रा' के दोष से रहित होते हैं। 'निद्रा' दर्शनावरण कर्म का परिणाम है। जो चैतन्य के स्वरूप में जीते हैं वे न तो श्रम का अनुभव करते हैं और न ही उन्हें निद्रा की आवश्यकता होती है। भाव नींद छूटते ही द्रव्य नींद छूट जाती है। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म. सा. अपने प्रवचनों में श्रोताओं को आध्यात्मिक रस का अनुभव करने की प्रेरणा करते हैं। उसी शृंखला में आपके द्वारा 2 अगस्त 1997 को जयपुर चातुर्मास में दिया गया प्रवचन आज भी उतना ही प्रासंगिक है। -*सम्पादक*

सुप्त प्राणियों को जागृति का संदेश प्रदान करने वाले, स्वयं की निद्रा का सदा–सदा के लिए समापन करने वाले, अनन्त–अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और वीतराग भगवन्तों द्वारा प्ररूपित इस जागृति के संदेश को डगर–डगर और नगर–नगर तक पहुंचाने वाले आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्–

बन्धुओं! द्रव्य निद्रा को छुड़ाने के लिए आज कितना पुरुषार्थ करना पड़ता है। आप में से अधिकांश लोग इसके भुक्तभोगी हैं कि कितनी ही बार जगाने पर, कितनी ही बार आवाज लगाने पर, आपके घर के बच्चे अथवा अन्य सदस्य जगते हैं। कई बार तो झंझोड़ना पड़ता है तब जाकर जगते हैं। प्राचीनकाल में द्रव्य निद्रा से राजा-महाराजाओं को जगाने के लिए प्रातः काल भेरी-शंख इत्यादि का उद्घोष किया जाता था। प्रभातकाल की वेला में नंगाड़े-ढोल आदि बजाये जाते थे। समय के साथ में साधन परिवर्तित हो गये। घड़ी का अलार्म कह दीजिये, टेलीफोन के अलार्म की बात भी जानते हैं अथवा कई तो तकिये को जरा सी थपकी लगाकर कि चार बजे, पाँच बजे उठा देना, कह देते हैं, तकिया तो जड़ है, मानसिक संकल्प से, स्वयं उस निमित्त से जग जाता है। कई बार घड़ी का अलार्म तो बजा, भाई साहब उठे और अलार्म को बंद कर दिया। टेलीफोन पर अलार्म तो आया, घंटी सुनी, टेलीफोन उठा कर रख दिया। वह बेचारा टेलीफोन क्या करे? यही बात है, जो जगते हुए सोने का अभिनय कर रहे हैं, वे द्रव्य निद्रा से भली-भांति छुटकारा नहीं पा सकते। आलस्य और तन्द्रा से मुक्ति नहीं पा सकते।

जो लोग भाव नींद में सो रहे हैं, वे खो रहे हैं, उनके लिए तो कितने उद्घोष की जरूरत है। वीतराग भगवन्त अनुपम कृपा करके, गुरु भगवन्त संत- महर्षि इस जीव पर अपरिमित कृपा करके अनेक हेतु, उदाहरण और विविध दृष्टांतों से भाव निद्रा से जगाने का उद्घोष करते हैं।

इस जीव को राग-द्वेष की निद्रा से मुक्त होना है। कषायों की सुलगती

हुई भट्टी से अब इस जीव को बाहर निकलना है- "आलित्ते णं भंते लोए, पलित्ते णं भंते लोए।" इस जलते हुए, बार-बार जलते हुए संसार से अब इस जीव को शीतल छाया में आना है, जिससे पुनः इस दुःख को, वेदनाओं को भुगतने की नौबत नहीं आए। इसलिए डरिए। आचारांग सूत्र के भगवान के उद्घोष को रख दिया जाए अथवा उपनिषद् की उक्ति को कहा जाए- "उतिष्ठत जागृत प्राप्य वरान् निबोधत।" उठो, जागो और श्रेष्ठ को प्राप्त करने में, पूर्ण सिद्धि की दिशा में चरण बढ़ाने को आगे बढ़ो, बोध करो। जब तक अपनी महिमा को भूलते रहोगे, जब तक अपनी महिमा का अहसास नहीं होगा, तब तक आपको आत्मिक सुख की अनुभूति नहीं होगी, तब तक व्यक्ति बाहर के पदार्थों में सुख-प्राप्ति के लिए भटकता रहेगा।

जिज्ञासा रखी जा रही है, महाराज को इतना सुनते हैं, इतना समझ रहे हैं, फिर क्यों नहीं यह मोह निद्रा छूटती, क्यों नहीं यह तन्द्रा टूटती। जन्म-मरण के चक्कर को देखकर भी यह जीव उससे मुक्त होने के लिए पुरुषार्थ क्यों नहीं करता। भौतिक पदार्थों में वास्तविक सुख तो नहीं कहा जा सकता, पर सुख का आभास तो होता ही है। बाहर के पदार्थ को क्षणिक कह दिया जाए, विनाशी कह दिया जाए, किन्तु रस तो इस जीव को मिलता ही है। यह बात सत्य है, पूर्ण सत्य है कि आत्मा के अनंत रस के सामने बाहर का रस कहीं पर भी ठहर नहीं सकता। इस विषय में रत्तीभर की शंका-संदेह की गुजाइंश नहीं है। पर दूसरा पक्ष यह भी सही है कि जीव रस के बिना नहीं रह सकता। जब तक भीतर का रस नहीं आएगा तब तक जीव को बाहर के साधन से रस लेने के लिए भागदौड़ करनी पड़ेगी। जब तक आत्मिक अनुभूति नहीं हो रही है, तब तक अन्तर का रस नहीं मिल रहा है। हम ऊपर की क्रिया कर लें, महाराज के कहने से कर लें, पारिवारिक मर्यादाओं को निभाने के लिए कर लें, सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए कर लें, संघ के गौरव के लिए कर लें, पर क्रिया करते हुए भी मन में अभिलाषा बाहर के पदार्थों की रहेगी। क्योंकि अभी तक जीव को आत्मिक रस की अनुभूति नहीं हुई है। जिस क्षण जीव को अन्तर के रस की अनुभूति हो जाएगी, उस क्षण आप उसको जंजीरों से बांधकर घर में रखना चाहेंगे, वह रह नहीं सकेगा। मजबूरी में रहे, वह बात अलग है।

पंजाब केसरी युवाचार्य काशीराम जी महाराज का प्रसंग याद आ रहा है। उनका जीवन त्यागी महापुरुषों का जीवन रहा। लगभग ११ साल की वय, छह भाइयों में से तीसरे नम्बर का भाई। उस अविभक्त पंजाब में जब भारत-पाकिस्तान एक था, अग्रवाल कुल में जन्म लिया था। आज भी हरियाणा व

पंजाब में अग्रवाल ही ज्यादा स्थानकवासी हैं। प्रवर्तक सुदर्शनलाल जी महाराज के ३२ संतों में से सम्भवतः २५ अग्रवाल कुल के हैं, ५-६ ओसवाल कुल के हैं। उस प्रांत में अग्रवाल ज्यादा हैं। आगरा, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब आदि में अग्रवाल ज्यादा हैं। काशीराम जी ११ वर्ष की उम्र में घर से निकले, खोजते हुए संतों के चरणों में चले गये। निश्चय था कि मेरे को घर में नहीं रहना।

चारदीवारी में वह बंधेगा जिसको जीवत्व के साथ में सच्ची प्रीति न हो। प्रीति आत्मा का गुण है। दशवैकालिक सूत्र के आठवें अध्याय की ३८वीं गाथा में कहा गया- "कोहो पीइं पणासेइ" क्रोध प्रीति का नाश करता है। क्रोध दुर्गुण है। इसका मतलब प्रीति आत्मगुण है। हम बाहर के राग को प्रीति समझते हैं। उसको राग, स्नेह, लगाव, अटेचमेंट कहा है। वह विकृति है। वह नश्वर पदार्थ के प्रति होती है, विनाशी के प्रति होती है। आसक्ति का संबंध दृश्यमान जगत से है। इसलिए "ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पण्डित होय" उस प्रेम के ढाई अक्षर को पढ़ने वाला घर की चारदीवारी में रह नहीं सकता। चारदीवारी में रहने का मतलब है कुछ सीमित लोगों के साथ में संबंध जोड़ना। केवल उनके सुख-दुःख के सहभागी बनना। उनके प्रति राग के साथ द्वेष के परिणाम भी जुड़े रहेंगे। इसलिए सम्यक् दृष्टि जीव घर में नहीं रह सकता। रहता है तो- "सम्यग्दृष्टि जीवड़ा करे कुटुम्ब प्रतिपार्ल, अन्तर्गत न्यारो रहे ज्यों धाय खिलावे बाल" का अनुसरण करता है।

अन्तर का रस जिसको लग गया, जीवत्व की अनुभूति जिसको हो गयी उसे रहना पड़ सकता है, परन्तु राजीखुशी नहीं रह सकता। कभी ऐसा भी सुनते हैं कि प्राणिमात्र में अपनत्व की अनुभूति आवश्यक है। बाहर के जीव को भी समझना जरूरी है। बाहर के जीव को नहीं समझा तो अधूरा है, क्योंकि उसके बिना अनुकम्पा का गुण नहीं आएगा और सम्यक्त्व के लक्षण भी नहीं मिलेंगे।

सम्यक् दृष्टि होने से एकमात्र अन्तर की आत्मा से रस मिलता है। इस नश्वर देह के लिए जरा से साधन जुटाने हेतु, दूसरे जीव को दुःख पहुंचाकर, हानि पहुंचाकर किसी भी प्रकार के सुख की प्राप्ति नहीं होती। बाहर की प्रवृत्ति करने वाले को तो लगता है कि बाहर के साधन जुटा लेंगे तो रस मिल जायेगा इसीलिए सारी भागदौड़ चल रही है। किन्तु भीतर का रस जग गया होता, भीतर की जागृति आ गयी होती तो सम्यक् दर्शन की प्रतीति हो जाती।

अभी काशीराम जी महाराज की बात चल रही है। बचपन में सन्तों के यहाँ जाता देखकर परिवार वाले उनके दोनों हाथ-पैरों पर खाट (चारपाई)

रखकर उनके ऊपर बैठ गये। लोहे की जंजीरों से बांध दिया, मारपीट की। सात साल तक सच्ची लगन से कष्टों को झेलते रहे। १८ साल की उम्र होने के बाद उन्होंने वयस्क होने का सर्टिफिकेट प्राप्त किया। फिर पंजाब के आचार्य सोहनलाल जी महाराज के चरणों में चले गये। भीतर का रस लग जाता है तो उसके बाद जीव ठहर नहीं सकता। इस भीतर के चैतन्य के रस में बहुत बड़ी बाधा है निद्रा। जो जीव को बढ़ने में अवरोध उत्पन्न करती है। जब अन्तर का रस नहीं लगता है, बाहर में प्रवृत्ति होती है तो बाहर की प्रवृत्ति के विश्राम के लिए, निद्रा की आवश्यकता होती है, निद्रा ली जाती है। इस शरीर के लिए निद्रा की आवश्यकता होती है-

''अर्द्ध रोग हरे निद्रा, सर्व रोग हरे क्षुधा''

आज चतुर्दशी है, उपवास का दिन है। मौसम परिवर्तन के समय में वैसे ही आहार पर संयम रखना चाहिए। यह प्रसंग की बात आ गयी, इसलिए यदि संयम करें तो काफी बीमारियों से बचा जा सकता है, परन्तु आजकल आहार का संयम नहीं है। सुबह समय नहीं मिलता है, इसलिए शाम को गरिष्ठ भोजन किया जाता है। इसका पाचन होना कठिन होता है। तब निद्रा की आवश्यकता पड़ती है। जड़ता में जाने की आवश्यकता पड़ती है जो सर्वघाती प्रकृति होने से चैतन्य (दर्शन) गुण का घात करती है। जब चैतन्य गुण का घात होगा तो ज्ञानगुण का भी घात होगा, क्योंकि ज्ञान तो हमेशा दर्शन के बाद होता है। पहले अनाकार उपयोग होता है फिर साकार उपयोग होता है। छद्मस्थ का हर प्रकार का साकार उपयोग अनाकार उपयोग के पश्चात् होता है। उस अनाकार उपयोग की घात करने वाली यह निद्रा है। इस दोष को अरिहंत भगवान ने दूर किया है। हम केवल उन वीतराग भगवन्तों की स्तुति कर रहे हैं, जिन्होंने पहले जागृति प्राप्त की, आत्मा के रस की अनुभूति की। क्यों नहीं हमें आत्मा के रस की अनुभूति हो रही है? इसलिए कि दिन तो हमारा प्रवृत्ति में निकल जाता है और उस प्रवृत्ति से प्राप्त श्रम को उतारने में रात को निद्रा आ जाती है। दिवस हमारे बाहर की प्रवृत्ति के कामों में निकल जाता है और रात को थकान दूर करना आवश्यक हो जाता है। इसलिए अन्तर का रस नहीं बन पा रहा है। एक बार यदि इस जीव को यह रस मिल जाता है, इसके रस की अनुभूति हो जाती है तो इस जीव को बाहर के पदार्थों के प्रति आसक्ति टूटते कोई देर लगने वाली नहीं है।

बात निद्रा की चल रही है, परसों बात दर्शन की रखी गयी थी। दर्शन शब्द 'दृश्' धातु से बना है, जिसका सीधा-सा अर्थ है, देखना, बस देखना। न

सोचना, न मनन करना, न विचार करना, न उससे कुछ ऊहापोह करना। इनसे जो रहित है, वह दर्शन गुणों में शामिल है। इसलिए हमारे महर्षियों ने, तत्त्वज्ञों ने उसे अनुभूति के नाम से कह दिया। उसके और भी विशेषण लगाये गये। दर्शन एक होता है, सामान्य होता है, उसके भेद नहीं किये जा सकते, उसके विकल्प नहीं हो सकते। अनेक भेद नहीं किये जा सकते। यह सामान्य रूप से कहा जाता है। पर अभी अपना प्रसंग चल रहा है, देखना, सामान्य रूप से देखने में आंख की प्रधानता मानते हैं। बाहर के पदार्थों की प्रधानता मानते हैं, इसलिए चक्षु के विषय को चक्षु दर्शन के नाम से कह दिया और बाकी सब इन्द्रियों के देखने को अचक्षु दर्शन कह दिया। सामान्यतया आंखों से देखना कहते हैं, अन्य इन्द्रियों की अनुभूति को अपनी बोलचाल की भाषा में देखना नहीं कहा जाता है, पर ज्ञानियों ने उसको भी देखना कहा है। इसलिए चार इन्द्रियों से होने वाली सामान्य अनुभूति को अचक्षु दर्शन में रख दिया। चक्षु दर्शन से होने वाली सामान्य अनुभूति को चक्षु दर्शन में रख दिया।

इन्द्रियों की सहायता से होने वाले सामान्य बोध में अच्छे बुरे का प्रश्न नहीं होता, सामान्य बोध में सही है या गलत है, इसका चिन्तन नहीं होता, इसलिए वह मिथ्यात्व से विकृत नहीं होता। पहले गुणस्थान में दर्शन है और चौथे गुणस्थान में भी दर्शन है। मिथ्यात्व से इस सामान्य बोध वाले दर्शन में विरूपता नहीं आती।

जहाँ सोच जुड़ गयी, जहाँ समझ जुड़ गयी- अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा से जहाँ इसका संबंध जुड़ गया वहाँ अनाकार नहीं रहा, साकार हो गया। अनाकार पहले हुआ, उसके बाद साकार हुआ। दर्शन अर्थात् देखना। एक शहर का उदाहरण लें कि शहर में देखने योग्य स्थान कौन-कौनसे हैं, दर्शनीय स्थल कौन-कौनसे हैं। महाराज के पास जा रहे हैं, दर्शन करने जा रहे हैं। बोलचाल में देखने को दर्शन कहा जाता है। ज्ञान के पहले सामान्य देखना होता है, वह दर्शन है- दर्शनावरणीय के क्षयोपशमजन्य दर्शन और अपनी आत्मा से जो देखना होता है वह सम्यक् दर्शन है। दर्शन शब्द बराबर है। प्रसंग के अनुसार एक का अर्थ आत्मा की अनुभूति हो गया तो दर्शनमोह के क्षयोपशम वाला सम्यक् दर्शन हो गया। १३वें बोल में कई भाई-बहिन गलत याद रखते हैं कि जीव को अजीव समझे तो मिथ्यात्व है, ऐसा नहीं है। समझ का संबंध साकार के साथ में जुड़ता है। समझ ज्ञान-अज्ञान के पेटे में जाता है। सरधे (श्रद्धे) का संबंध श्रद्धा से होता है, अन्तर से जुड़ता है। बहुत से भाई-बहिनों को गलत याद है। "जीव को अजीव श्रद्धे" शब्द है, भीतर की अनुभूति की बात है।

"तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यक् दर्शनम्" तत्त्व की अनुभूति हुई, सीधी सी भाषा में जैसे को जैसा देखना, इसका नाम सम्यक्दर्शन है। उसको कहते हैं, जीव को जीव देख रहा है, श्रद्धा हो रही है, रुचि हो रही है, प्रतीति हो रही है, वही सम्यक् दर्शन कहा गया है। फिलोसोफी पढ़ने वाले जानते हैं कि इसका मतलब दर्शनशास्त्र है। किसी भी मत के किसी भी परम्परा के नियमों, सिद्धांतों, मर्यादा, आचार आदि का अवलोकन किया जाता है उसका नाम दर्शनशास्त्र कहा जाता है। दर्शन यानी देखना।

जीव का आत्मिक गुण देखना है। उसकी प्रतीति इस जीव में बनी रहे, इसके लिए इस जीव को द्रव्य निद्रा का भी त्याग करना पड़ेगा। जब-जब जीव नींद में जाता है तब-तब जीव अपने चैतन्य का ह्रास करता हुआ जड़ता की ओर चला जाता है।

जीवन के विकास के लिए इस जीव को समझना पड़ेगा कि हम किन अरिहंतों के उपासक हों। जिन अरिहंतों ने निद्रा के दोष का समूलघात कर दिया हम उनके उपासक हैं। हम अरिहंतों की उपासना कर रहे हैं, किन्तु बाहर में कितना भटकाव है। कहते हैं देवशयनी को देव सो गये, फिर उठ गये। ऐसे बाह्य देवों का उपासक सच्ची आत्मसाधना के पथ पर चलने वाला पथिक नहीं हो सकता। जो दोष से युक्त हैं, जिनके घाती कर्म ही नहीं छूट रहे वे देव कैसे हो सकते हैं? देव तो अरिहंत हैं, सिद्ध हैं। सिद्ध आठों कर्मों से रहित हैं और अरिहन्त चार घाती कर्मों से रहित हैं। मोहनीय कर्म पर विजय सबसे पहले जरूरत है। मोहनीय कर्म छूटने के बाद में तीन घाती कर्मों को अन्तर्मुहूर्त में जाना ही पड़ता है। मोह छूटे तो ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय व अन्तराय कर्म छूटे। मोह के छूटने के बाद ये तीन कर्म रह नहीं सकते। शेष तीन कर्म वेदनीय, नाम व गोत्र तो आयु कर्म की समाप्ति के साथ समाप्त हो जाते हैं।

सोने वाला देव दूसरे को नहीं जगा सकता। जगने वाला ही दूसरे को जगा सकता है। जिसको खुद को नींद आ रही हो, वह दूसरों को कैसे जगा पायेगा। इसलिए जो इस निद्रा के दोष से रहित हो गये, उन्हीं वीतराग भगवन्तों की वाणी इस जीव को सच्चे सुख का रास्ता दिखा सकती है। जो इस दर्शनावरणीय कर्म को नष्ट करके निद्रा के दोष से मुक्त हो गये वे ही अरिहंत भगवान स्वयं द्रव्य और भाव रूप से जागृत होने के नाते भाव निद्रा में सोये हुए इस जीव को जगाकर द्रव्य और भाव निद्रा पर विजय दिलाने की प्रेरणा दे रहे हैं। इसीलिए वीतराग वाणी के अवलम्बन से देवाधिदेव की स्तुति की जा रही है। उन महापुरुषों के जीवन को देखा जा रहा है, जिसमें इस जीव के मन में

कायरता को छोड़ कर उठ खड़े होने का पुरुषार्थ जगे। यह जीव भी चिन्तन करे।

कभी भगवान महावीर का जीव भी हम जैसी अवस्था में संसार में रहा हुआ था। कोई ऊपर से टपककर नहीं आया। नयसार के भव के पहले तो वह जीव भी पंहले गुणस्थान में अनादिकाल से झूल रहा था। जो क्रियाकलाप आप कर रहे हैं, ऐसे ही संसार के क्रियाकलाप करते हुए जिस क्षण उस जीव को भव जागृति आयी, उस क्षण के बाद में उसको भले ही लम्बा समय लगा, परन्तु एक निश्चित काल के बाद में द्रव्य निद्रा पर भी विजय मिल गयी। इसलिए चौबीसवें तीर्थंकर की स्तुति की जाती है।

यह जीव भी जगे, इस बात को मन में, अन्तर में अच्छी तरह से बिठा लें। पराई वस्तु से मिलने वाले सुख से अनन्त गुणा सुख आत्मा में मौजूद है। संसार और संसार के सारे पदार्थों से तथा स्वर्ग और स्वर्गलोक की सुख-समृद्धि से ज्यादा इस जीव के अन्तर में आत्मसुख मौजूद है। यदि यह जीव बाहर की वैभाविक दशा को तिलांजलि देकर, बाहर की परिणति को छोड़कर, भीतर के रस में, भीतर के अंधकार को मिटाने की दिशा में आगे बढ़ेगा तो उसके अन्तर से निकलेगा-

''मेरे अन्तर भया प्रकाश नहीं अब मुझे किसी की आस''

अनमोल जिन्दगी

भंवरलाल मेहता

जिन्दगी हंसने के लिये है, रोने के लिये नहीं।
जिन्दगी मुस्कराने के लिये है, गमगीन होने के लिये नहीं।।
जिन्दगी आत्म धन कमाने के लिय है, भोगों में खोने के लिए नहीं।
जिन्दगी कुछ कर गुजरने के लिये है, सोने के लिये नहीं।।
जिन्दगी नन्दन वन है, कोई रेत का तपता रेगिस्तान नहीं।
जिन्दगी का फूल खिलाने के लिये है, मुरझाने के लिये नहीं।।
जिन्दगी अमृत का महासागर है, कोई जहर का प्याला नहीं।
जिन्दगी महान् बनने के लिये है, बेमौत मरने के लिये नहीं।।
जिन्दगी शिखर पर चढ़ने के लिये है, पतन कूप में गिरने के लिये नहीं।
आया यहाँ भगवान बननें, इन्द्रियों का गुलाम बनने के लिये नहीं।।

-पाली मारवाड़ (राज.)

फांसी पर चढ़ने से पूर्व की सामायिक

डॉ. एस.एल. नागोरी

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के अमर शहीद श्री अमरचन्द जी बांठिया राजस्थान के बीकानेर के निवासी थे। उनका जन्म १७९३ ई. में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री अबीरचन्द जी बांठिया था। वे अपने पिता के साथ व्यापार के सिलसिले में ग्वालियर आकर बस गये।

ग्वालियर के राजघराने ने अमरचन्द जी बांठिया को नगर सेठ की उपाधि प्रदान की तथा पैर में सोने का कड़ा पहनने का अधिकार दिया। बाद में अमरचन्द जी बांठिया को ग्वालियर राजकोष का प्रभारी नियुक्त किया गया।

जब १८५७ ई. में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम प्रारम्भ हुआ, तो बांठिया जी ने अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम में भाग लेने का निश्चय किया। जब अंग्रेजी सेना ने ग्वालियर पर आक्रमण किया, तो उन्होंने रियासती सेना के साथ राजकोष का खजाना एवं अपनी पैतृक सम्पत्ति अंग्रेजों के विरोध में क्रान्तिकारियों को सौंपकर स्वतन्त्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

ऐसा कहा जाता है कि १८५४ ई. तथा १८५५ के चातुर्मास में बांठिया जी ने मुनि बुद्धि विजय जी के प्रवचन सुने, जिनसे वे अत्यधिक प्रभावित हुए। मुनि श्री के प्रवचनों से ही आपको देश की आजादी के लिए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा मिली थी।

स्वतन्त्रता सेनानी डॉ. राम मनोहर लोहिया, आचार्य नरेद्र देव, काका कालेलकर एवं शीलभद्र न्याती ने अपनी पुस्तकों में बांठिया जी के त्याग एवं बलिदान पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है।

बांठिया जी को राजद्रोही मानते हुए कम्पनी की सरकार ने उनकी गिरफ्तारी के वारन्ट जारी कर दिये। बांठिया जी गिरफ्तारी से बचने हेतु भूमिगत हो गये और अंग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलन का संचालन करते रहे। अन्ततोगत्वा एक दिन बांठिया जी अंग्रेजों द्वारा पकड़े गये। इसके बाद उन पर मुकदमा चलाया गया।

बांठिया जी को जेल में काफी यातनाएँ दी गईं। जैसे- मुर्गा बनाना, पेड़ पर उलटा लटकाना, चाबुकों से मारना, हाथ पैर बांधकर चारों से खींचना, लोहे के टोप्स वाले जूतों की ठोकरों से मारना, पेशाब पिलाना आदि। अंग्रेजो ने उनके शरीर का चप्पा-चप्पा विकृत कर दिया था।

अंग्रेजों ने बांठिया जी को चेतावनी देते हुए कहा कि या तो वे माफी मांग लें तथा भविष्य में विद्रोही कारनामे न करने का वायदा करें अन्यथा उनके ८ वर्षीय पुत्र को मार दिया जायेगा। बांठिया जी ने अंग्रेजों की चेतावनी को दर किनार कर दिया। इस पर अंग्रेजों ने उनके ८ वर्षीय पुत्र को तोप के मुंह पर बांध कर उड़ा दिया,

जिससे उसके चिथड़े-चिथड़े उड़ गये। अन्त में एक दिन अंग्रेजों ने बांठिया जी को फांसी की सजा सुना दी।

फांसी पर चढ़ाने से पूर्व बांठिया जी से उनकी अन्तिम इच्छा पूछी गई। इस पर उन्होंने कहा, **''मैं फांसी पर लटकने से पूर्व एक सामायिक करना चाहता हूँ।''** उनकी अन्तिम इच्छा पूरी की गई। सामायिक में उन्होंने नवकार मंत्र का स्मरण किया। इसके बाद ६५ वर्षीय बांठिया जी को २२ जून १८५८ को ग्वालियर में सर्राफा बाजार में नीम के एक पेड़ पर लटकाकर सार्वजनिक रूप से फांसी दी गयी। आजादी का यह दीवाना हंसते-हंसते फांसी के फन्दे पर झूल गया। इनके शव को अंग्रेजों ने जलाने के स्थान पर दफना दिया। अंग्रेजों के द्वारा बांठिया जी को दी गई फांसी का शासकीय रिकार्ड भी नहीं रखा गया।

बांठिया जी को जो फांसी दी गयी थी, वह नियमों के विरुद्ध थी। उन्होंने जनता द्वारा एकत्रित धन क्रान्तिकारियों को सौंपकर देशभक्ति का परिचय दिया था। उनका यह कार्य कोई ऐसा कार्य नहीं था, जिसे राजद्रोह के अपराध की श्रेणी में रखा जा सके, परन्तु अंग्रेजों ने बिना जांच-पड़ताल किये हुए केवल राजद्रोह का अपराध लगाकर उन्हें फांसी पर लटका दिया था। अतः उनका यह कार्य किसी भी प्रकार न्यायसंगत नहीं माना जा सकता।

बांठिया परिवार के वंशज ८३ वर्षीय श्री सम्पतराज जी बांठिया ने लेखक को बताया कि उनके इस पूर्वज को फांसी पर लटकाने के दो प्रयास असफल रहे, किन्तु तीसरी बार वे शहीदों में शामिल होकर इतिहास में अपना नाम अमर कर गये।

श्री सम्पतराजजी के अनुसार पहली बार जब अमरचन्द जी को फांसी पर लटकाया गया, तो फांसी की रस्सी टूट गई। जब अमरचन्द जी को दुबारा फांसी पर लटकाया गया तो पेड़ की टहनी टूट गई। तीसरी बार उन्हें अन्यत्र मारकर फांसी पर लटकाया गया। इसके बाद अंग्रेजों ने जनता में खौफ बनाये रखने के लिए उनके शव को तीन दिन तक पेड़ पर लटकाये रखा। श्री सम्पतराज जी ने बताया कि ग्वालियर में सर्राफा बाजार में नीम के जिस पेड़ पर अमरचन्द जी को फांसी दी गई थी, उसके चारों ओर तार लगा कर सुरक्षा कर दी गयी है। इसी वृक्ष के समीप अमरचन्द जी बांठिया की एक प्रतिमा स्थापित की गयी है, जहाँ प्रतिवर्ष २२ जून को लोग एकत्रित होकर आजादी के इस दीवाने को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

ऐसा कहते हैं कि शहीदों की कतार में शहीद होने वाले अमरचन्द जी बांठिया राजस्थान के प्रथम स्वतन्त्रता सेनानी थे। उनका आध्यात्मिक जीवन भी उत्कृष्ट था। अन्त में हमको भी यह स्मरण रखना चाहिए कि **चाहे कितनी भी मजबूरी हो, लेकिन हमें धर्माराधना में शहीद अमरचन्द जी बांठिया की तरह हमेशा आगे रहना चाहिए** तथा सामायिक एवं प्रभु भक्ति को अपने जीवन में सर्वोच्च स्थान देना चाहिए।

२ए-१ए, विकास नगर, बून्दी (राज.)

मांसाहारी कृषि एवं मांस निर्यात देश के ललाट पर कलंक का टीका है

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

स्थूल रूप से किसी जीव का वध करना तो सभी धर्मों में हिंसा कहा गया है, परंतु जैन दर्शन के अनुसार सूक्ष्म स्तर पर अपने मन, वचन, काय के द्वारा किसी अन्य को कष्ट पहुँचाना, कटु-कर्कश-मर्मभेदी शब्दों का प्रयोग करना, झूठी निन्दा-चुगली करना, कठोर व्यवहार करना इत्यादि भी हिंसा के ही विविध रूप हैं, जिनके माध्यम से कहीं 'आत्म-हिंसा' अर्थात् अपनी ही आत्मा का घात और कहीं 'पर-हिंसा' अर्थात् अन्य की हिंसा का दोष लगता है। हिंसा के इस पाप को आत्मा कर्म परमाणुओं के रूप में ग्रहण करता है और अनंत काल तक संसार में परिभ्रमण करता रहता है।

आधुनिक युग में जहाँ एक ओर विज्ञान की विविध उपलब्धियाँ संसार भर का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं, वहीं इन उपलब्धियों के पीछे कुछ ऐसा घटित हो रहा है जिसमें आधुनिकता की आड़ में हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है।

हमारी इस शस्यश्यामला भूमि पर आदिकाल से ही मानव ने भगवान् ऋषभदेव के द्वारा सिखाई गई जीवनकला के अनुसार अन्न, फल, सब्जी, मेवा आदि खाद्य पदार्थों को खेतों में अपने परिश्रम द्वारा उत्पन्न कर 'कृषि' कला का परिचय प्राप्त किया है। जिसके आधार पर हम सभी शाकाहारी जीवन जीकर अपनी 'भारतीय संस्कृति' पर गौरव करते हुए दुनियां भर की दृष्टि में सदाचारी के रूप में स्वीकार किये जाते हैं।

परन्तु इसे कलियुग का अभिशाप कहा जाये अथवा पाश्चात्य संस्कृति का आक्रमण? इसे मानवीय अत्याचार कहें अथवा अत्याधुनिक बनने की होड़ में छिपा अमानुषिक व्यवहार? समझ में नहीं आता कि राम, कृष्ण, महावीर के देश में पशु पालन केन्द्रों के स्थान पर लगभग समस्त राज्यों में अनेक बड़े-बड़े बूचड़खाने खुल गये हैं जिनसे सतत खून की नदियाँ बहकर धरती माता की छाती कम्पित हो रही है। हरे-भरे खेतों की जगह धरती का तमाम प्रतिशत भाग मुर्गी पालन केन्द्र (पॉल्ट्री फार्म), मत्स्यपालन, सुअरपालन, कछुवा पालन आदि केन्द्रों के रूप में कृषि के नाम को कलंकित कर रहा है, जिसके कारण सड़क पर चलते पथिकों को वहाँ से निकलती दुर्गन्ध के कारण नाक बन्द करके द्रुत गति से कदम बढ़ाने पड़ते हैं। यदि भूल से कभी उधर नजर पड़ जाये तो पेड़ों के फल की जगह अण्डों के दुर्दर्शन होने लगते हैं, जो हृदय को दुर्गन्ध से पूरित कर देता है।

भगवान ऋषभदेव के वंशज एवं भारतीय होने के नाते हमें यह अटल विश्वास रखना चाहिए कि पेड़ से उत्पन्न होने वाली प्रत्येक वस्तु शाकाहार और पेट से उत्पन्न होने वाली सभी वस्तुएँ मांसाहार होती हैं। शाकाहार में खून, पीव, मांस, हड्डी आदि का सम्मिश्रण नहीं होता है तथा अण्डा, मछली आदि सभी मांसाहार वस्तुएँ खून, मांस वगैरह का पिण्ड होने से अखाद्य ही कहलाती हैं। इन्हें शाकाहार कभी भी नहीं कहना चाहिए और न ही ऐसे उत्पत्ति स्थलों को 'कृषि' संज्ञा प्रदान करनी चाहिए।

धर्मप्रेमी बन्धुओं! हम सबके लिए यह अत्यन्त विचारणीय विषय है कि जिस देश से हमेशा आध्यात्मिकता और अहिंसा धर्म का विदेशों में निर्यात होता था, जिसके कारण हमने आजादी प्राप्त की थी। उस देश से आज मांस का निर्यात करना अथवा अण्डों को शाकाहार कहकर जनता को स्वतंत्ररूप से मांसाहार की प्रेरणा देना क्या अपनी संस्कृति पर कुठाराघात नहीं है? धरती माता आखिर इन पशु अत्याचारों को कितना सहन कर सकती है? उस माँ की ममता पर मानव और पशु सभी का समान अधिकार है। यहाँ जब मनुष्य अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके पशुओं पर अत्याचार करने लगा, उनकी गर्दनों पर छुरी चलाने लगा तो धरती माँ कांप उठी और उसने भूकम्प, प्रलय आदि अनेक प्राकृतिक प्रकोपों के द्वारा मनुष्य को दण्ड देने का निर्णय ले लिया। अर्थात् इन हिंसात्मक कृत्यों के कारण ही आज जगह-जगह भूकम्प, बाढ़, गैसकाण्ड, रेल दुर्घटना आदि अनेक दुर्घटनाएँ घटित हो रही हैं, जिससे मानव विनाश के कगार पर पहुँच गया है।

आप सबको भी कृषि के नाम पर चल रहे हिंसात्मक व्यापारों का विरोध करते हुए अपने निकटवर्ती प्रशासन को ज्ञापन देकर सरकार तक अहिंसा की आवाज को पहुँचाना चाहिए। ताकि मांस-निर्यात पर प्रतिबन्ध लग सके और भारतीय कृषि को हिंसक विकृति से बचाया जा सके।

"किसी भी राष्ट्र की महानता और उसकी नैतिक प्रगति का मापदण्ड पशुओं के प्रति उसका व्यवहार है।"

बन्धुओं! हम जब इतिहास के पन्ने पलट कर देखते हैं तो ज्ञात होता है कि आजादी प्राप्त होने के बाद देश की पशु सम्पदा का जो बेहिसाब संहार हुआ है उसे भविष्य का इतिहास सत्तारूढ़ों को कभी माफ नहीं करेगा। पुराने सरकारी आकड़ों से ज्ञात होता है कि भारत के स्वतंत्र होने के चार वर्ष बाद तक देश से मांस का निर्यात नहीं हुआ, पुनः सन् १९५१ से मांस और चमड़े का निर्यात लघुस्तर पर प्रारम्भ हुआ तो सन् १९६१ से उसमें लगातार वृद्धि हुई।

वर्तमान की स्थिति तो यह है कि देश के वैध और अवैध कत्लखानों के द्वारा लगभग करोड़ों पशुओं को मौत के घाट उतारा जाता है। केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय के द्वारा प्रस्तुत की गई ताजा रिपोर्ट की भविष्यवाणी है कि-

"कत्ल और निर्यात की रफ्तार यदि यही रहती है तो सन् २०११ तक भारत में बकरी या भेड़ का नामोनिशां मिट जायेगा।"

सर्वेक्षण अधिकारियों का अनुमान है कि सन् २००० के अन्त तक एक हजार करोड़ रुपये से भी अधिक कीमत का मांस भारत से निर्यात हो चुका है। यदि यह निर्यात समय रहते बन्द नहीं हुआ तो हम अनावृष्टि, जल-दुष्काल और भीषण भूकम्पों का शिकार होते रहेंगे।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में पशुओं को कत्लखानों की ओर हांकना एक अत्यन्त आत्मघाती अर्थव्यवस्था तो है ही, पर्यावरण को प्रदूषित करने में इन कत्लखानों का सबसे बड़ा हाथ है। क्योंकि देश के १० कत्लखानों में प्रतिदिन ढाई लाख पशुओं का कत्ल होता है जिनमें ५० हजार गायें होती हैं जिनकी भीषण चीत्कारों से धरती का कण-कण रुदन कर रहा है, किन्तु उसके रुदन को सुनने वाला कोई नहीं है। इस विषय में सन्तों का कहना है कि मांस निर्यात हमारी आर्थिक परतन्त्रता के काले युग की शुरूआत है और इस देश से लाल या सफेद किसी भी किस्म के मांस का निर्यात किया जाता है या अपने पशु-पक्षियों को जहाज पर लादते हैं तब असल में समझना चाहिए कि यहाँ का मानव अपनी वसुन्धरा का मांस और समुद्र के लहू का ही निर्यात करता रहता है, क्योंकि उसे ज्ञात नहीं है कि हम विदेशी मुद्रा के लोभ-लालच में अपने देश के अर्थतन्त्र पर कहर ही ढा रहे हैं।

यह तो मैंने मांस निर्यात का किंचित् मात्र नमूना प्रस्तुत किया है इसके अतिरिक्त न जाने कितनी मछलियाँ, मुर्गियाँ, खरगोश, बन्दर आदि भी निर्यात किये जाते हैं। जब केवल पाकिस्तान और बांग्लादेश को भारत प्रतिवर्ष बीस हजार पशुओं का लुक-छिपकर निर्यात करता है तो अन्य और देशों को मिलाने से यह संख्या शायद लाखों तक पहुँचने में कोई विशेष बात नहीं है।

"केन्द्र सरकार ने कृषि एवं खाद्य विकास अधिनियम १९८१ के अन्तर्गत यान्त्रिक कत्लखानों से २० हजार मीट्रिक टन मांस के निर्यात का लक्ष्य निर्धारित किया है।"

इसका मतलब यह हुआ कि अब खुलेआम मांस का खाना, बेचना और देश से बाहर उसे भेजना (निर्यात करना) कोई पाप कार्य न होकर व्यापाररूप से प्रतिष्ठित हो रहे हैं, किन्तु ऐसा करने एवं उसमें अनुमति देने

वालों को भी भूलना नहीं चाहिए कि ऐसी हिंसक प्रवृत्ति साक्षात् नरक का द्वार खोलने वाली है तथा आपके द्वारा मारे गये ये पशु भी जन्मजन्मान्तर तक आपसे बदला लिये बिना नहीं रहेंगे।

अन्त में अधिक न कहकर यही कहना है कि देश की कृषि व्यवस्था में मांसाहारी वस्तुओं का शीघ्र निष्कासन करके उसे सच्ची कृषि की कोटि में लाएँ और मांस निर्यात बन्द कर संसार के कोने-कोने में अहिंसा, सत्य, करुणा, दया, मानवता का शुभसंदेश पहुँचायें, क्योंकि हिंसा, क्रूरता, कत्ल, हत्या तथा हैवानियत की भारतीय संस्कृति के साथ कोई संगति नहीं है। कत्लखाने भारतीय इतिहास के साथ क्रूर खिलवाड़ और गम्भीर कपट हैं। मांस चाहे लाल हो या सफेद, भारत और उसकी ऋषि एवं कृषि परम्परा के पवित्र ललाट पर कलंक का टीका ही है।

सम्पर्क-अग्रवाल दिगम्बर जैन मन्दिर
राजा बाजार, निकट शिवाजी स्टेडियम, कर्नोट प्लेस
नई दिल्ली-110001

पंचमंगल से देह का द्रव्य स्वास्थ्य एवं आत्मा का भाव-स्वास्थ्य(1)

पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजय जी

पंचमंगल महाश्रुतस्कन्ध रूप होने से, सम्यक् ज्ञान स्वरूप हैं, पंच-परमेष्ठी के स्तुति रूप होने से, सम्यक् दर्शन स्वरूप हैं तथा सामायिक की क्रिया के अंगरूप एवं मन, वचन, काया की प्रशस्त क्रिया होने से कथंचित् चारित्र स्वरूप भी हैं।

आयुर्वेदानुसार वात, पित्त एवं कफ की विषमता ही रोग, एवं समानता आरोग्य है। जहाँ मन वहाँ प्राण एवं जहाँ प्राण वहाँ मन, इस न्याय के अनुसार सम्यक् ज्ञान वात-वैषम्य को शमित करता है। जहाँ दर्शन, स्तवन, भक्ति आदि हो वहाँ मधुर परिणाम होते हैं एवं वह पित्त प्रकोप को शमित करते हैं। जहाँ काया की सम्यक् क्रिया हो वहाँ गति है, जहाँ गति है वहाँ उष्णता होती ही है। उष्णता कफ के प्रकोप को शान्त करती है। इस प्रकार श्री पंचमंगल में शरीर के अस्वास्थ्य उत्पन्न करने वाले त्रिदोष को शांत करने की शक्ति है। दूसरे प्रकार से विचारने से यह ज्ञात होता है कि राग, ज्ञान गुण का घातक है, द्वेष दर्शन गुण का घातक है एवं मोह चारित्र गुण का घातक है। इससे विपरीत पंचमंगल में ज्ञान है, दर्शन है, चारित्र है तथा मन की, वचन की, काया की प्रशस्त क्रिया है। अतः जैसे पंचमंगल में देह को दूषित करने वाले वात, पित्त एवं कफ दोष को शमित करने की शक्ति है, वैसे ही आत्मा को दूषित करने वाले राग, द्वेष एवं मोह को भी शमित करने की शक्ति है।

-प्रेषक : नवरतनमल डोसी, जूनी धान मण्डी, जोधपुर

पशुबलि के प्रबल विरोधी थे दार्शनिक प्लेटो

श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन 'एडवोकेट'

अतीत के उस अनजाने दिन, एथेन्स नगर के देवालय में एक समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें महान् दार्शनिक प्लेटो को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया गया।

निश्चित समय पर प्लेटो ने देवालय प्रांगण में अपना स्थान ग्रहण कर लिया। प्लेटो ने देखा, जो भी नगर निवासी देवालय में आता देवता को नमन कर पशु-बलि देता, पशु की चीत्कार से प्रांगण में उपस्थित जन-समूह हर्ष-विभोर हो जाता। प्राणिमात्र के प्रति दया-करुणा-अनुकम्पा व संवेदना के धनी भावुक प्लेटो तड़पते पशु-पक्षियों की चीत्कारों से व्यथित हो समारोह से प्रस्थान करने को अग्रसर हुए, तभी भागा-भागा पुजारी उनके पास आया और उनसे निवेदन किया- "सम्माननीय अतिथि! आपको परम्परा का निर्वाह करते पशु-बलि देने के पश्चात् ही यहाँ से प्रस्थान करना होगा।" प्लेटो ने उत्तर दिया- "ठीक है! मैं अपना फर्ज अंजाम देने के पश्चात् ही प्रस्थान करूँगा।" वे आगे बढ़े, मिट्टी का ढेर जमा कर उस पर पानी डाला और गीली मिट्टी से एक पशु की आकृति बना ली।* उपस्थित वर्ग की नजरें उन पर केन्द्रित हो गई। प्लेटो मिट्टी से बने जानवर को लेकर धीरे से देव-प्रतिमा के पास पहुँचे और वहाँ नंगी तलवार से उसकी बलि देकर जाने लगे तो प्रांगण सकते में आ गया- प्रांगण में बैठे लोगों ने एक स्वर में आवाज लगाई- "यह कैसी बलि?"

भीड़ की आवाज को शांत करते प्लेटो ने संयत स्वर में कहा-"भाइयों! निर्जीव देवता के सामने मैंने निर्जीव बलि चढ़ा कर ही अपने फर्ज को अंजाम दिया है।"

उनके शब्दों में दया थी, करुणा थी, अनुकम्पा थी, संवदेना थी, हकीकत थी, सदाकत थी, वजन था, मूक पशु-पक्षियों को जीवन-दान देने की प्रबल भावना थी।

उनके तलस्पर्शी चिंतन में आबद्ध शब्दों ने सभी को झंझोरते हुए निरुत्तर कर दिया। जब पावन मन और दुर्लभ स्वर्णिम क्षणों का मधुर मिलन होता है तब ऐसा ही होता है। और-और उसी दिन से एथेन्स में हमेशा-हमेशा के लिए अंधविश्वासों में आबद्ध पशु-बलि बन्द हो गई। यह हिंसा पर अहिंसा की ऐतिहासिक विजय थी।

-भवानीमण्डी (राज.)

* उदाहरण को अपेक्षा विशेष से पशुबलि रोकने की दृष्टि से ग्रहण किया जाए।–सम्पादक

जैनदर्शनाभिमुख शिक्षा और उसकी उपयोगिता

डा. आशा भंसाली

आज मानव के सामाजिक व्यवहार के प्रेक्षण और विश्लेषण के आधार पर यह पूर्वानुमान लगाया जा सकता है कि बहुत शीघ्र ही उसका व्यवहार विनाशकारी बिन्दु तक पहुँच जायेगा, क्योंकि विज्ञान एवं तकनीकी की अत्यधिक प्रगति तो हो रही है, किन्तु उसमें नैतिक नियन्त्रण एवं मानवीय मूल्यों का अभाव होता जा रहा है। आज हम चन्द्रमा एवं अन्य ग्रहों पर पहुंचने में तो सफल हो रहे हैं, पर पड़ौसी की वेदना के प्रति संवेदनशीलता जैसे गुणों को धारण करने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। अतः भावी समस्याओं से बचने का एक ही साधन है और वह है-शिक्षा। यदि हम शिक्षा में दर्शन के ऐसे तत्त्वज्ञान को जोड़ दें जो सम्यक् आचार की शिक्षा देता है, मानव को उत्क्रान्ति के पथ की ओर अग्रसर करता है तथा शायद मानव समाज का रक्षक बन सकता है तो वह दर्शन है- जैन दर्शन।

आज संवेदना का अभाव ही परिलक्षित नहीं हो रहा है, अपितु तकनीकी तथा अत्याधुनिक उपकरणों से दिये जाने वाले शिक्षण की तुलना में मूल्योन्मुख शिक्षा गौण होती जा रही है। तात्पर्य यह है कि आज की शिक्षा मूल्यों पर कम आधारित है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल सूचना तथा साक्षरता प्रदान करती है। इस शिक्षा पद्धति द्वारा प्रशिक्षित अधिकांश व्यक्तियों में पाये जाने वाले लक्षण हैं- बेरोजगारी, मूल्यविहीनता, सिद्धान्तों के साथ मनमानी करने की आदतें, अवास्तविक आकांक्षाएँ, पाखण्ड, उच्च उपलब्धियों के प्रयोजन, किन्तु अपेक्षाकृत कम संसाधन। इतना ही नहीं, आज का मानव विभिन्न आदर्शों को अपने व्यक्तित्व के अनुरूप महत्त्व प्रदान करता है। उसे जिन आदर्शों के प्रति रुचि होती है उन्हें अधिक महत्ता प्रदान करता है। इस प्रकार उसके व्यक्तिगत मूल्य उसके व्यक्तित्व के सापेक्ष परिभाषित किये जाते हैं।

वर्तमान शताब्दी के प्रथम अर्द्धभाग में व्यक्ति के व्यक्तिगत मूल्यों को परिभाषित करने के लिए विभिन्न परिभाषाएँ साहित्य में प्रयोग में लायी गयी हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत मूल्य व्यक्ति की कामनाओं, लक्ष्यों, आवश्यकताओं, अभिरुचियों, अभावों, आदर्शों, विचारों, मान्यताओं, मानदण्डों, प्रयोजनों, प्रवृत्तियों, आदतों, व्यक्तित्व तथा आकांक्षाओं की प्राथमिकताओं, अनुभूतियों आदि को दर्शाते हैं, क्योंकि ये समस्त कार्य व्यक्तिगत वांछनीयता के विभिन्न प्रतिबिम्ब हैं। लेकिन वास्तविक अर्थों में ये

कार्य मूल्यों के समरूप नहीं हैं, अपितु ये मूल्य-संकेतक मात्र हैं। व्यक्ति अपनी सुविधानुरूप मूल्यों का अपने व्यक्तित्व में निर्धारण करता है। आवश्यकता इस बात की है कि मूल्यों के निर्धारण में व्यक्ति अपनी सुविधा को दृष्टि में रखकर न चले, अपितु स्वयं के सर्वांगीण विकास, सामाजिक व्यवस्था एवं सामाजिक आदर्शों के अनुरूप नैतिक मूल्यों को व्यक्तिगत रूप से अंगीकार करे; क्योंकि हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनैतिकता, अशान्ति, भ्रष्टाचार, हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ, प्रतिस्पर्द्धा, विद्वेष, मनोमालिन्य आदि विकृतियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं। यदि विश्व से इन दुष्प्रवृत्तियों को नहीं हटाया गया तो विश्व में शान्ति एवं सुख की व्यवस्था का अभाव हो जायेगा। प्रत्येक देश साहित्य, संगीत एवं कला-विहीन हो जायेगा। आज तकनीकी विकास ने विश्व को छोटा बना दिया है। विश्व में घटित होने वाली प्रत्येक प्रकार की घटना से आज बालक परिचित होता है। वे सभी घटनाएँ बालकों के मस्तिष्क को विभिन्न संस्कार प्रदान करती हैं। अतः बालकों को शिक्षा द्वारा करणीय एवं अकरणीय, ग्रहणीय एवं अग्रहणीय में विवेक बुद्धि को जागृत करना होगा। बालकों को यदि हम उचित मूल्यों, लक्ष्यों, आदर्शों की ओर अग्रसर नहीं करेंगे तो उनके बौद्धिक विकास में दुष्प्रवृत्तियों का समावेश होगा ही। अतः शिक्षा उन साधनों को प्रदान करने वाली होनी चाहिए, जिनसे सभी व्यक्ति मन, वचन एवं कर्म से मूल्यों का स्वयं में अर्न्तभाव कर सकें।

आने वाली पीढ़ियों में शिक्षा द्वारा नैतिक-साहस, अनुशासन, पारस्परिक सम्मान, मित्रतापूर्ण व्यवहार, उद्देश्यपरक निष्पक्षता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, ईमानदारी, सहानुभूति, उत्तरदायित्व आदि आधारभूत नैतिक मूल्यों को विकसित करना होगा।

भारत की सम्मिलित संस्कृति में बालकों को, युवकों को, नये ढंग की शिक्षा की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में जैन दर्शन के शाश्वत मूल्य हमारी सहायता कर सकते हैं। जैन दर्शन एक ऐसा साधन है जो शिक्षा द्वारा विशिष्ट मूल्यों के स्थापन की दिशा दर्शाता है। यह दर्शन अहिंसा, समभाव, समायोजन और नैतिकता की राह दिखाता है।

वास्तव में, जैन दर्शन का उद्भव ही जगत् के जीवों के रक्षण रूप दया के लिए हुआ है। अहिंसा, दया, करुणा, स्नेह, मैत्री ही इसका सार है। अतएव विश्व के जीवों के लिए यह सर्वाधिक हितकर, संरक्षक एवं उपकारक है। शिक्षा को इस दर्शन से संबंधित करके हम जगज्जीवों को लाभान्वित कर सकते हैं। यह समूचे विश्व के लिए त्राणरूप है शरणरूप है, गतिरूप है और

आधार रूप है। यह दर्शन भारतीय शिक्षा एवं साहित्य में अपना एक विशिष्ट और गौरवपूर्ण स्थान रखता है। जैन दर्शन स्थूल अक्षर देह से ही विशाल एवं व्यापक नहीं है, अपितु ज्ञान और विज्ञान का, न्याय और नीति का, आचार और विचार का, धर्म और दर्शन का, अध्यात्म एवं अनुभव का अक्षय कोष है।

जैन दर्शन का शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्व इसलिए भी है, क्योंकि जैन दर्शन वीतराग तीर्थंकरों की वाणी पर आधृत है। वीतरागता के कारण दोष की किंचित् मात्र भी संभावना नहीं रहती और न पूर्वापर विरोध अथवा युक्तिबाध ही होता है। आचार्य भद्रबाहु ने आवश्यक निर्युक्ति में लिखा है- "तप, नियम एवं ज्ञानरूप वृक्ष पर आरूढ़ होकर अनन्तज्ञानी तीर्थंकर भव्य आत्माओं (जिन आत्माओं में मुक्त होने के गुण हैं) के विबोध के लिये ज्ञान कुसुमों की वृष्टि करते हैं। गणधर अपने बुद्धिपट में उन सभी कुसुमों को झेलकर प्रवचन माला गूंथते हैं। तीर्थंकर केवल अर्थरूप ही उपदेश देते हैं और गणधर उसे सूत्रबद्ध अथवा ग्रन्थबद्ध (भाषाबद्ध) करते हैं। अर्थात्मक ग्रन्थ के प्रणेता तीर्थंकर हैं। जैनदर्शनागम के लिये यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि यह आगम साहित्य बहुत प्रामाणिक है। इसकी प्रामाणिकता में अर्थ-प्ररूपक तीर्थंकरों की वीतरागता और सर्वज्ञता ही प्रमुख कारण है। गणधर केवल द्वादशांगी की रचना करते हैं, किन्तु अंगबाह्य आगमों की रचना स्थविर करते हैं। आचार्य संघदासगणी का अभिमत है कि जो बात तीर्थंकर कह सकते हैं, उसको श्रुत केवली भी उसी रूप में कह सकते हैं। दोनों में अन्तर केवल इतना ही है कि केवलज्ञानी सम्पूर्ण तत्त्व को प्रत्यक्ष रूप से जानते हैं, जबकि श्रुतकेवली श्रुतज्ञान के द्वारा परोक्ष रूप से जानते हैं। उनके वचन इसलिए प्रामाणिक होते हैं, क्योंकि वे नियमतः सम्यग्दृष्टि होते हैं। ऐसे श्रुतकेवली स्वयं केवलज्ञानी द्वारा साक्षात्कृत तत्त्वों को जैन दर्शनागमों में उल्लिखित किया गया है। इन आगमों में मुक्ति का अव्याबाध सुख प्राप्त करने के मूल आचारों का वर्णन किया गया है।

जैन दर्शन लोगों को अव्याबाध सुख प्राप्ति की विधियों से परिचित कराता है, अतः शिक्षा के क्षेत्र में जैन दर्शन की उपयोगिता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सुख प्राप्त करना चाहता है और उसकी समस्त सांसारिक गतिविधियाँ सुख प्राप्ति हेतु ही होती हैं, किन्तु वास्तविक जीवन में सुख एक मृग-मरीचिका के समान प्रतीत होता है। अतः इन्द्रिय जनित अनुभूतियों से परे अतीन्द्रिय शाश्वत सुख की प्राप्ति हेतु ही सभी दार्शनिकों ने प्रयत्न किये हैं।

व्यक्ति को अव्याबाध सुख कैसे प्राप्त हो, इसकी विधि का सरलतम

रूप जैन दर्शन में दृष्टिगोचर होता है।

शिक्षा के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व में तकनीकी तथा वैज्ञानिक प्रगति के प्रति अभिनति(झुकाव) एवं निष्ठा से पृथक् एक ऐसा सार्वदेशिक विश्वास, जिसमें सामान्य निष्ठा हो, कठिनता से दृष्टिगत होता है। ऐसा विश्वास जो मानवता के मार्गदर्शन में सक्षम हो अथवा उसकी अभिव्यक्तियों एवं गतिविधियों को दिशा प्रदान कर सके, दृष्टिगत नहीं होता। इस प्रकार आधुनिक संभ्रम के युग में शिक्षा भी भ्रमित हो गयी है और वह समाज को उतनी क्षमता से प्रभावित करने में स्वयं को असहाय पा रही है, जिसके लिये वास्तव में उसे सक्षम होना चाहिए, क्योंकि वर्तमान शिक्षा धर्म एवं दर्शन से पूर्णतः असंबद्ध हो गयी है और उसे शंका की दृष्टि से देखती है। इसीलिए चरित्र-निर्माण संबंधी जिन प्रभावों पर दर्शन एवं धर्म से संबद्ध शिक्षा ने अतीत में आग्रह पूर्वक बल दिया था, उन प्रभावों का वर्तमान शिक्षा में सर्वथा अभाव दृष्टिगोचर होता है।

यह सर्वमान्य है कि शैक्षणिक सुधार बहुधा महान् दार्शनिकों एवं चिन्तकों के अन्तःबोध तथा अन्तर्दृष्टि के फलस्वरूप होते हैं। शैक्षणिक कार्यक्रम एक सुदृढ़ दर्शन पर आधारित होने के कारण प्रभावी बन जाते हैं, क्योंकि दार्शनिक पृष्ठभूमि शिक्षा को एक सृजनशील दृष्टि तथा एकीकृत दृष्टिकोण प्रदान करती है।

अतः विशुद्ध दार्शनिक दृष्टिकोण से देखा जाय तो शिक्षा का उद्देश्य अत्यन्त उदात्त और उसका लक्ष्य अव्याबाध सुख हो सकता है।

सांसारिक दृष्टि से भी देखें तो जैन दर्शन पर आधारित शिक्षा का महत्त्व उत्तरोत्तर बढ़ता चला जायेगा। उपभोक्तावाद तथा भौतिक सुखों के अन्वेषण में जिस शिक्षा प्रणाली को आज श्रेयस्कर समझा जा रहा है, वह वस्तुतः मनुष्य को असहिष्णुता, अराजकता की ओर एवं हिंसा की ओर अग्रसर करने की प्रेरणा प्रदान कर रही है।

आज साधनों की शुद्धता का कोई महत्त्व नहीं रह गया है। उचित अथवा अनुचित किसी भी प्रकार के साधनों को अपनाकर भौतिक सुख लिप्सा के लक्ष्य की पूर्ति ही जीवन का एकमात्र प्रयोजन हो गया है। विश्व के सर्वाधिक विकसित राष्ट्र आज अपने अतुल वैभव एवं समृद्धि से त्रस्त हैं, क्योंकि उनके नागरिकों का जीवन नीरस एवं यन्त्रवत् हो गया है। वे इस वैभव से ऊब कर आत्मिक शान्ति की तलाश में हैं।

जैन दर्शन ने विश्व को ऐसी मूलभूत स्वयंसिद्धियाँ प्रदान की हैं जो

व्यापक शिक्षण पद्धति का रूप ले सकती हैं। जैन दर्शन के प्रवर्तक अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर द्वारा जैन दर्शन के सिद्धान्तों के विवेचन पर कहा गया- ''उवओगमओ जीवो''[1] जीव उपयोग मय है अर्थात् आत्मा ज्ञान-दर्शनस्वरूप है, जीव का लक्षण उपयोग है।[2] जीव जिसे आत्मा या चेतन भी कहते हैं, अनादिसिद्ध, स्वतन्त्र द्रव्य है। आत्मा लक्ष्य है और उपयोग लक्षण है। यह विश्व या जगत् जड़-चेतन पदार्थों का मिश्रण है। उसमें से जड़ और चेतन का भेद ज्ञान विवेकपूर्ण निश्चय उपयोग के द्वारा ही हो सकता है। आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप में अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य आदि आत्मगुणों से समलंकृत है। किन्तु गुणों में वैभाविक परिणमन हो जाने से वह आत्मा अज्ञानी, अशक्त और दुःखी प्रतीत होती है। यदि जीव अपने परिश्रम से अपने समस्त कर्म-बन्धनों का क्षय कर देता है तो वह अनन्तज्ञान, दर्शन स्वरूप को प्राप्त कर लेता है।

जैन दर्शन की ही समानता रखने वाले पाश्चात्त्य दर्शनों में भी इसी प्रकार की कुछ मूलभूत स्वयंसिद्धियों का उल्लेख है। सन् १९६६ में वाल्टन महोदय ने शिक्षण के चार प्रमुख सिद्धान्त बताये।[3] उनमें सर्वप्रथम है- म्युटिक सिद्धान्त।[4] जो जैन दर्शन की अवधारणाओं के अधिक निकट है। म्युटिक सिद्धान्त के जन्मदाता सुकरात हैं। इन सिद्धान्तों की व्याख्या सुकरात के शिष्य प्लूटो ने की। सुकरात का मानना था कि आत्मा अमर है जो कि बहुत से ज्ञान को सीखे हुए होती है। जन्म के समय सीखे हुए ज्ञान को आत्मा भूल जाती है। इस भूले हुए ज्ञान का पुनः स्मरण कराने तथा पहचान कराने की क्रिया ही शिक्षण है। अर्थात् शिक्षण वह क्रिया है जो छात्र को अपने भूले हुए ज्ञान को याद करने में सहायता करती है। सुकरात का दर्शन जैन दर्शन के स्वरूप पर ही अवलम्बित है। जिज्ञासु अर्थात् छात्र को पूर्ण ज्ञान की स्थिति में आने की विधि के मुख्य तीन सोपान हैं-

१. भ्रम से मुक्ति की प्रक्रिया।

२. जिज्ञासु को यह प्रत्यभिज्ञान कराना कि कुछ मान्यताएँ सत्य हैं।

३. जिज्ञासु की मान्यताओं के सही होने का कारण बताना।

इसका अन्तिम परिणाम ज्ञान है। म्युटिक सिद्धान्त में सुकरात ने कहा है कि शिक्षण द्वारा व्यक्ति में निहित गुणों का विकास होता है। सुकरात का विचार था कि मनुष्य का मस्तिष्क ज्ञान से भरा है । शिक्षक का कर्त्तव्य है कि बालकों को मस्तिष्क में भरे हुए ज्ञान से परिचित करावें और उन्हें सार्वभौमिक सत्य का साक्षात्कार करने का अवसर प्रदान करें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए

उन्होंने प्रश्न विधि को उपयुक्त माना।

ज्ञान को प्रश्नोत्तर द्वारा व्यक्ति की चेतना में लाकर उसे बुद्धियुक्त करना ही सुकराती विधि है। सुकरात ने ज्ञान को बाहर से लादने के लिए किसी को बाध्य नहीं किया। सुकरात के अनुसार प्रश्नों द्वारा छात्र के मन की शंकाओं का समाधान करके नवीन ज्ञान को आत्मसात् करने के लिये उचित मार्ग की ओर ले जाना ही उपयुक्त शिक्षण है। इस विधि को "मिडवाइफरी विधि" भी कहते हैं।[5] इसके आधारभूत सिद्धान्त हैं-

१. ज्ञान देने से पूर्व जिज्ञासा उत्पन्न करना।
२. रुचि के आधार पर ज्ञान देना।
३. बाहरी ज्ञान न ठूंसा जाय।
४. नवीन ज्ञान पूर्व ज्ञान पर आधारित हो।
५. बालक को स्वशिक्षा के लिये प्रेरित करना।

सुकरात के जन्म से लगभग २०० वर्ष पूर्व जैन दर्शन की द्वादशांगी में व्याख्याप्रज्ञप्ति नाम का पाँचवां आगम प्रश्नोत्तर शैली में लिखा हुआ है। तीर्थंकर महावीर ने गौतमादि शिष्यों को उनके प्रश्नों का उत्तर प्रदान करते हुए श्रेष्ठतम विधि से विविध विषयों का विवेचन किया है। व्याख्याप्रज्ञप्ति में ३६००० प्रश्नों का व्याकरण है। इस आगम में स्वसमय, परसमय, जीव, अजीव, लोक, अलोक आदि प्रश्नों पर व्याख्या की गई है।[6]

जैन दर्शन के प्रमुख कर्म सिद्धान्त में छात्र को स्वयं को अपने ऐसे कर्मों को जिनसे आत्मा में विभाव परिणमन होता है, दूर रहने का विधान किया है तथा सत्य को खोज कर शुद्ध आत्म-परिणमन में विचरने को कहा गया है। उसके लिए छात्र को पुरुषार्थ करना होगा। जैन दर्शन योग्यता की दृष्टि से समस्त आत्माओं को अनन्तज्ञानमय मानता है, किन्तु जीव विशेष के उन उन कर्मों के आवरण से जितना ज्ञान अवरुद्ध हो जाता है उसको ज्ञानावरण कर्म क्षय की प्रक्रिया द्वारा पुनः उजागर करना ही स्वभाव में आना है। क्योंकि ज्ञानावरणीय कर्मों के क्षय से ही आत्मा का पूर्व संचित ज्ञान व्यक्त होता है। सुकरात ने दर्शन के इन्हीं सिद्धान्तों को म्युटिक सिद्धान्त का नाम दिया है।

भारत और विदेशों में सुकरात की विधि को अत्यधिक महत्त्व दिया जा रहा है। तब सुकरात के पूर्व में बताये गये हमारे अपने देश के विद्वानों द्वारा उल्लिखित जैन दर्शन के सिद्धान्तों पर शिक्षा का एक नवीन प्रतिमान बनाकर वर्तमान में चल रही तथा आगे आने वाली समस्त समस्याओं से पार पाया जा सकता है। क्योंकि आज युवा शक्ति दिग्भ्रमित हो रही है, अतः शिक्षा तथा

शिक्षाविदों का यह कर्त्तव्य है कि देश के विकास एवं आर्थिक सन्तुलन के लिये तकनीकी विकास की जितनी आवश्यकता है उतनी ही नैतिक या चारित्रिक विकास की आवश्यकता होती है, जिससे समाज में जातिवाद, सम्प्रदायवाद, प्रान्तीयता, और भाषायी अलगाववाद जैसी समस्याएँ उत्पन्न न हों।

जैन दर्शन पर आधारित विशिष्ट शिक्षा के पाठ्यक्रम को इस प्रकार नियोजित किया जा सकता है-

विशिष्ट शिक्षा : पाठ्यक्रम
जैन दर्शन अभिमुख शिक्षा के आधारभूत कार्यक्रम

अध्ययन क्षेत्र	प्राथमिक स्तर	माध्यमिक स्तर	उच्च स्तर
जीव	1. जीव,अजीवः स्वरूप 2. जीव के अस्तित्व का बोध 3. जीव अजीव में अन्तर 4. जीव के प्रति अहिंसक दृष्टिकोण 5. जीव अजीव का स्वरूप एवं विज्ञान	1. जीव अजीव के लक्षण 2. जीव के भेद 3. अजीव के भेद 4. जीव के प्रति अहिंसक दृष्टिकोण 5. जीव अजीव का स्वरूप एवं विज्ञान	1. जीव के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन 2. जीव और अहिंसा 3. जीव, अजीव एवं भेद विज्ञान 4. जीव के शुद्ध स्वरूप की उपलब्धि
कर्म सिद्धान्त	1. जीव के संसार भ्रमण का कारण कर्मबंध 2. कर्म–क्षय एवं मोक्ष प्राप्ति	1. कर्म प्रकृति 2. कर्मों के प्रकार 3. कर्मबन्धन की प्रक्रिया 4. कर्मक्षय एवं मोक्ष प्राप्ति	1. कर्मबन्ध तथा कर्म सिद्धान्त की उपादेयता 2. कर्मबंध में निमित्त नैमित्तक संबंध 3. जीव का उपयोग तथा कर्मबन्ध 4. कर्म क्षय एवं मोक्ष प्राप्ति
सापेक्षता	सापेक्षता का सिद्धान्त (प्रारम्भिक ज्ञान)	सापेक्षता का सिद्धान्त (पदार्थों का सापेक्ष स्वरूप)	सापेक्षता का सिद्धान्त (नयवाद, अनेकान्तवाद, स्याद्वाद के संदर्भ में)
पर्यावरण	1. भौतिक संसाधनों का सीमित उपयोग 2. पर्यावरण संरक्षण	1. भौतिक संसाधन और जीव हिंसा 2. पर्यावरण संरक्षण	1. भौतिक संसाधन और जीवों का गतिचक्र 2. पर्यावरण संरक्षण
अहिंसा	1. अर्थ, आवश्यकता, महत्त्व 2. अहिंसा और तनाव मुक्ति 3. अहिंसा शाकाहार 4. पशुक्रूरता और सौन्दर्य प्रसाधन	1. अहिंसा का स्वरूप 2. अहिंसा एवं विश्व–शान्ति 3. अहिंसा एवं शाकाहार 4. पशुक्रूरता : सौन्दर्य प्रसाधन 5. पशुक्रूरता और	1. अहिंसा के संदर्भ में–कृत, कारित, अनुमोदित 2. अहिंसा एवं सुखी जीवन 3. अहिंसा और शाकाहार 4. पशुक्रूरता : सौन्दर्य प्रसाधन 5. पशुक्रूरता और मनोरंजन 6. समाज का आधार– अहिंसा

	5. समाज का आधार– अहिंसा में आस्था	मनोरंजन 6. समाज का आधार– अहिंसा की आस्था	पर आस्था
मूल्यबोध	1. सत्य 2. स्वावलम्बन 3. कर्त्तव्यनिष्ठा 4. आत्मानुशासन 5. राष्ट्रीय दायित्व	1. सत्य 2. स्वावलम्बन 3. कर्त्तव्यनिष्ठा 4. आत्मानुशासन 5. राष्ट्रीय दायित्व	1. सत्य 2. स्वावलम्बन 3. कर्त्तव्यनिष्ठा 4. आत्मानुशासन 5. राष्ट्रीय दायित्व
शिक्षा और नैतिकता	1. संयम 2. संवेगों पर नियन्त्रण 3. अस्तेय 4. अपरिग्रह	1. संयम 2. संवेगों पर नियन्त्रण 3. अस्तेय 4. अपरिग्रह	1. संयम 2. संवेगों पर नियन्त्रण 3. अस्तेय 4. अपरिग्रह
शिक्षा एवं ब्रह्मचर्य	1. अर्थ, आवश्यकता, महत्त्व 2. ब्रह्मचर्य : रोगों से मुक्ति	1. ब्रह्मचर्य की उपादेयता	1. ब्रह्मचर्य की उपादेयता

इस प्रकार सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम में उपरिलिखित क्षेत्रों का समावेश करते हुए विद्यालय स्तर के पाठ्यक्रम का नवीनीकरण किया जा सकता है। उपरिलिखित क्षेत्रों को प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तरों के अनुरूप विकसित किया जा सकता है। किन्तु पाठ्यक्रम का केवल सैद्धान्तिक पक्ष उतना उपयोगी नहीं है, जितना प्रयोग के साथ वह उपयोगी बनता है।

भावों के परिवर्तन के लिये सिद्धान्त और प्रयोग दोनों का समन्वय आवश्यक है। सिद्धान्त को जाने बिना प्रयोग हो नहीं सकता। अतः ज्ञान और क्रिया का समन्वय होना चाहिए। "पढमं नाणं तओ दया" अर्थात् "पहले ज्ञान फिर क्रिया"। कहा है- पहले जानो फिर उसका अभ्यास करो। अतः सैद्धान्तिक और प्रायोगिक दोनों प्रकार का ज्ञान आवश्यक है।

प्रायोगिक पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के साथ ही छात्रों में वास्तविक ज्ञान प्रदान करने, शान्ति की भावना का विकास करने, मानव में मानव के प्रति सम्मान की भावना विकसित करने के लिए शिक्षालयों में कुछ ऐसी क्रियाएँ करवानी होंगी जिससे छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सके। इसके लिये शैक्षिक संस्थाएँ निम्नलिखित योजना बना सकती हैं।

१. भ्रमण दल
२. निबन्ध-लेखन प्रतियोगिता
३. आशुकविता रचना प्रतियोगिता।

४. मूल्यपरक फिल्मों का प्रदर्शन
५. नाटक
६. ध्यानविधि
७. आसन
८. मौन
९. प्रतिक्रमण

इन सभी क्रियाओं को जैन दर्शनाभिमुख कर छात्रों के जीवन में सदाचार संहिता लायी जा सकती है।

इस प्रकार जैन दर्शन अभिमुख शिक्षा के आधारभूत कार्यक्रम को आज की शिक्षाप्रणाली में जोड़कर हम वर्तमान समस्याओं, सामाजिक कुरीतियों, मूल्य विहीनता आदि का निराकरण कर सकते हैं तथा एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं जो शान्ति, अहिंसा, मित्रतापूर्ण व्यवहार, सहानुभूति, अनुशासन, पारस्परिक सम्मान और पुरुषार्थमय जीवन से युक्त होकर सांसारिक जीवन को सुचारु रूप से चलाने के साथ-साथ अपनी आत्मा को शुद्ध व स्वच्छ बनाने के प्रयास में लगी रहेगी। प्रत्येक व्यक्ति यदि ऐसा प्रयास करे तो निश्चित रूप से एक सुन्दर स्वस्थ समाज की रचना हो सकती है। अतः नीति निर्धारकों, शाला-प्रशासकों, शिक्षा-मन्त्रियों, शिक्षाविदों, शिक्षा-निदेशकों एवं विद्वानों को जैन दर्शन अभिमुख शिक्षा के आधारभूत पाठ्यक्रम को शिक्षा के साथ जोड़ना होगा तभी एक स्वस्थ समाज की संरचना हो सकेगी।

संदर्भ

१. प्रवचनसार, अध्याय २, गाथा ३५
२. तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय २, सूत्र ८
३. शिक्षा के नूतन आयाम, सम्पादक-डॉ. एल.के. ओड़, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, पृ. २३८-२४०
४. ब्रूनर जे.एस. (१९६६), टुवर्ड थ्योरी ऑफ इन्स्ट्रक्शन, हार्वर्ड विश्वविद्यालय प्रेस
५. स्मिथ बी.ओ. (१९६३) टुवर्डस् ए थ्योरी ऑफ टीचिंग इन ब्लैक ए.ए., सम्पादक-थ्योरी एण्ड रिसर्च इन टीचिंग, ब्यूरो ऑफ पब्लिकेशन्स, टीचर्स कॉलेज, कोलम्बिया, यूनी. न्यूयार्क
६. समवायांगसूत्र, ९३

-१७/३९७, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

☆ श्री धर्मचन्द जैन

प्र. १ समकित किसे कहते हैं?

उत्तर १. अनन्तानुबंधी चौक तथा दर्शन त्रिक, इन सात प्रकृतियों का क्षय, उपशम अथवा क्षयोपशमादि होना समकित है।

२. जीवादि नव तत्त्वों के स्वरूप का यथार्थ श्रद्धान होना समकित है।

३. स्व-पर का भेद विज्ञान होना, आत्मानुभूति होना समकित है।

४. सुदेव, सुगुरु, सुधर्म एवं आत्मा का यथार्थ श्रद्धान होना समकित है।

प्र.२ समकित के अन्य समानार्थक नाम क्या-क्या है?

उत्तर तत्त्वश्रद्धान, भेद-विज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक्त्व, आत्म-श्रद्धान, आत्मानुभूति आदि समकित के अन्य समानार्थक नाम हैं।

प्र. ३ समकित के प्रमुख भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर समकित के प्रमुख भेद पाँच हैं- औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक, सास्वादन एवं वेदक समकित।

प्र. ४ औपशमिक समकित किसे कहते हैं?

उत्तर जिसमें दर्शन मोहनीय की तीनों प्रकृतियों (मिथ्यात्व, मिश्र एवं समकित मोहनीय) का उपशम होना अनिवार्य हो तथा अनन्तानुबन्धी चौक का उपशम, क्षयोपशम अथवा विसंयोजना होने पर जो तत्त्व श्रद्धान एवं भेद विज्ञान रूप परिणाम उत्पन्न हो, उसे औपशमिक अथवा उपशम समकित कहते हैं।

प्र. ५ यहाँ उपशम, क्षयोपशम तथा विसंयोजना का क्या अर्थ है?

उत्तर जिसमें न तो प्रदेशोदय हो और न विपाकोदय हो, किन्तु कर्म सत्ता में दबा हुआ विद्यमान रहे, उसे उपशम कहते हैं। जो अनुभूति में न आये उसे प्रदेशोदय तथा जो अनुभूति में आये, उसे विपाकोदय कहते हैं।

जिसमें प्रदेशोदय हो, किन्तु विपाकोदय न हो, उसे क्षयोपशम कहते हैं।

जिसमें किसी भी प्रकार का उदय न हो, कर्म सत्ता में भी न रहे, अस्थायी रूप से क्षय हो जाय, किन्तु मिथ्यात्व मोहनीय का कारण उपस्थित होने पर पुनः बन्ध-उदय हो सके, उसे विसंयोजना कहते हैं। दर्शन सप्तक में वर्णित 'अनन्तानुबंधी चौक' चारित्र मोह की तथा 'दर्शन त्रिक' दर्शन मोहनीय की प्रकृतियाँ हैं। जब तक मिथ्यात्व मोहनीय का पूर्ण क्षय नहीं हो जाता तब तक अनन्तानुबंधी चौक का भी पूर्ण क्षय नहीं हो सकता है।

१४८ कर्म-प्रकृतियों में से मात्र अनन्तानुबंधी चौक की ही विसंयोजना होती है।

प्र. ६ उपशम समकित कितने प्रकार की होती हैं?

उत्तर उपशम समकित दो प्रकार की है- १. प्रथमोपशम २. द्वितीयोपशम।

प्र. ७ प्रथमोप्रथम समकित किसे कहते हैं?

उत्तर जो उपशम समकित जीवों को बिना श्रेणी के प्राप्त होती है, उसे प्रथमोपशम कहते हैं, चाहे वह पहली, दूसरी, तीसरी आदि बार ही क्यों न प्राप्त हो। यह समकित चौथे से सातवें गुणस्थानवर्ती जीवों में पायी जाती है। इसकी स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की होती है। यद्यपि जघन्य से उत्कृष्ट स्थिति का अन्तर्मुहूर्त बड़ा होता है, क्योंकि अन्तर्मुहूर्त के भी असंख्यात भेद संभव हैं।

प्र. ८ द्वितीयोपशम समकित किसे कहते हैं?

उत्तर जो उपशम समकित श्रेणी सहित प्राप्त हो, अर्थात् जिस उपशम समकित में जीव उपशम श्रेणी कर सके, उसे द्वितीयोपशम समकित कहते हैं। चाहे वह पहली, दूसरी, तीसरी आदि बार ही क्यों न प्राप्त हो। यह समकित चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक पायी जाती है, इसकी स्थिति भी प्रथमोपशम के समान जघन्य व उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की होती है।

प्रथमोपशम का पहली बार तथा द्वितीयोपशम का दूसरी बार प्राप्त होने वाली उपशम समकित अर्थ नहीं लगाना चाहिए, बल्कि श्रेणी रहित तथा श्रेणी सहित उपशम समकित अर्थ लेना चाहिये।

प्र. ९ उपशम समकित जीव को कितनी बार प्राप्त हो सकती है?

उत्तर उपशम समकित एक भव में जघन्य एक बार तथा उत्कृष्ट दो बार प्राप्त हो सकती है। जबकि अनेक भवों में जघन्य दो बार तथा उत्कृष्ट पाँच बार प्राप्त होती है। पाँच बार से अधिक किसी भी जीव को यह समकित प्राप्त होना संभव नहीं है। **(क्रमशः)**

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आ.शिक्षण बोर्ड,जोधपुर

माता-पिता की सेवा

श्री नितेश नागोता 'जैन'

माता-पिता की सेवा, हमारा नैतिक फर्ज है।
उनके हमारे ऊपर, अनंत अनगिनत कर्ज हैं।।
माँ-बाप की उपेक्षा करके, जिसने दुःखाया उनका दिल।
बढ़ता ही रहा है सदा उसके कर्मों व पापों का बिल।।
माता-पिता तो इस कलियुग में, हमारे जागृत भगवान हैं।
पुण्यवानी से मिला सेवा का अवसर, गुरुओं का यह फरमान है।।
मात-पिता की सेवा करना, पूजा है भगवान की।
गुरुओं की अमृतवाणी से, बहती गंगा ज्ञान की।।

-१७५-जैन बोर्डिंग हाऊस, भवानीमण्डी (राज.)

अहिंसावर्ष द्वादशपदी

श्री मनोज कुमार जैन 'निर्लिप्त'

तीर्थंकर महावीर प्रभु की छब्बीस सौ वीं,
जन्म जयन्ती कहो मनाई सबने कैसी?
एक वर्ष तक पर्व 'अहिंसा-वर्ष' नाम का,
ढोल पीटकर हिंसा त्यागी किसने कैसी?।।१।।

महावीर के उपदेशों को हमने कितना,
अपनी नित-प्रति जीवन-चर्या में उतराया?
सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अचौर्य, अपरिग्रह,
पंच-व्रतों को कैसे, कितना कब अपनाया?।।२।।

पाँच व्रतों की बातें गर न करना चाहो,
चलो चार को तनिक ताक पर ही रहने दो।
पाँचों में जो प्रमुख कहाती एक अहिंसा,
चलो मात्र बातें उसकी कुछ कर लेने दो।।३।।

मुझे बताओ मद्य, मांस, मधु किसने छोड़ा,
खाना-पीना अधिक-अधिक या थोड़ा-थोड़ा।
आई पार्टियाँ, शौक, औषधि या मजबूरी,
या फिर कोई अन्य आड़ से क्या मुख मोड़ा।।४।।

जूते, चप्पल, बेल्ट, पर्स, आदिक-आदि में,
चर्म-त्याग कितनों ने कितना है अपनाया?
फर-टोपी, फर-कोट आदि को पहिन-ओढ़ना,
तजकर कितनों ने जग को सन्मार्ग दिखाया?।।५।।

रेशम कीटों की हिंसा से निर्मित रेशम,
की साड़ी रूमाल आदि कितनों ने छोड़े?।
पाउडर, क्रीम, लिपिस्टक, बिन्दी, साबुन, शैम्पू,
टूथपेस्ट भी आज अहिंसक, फिर क्या रोड़े।।६।।

बिस्कुट, ब्रेड, पेस्ट्री आदिक की आड़ों में,
अण्डा आदिक आज अहिंसक जन खाते हैं।
मानो पानी छान-छानकर पीने वाले,
मदिरा भी अब छान-छान कर पी जाते हैं।।७।।
पंच उदम्बर, बाईस अभक्ष्यों को तजकर के,
कितने हमको आज अहिंसक जन दिखते हैं?।
तनिक सत्य का अवलोकन हम करके देखें,
धर्म-अहिंसा पालन हम कितना करते हैं।।८।।
यथाख्यात चारित्र नहीं, अब इस धरती पर,
महाव्रती निर्दोष नहीं, या दुर्लभ ही हैं।
नहीं हमें निर्दोष आज क्यों गृहस्थ दीखते,
जो अव्रत या अणुव्रत धारी श्रावक भी हैं।।९।।
क्षमा मुझे कर देना है श्री जिनवर स्वामी,
उपगूहन वात्सल्य अगर जो भंग किया है।
स्थितिकरण अंग का पालन हो दृढ़ता से,
इसीलिए संताप हृदय का खोल दिया है।।१०।।
सम्यक् दर्शन अष्टांगों का शुभ पालन हो,
इसीलिए इस कविता का शुभ पाठ किया है।
नहीं आड़ लें, उपगूहन वात्सल्य आदि की,
धर्म अहिंसा में स्थित हो भाव किया है।।११।।
'निर्लिप्त' का आह्वान यही है, सब जैनों से,
छब्बीस सौ वाँ जन्म जयन्ती भाव विचारें।
'अहिंसा-वर्ष' बिताया हमने चाहे जैसा,
बीति ताहि बिसारि, अहिंसक वृत्ति धारें।।
हिंसा-वृत्ति त्यागि,अहिंसक वृत्ति धारें।।
कर हिंसा-परिहार, अहिंसक वृत्ति धारें।।१२।।

-पी.डब्ल्यू. डी. क्वार्टर नं. ५२, समद रोड़, अलीगढ़ (उ.प्र.)

विचारों का प्रभाव

श्री प्रकाशचन्द लोढ़ा

मनुष्य एक विचारशील प्राणी है। वह अपने विचारों के द्वारा ही अपनी क्रिया को मूर्त रूप प्रदान करता है। अतः स्पष्ट है कि आचार शुद्धि के पहले विचार शुद्धि आवश्यक है। कार्य की पवित्रता विचारों की पवित्रता पर आधारित होती है।

जिस क्रिया के साथ पवित्र भावना का संबंध जुड़ जाता है, वह क्रिया भी पवित्र हो जाती है। मन के पवित्र संकल्प आसपास के वातावरण को पवित्र बनाते हैं। तालाब में एक कंकर फेंका जाये तो उसमें लहरें उठती हैं और एक के बाद एक गोल लहरें तट तक पहुँचती हैं। इसी प्रकार हमारे मन के परमाणु भी समाज में लहरें बन कर आगे बढ़ते हैं। यही कारण है कि तीर्थंकर देव के समवसरण में सिंह और बकरी साथ-साथ बैठते थे। बकरी के मन में भय नहीं होता था कि सिंह मुझे खा जायेगा और सिंह के हृदय में यह क्रूर भाव नहीं उठते थे कि मैं बकरी को खा जाऊँ। बकरी के मन में भय नहीं है तो सिंह भी अपनी क्रूरता भूल चुका है। यह एक पवित्र व्यक्ति के पवित्र विचारों का प्रभाव है।

तीर्थंकर देव का समवसरण तो अपने लिये बहुत दूर की वस्तु है। किन्तु यह तो अपने अनुभव की वस्तु है कि जब कभी हम छोटे बच्चे को प्यार से चपत लगा देते हैं, तो चपत खाकर भी वह हँसता रहता है। परन्तु जब कभी क्रोध में आकर उसके कान को छू भी लिया जाय तो वह जोरों से रो उठेगा। क्योंकि पहले हमारे दिल में प्रेम था अबकी बार उसका स्थान क्रोध ने ले लिया है। विचारों के परिवर्तन ने कितना बड़ा परिवर्तन ला दिया है।

यह विचारों का उतार चढ़ाव ही तो था कि प्रसन्नचन्द्र राजर्षि सातवीं नरक के द्वार पर पहुँच रहे थे कि कुछ ही मिनटों के बाद वे स्वर्ग को भी लांघ कर मोक्ष तक जा पहुँचे। विचारों ने मोड़ खाया तो कितने ऊपर उठ गये।

मनुष्य के विचार ऊँचे हैं तो वह ऊपर उठता है। जिसके विचारों का पतन होता है, उस व्यक्ति का पतन होते देर नहीं लगती है।

भरत चक्रवर्ती ने काँच के भवन में केवलज्ञान पाया था। हम भी तो काँच के सामने प्रतिदिन जाते हैं। शरीर की सजावट में कितना समय बीत जाता है, आधा घण्टा तो बालों को सजाने में लग जाता है, फिर केवलज्ञान कितनों को प्राप्त हुआ है? पर हाँ भरत चक्रवर्ती ने काँच के भवन में केवलज्ञान

पाया था और माता मरुदेवी ने हाथी पर बैठे-बैठे केवलज्ञान पाया था। कारण था विचारशुद्धि। विचार शुद्ध होने पर ही तपस्याएँ, आराधना या धर्म-कर्म सफलता प्रदान करते हैं।

दान, शील और तप की साधना श्रेष्ठ मानी जाती है, किन्तु क्या कभी ऐसा हुआ कि अशुभ भाव से दान देकर भी कोई नरक में गया हो? आगम के पन्ने उलटने पर यह ज्ञात होता है कि अशुभभाव से दान देने वाले भी नरक में गये हैं तो तपस्वी साधक की गाड़ी भी उलट गई है। अर्थात् मानव अपनी क्रिया कितनी ही सुन्दर कर रहा है, पर उस क्रिया के पीछे उसके विचार सही नहीं हैं तो वह सुन्दर क्रिया भी उसे नरक के द्वार तक ले जा सकती है।

बहुत से कुत्ते मोटरों में घूमते हैं। उन्हें दूध भी मिलता है और डबलरोटी भी, जो कि बहुत से मनुष्य के बालकों के भाग्य में नहीं होती हैं, फिर भी देह उन्हें वक्र मिली है, इसका हेतु है, पूर्व जीवन में संभवतः उन्होंने गरीबों की सेवा की होगी, अनाथों के आंसू पोंछे होंगे, पर सेवा करते समय विचारों में वक्रता रह गयी होगी। परिणामतः सेवा का प्रतिफल उन्हें मीठे रूप में मिला, पर विचारों की वक्रता ने देह की सरलता छीन ली। कोयल को कंठ की मधुरता मिली है, उसका स्वर मन को मोह लेता है, किन्तु स्वर की मिठास में भावों की वक्रता रही होगी। इसीलिए उसे काली कलूटी देह मिली है।

दूषित विचार जहर के कीटाणु लेकर आता है। वह जिस हृदय में पहुँचता है, उसे ही विषाक्त बनाता है। मिट्टी के तेल की एक बून्द को इत्र की सीसी में छोड़ देने से खुशबू बदबू में बदल जाती है।

विचार पवित्र है तो आचरण भी पवित्र होगा। क्योंकि विचारों की छाया मात्र ही तो आचरण है। अतः सारांश रूप में यही कहना चाहूँगा कि हर प्राणी को सही विचार रखना चाहिये, क्योंकि मन के भावों अर्थात् विचारों से भी कर्मों की निर्जरा होती है। अच्छे विचारों से पाप कर्म नष्ट होकर पुण्य कर्मों का उदय होता है एवं मुक्ति की ओर चरण बढ़ते हैं।

-सुबोध शिक्षा समिति, केन्द्रीय कार्यालय
रामबाग सर्किल, जयपुर

दियासलाई (माचिस) की तूली में चिनगारी या ज्योति है। लेकिन वह जब तक पेटी में बन्द पड़ी है तब तक प्रकाश नहीं कर सकती। जब तूली को निकालकर विधि से रगड़ा जाय तब प्रकाश होगा। इसी तरह शरीर रूपी पेटी के अन्दर चेतन की तूली है। यदि वह किसी सद्पुरुष से रगड़ खा जाय या शास्त्र वचन से उसका सम्पर्क बन जाय तो जल उठेगी, आत्मा में शक्ति का, स्वानुभाव का प्रकाश जगमगा उठेगा।–**आचार्य हस्ती**

घटना कल की

आर. प्रसन्नचन्द चोरड़िया

बात कल सुबह की है! करीब ८.३० बजे होंगे। घर की बालकनी में खड़ा सड़क के आवागमन को देख रहा था। इतने में नजर सामने गई। देखता हूँ कि एक आदमी अपने नाश्ते के लिए हाथों में गर्मागर्म डोसे की प्लेट लेकर आया। हमारे पड़ौस में गरीब, मजदूर लोगों के लिए सस्ते में नाश्ता बनता है। यहाँ काफी लोग आते हैं और नाश्ता करते हैं। वह आदमी भी नाश्ता करने के लिए बैठने ही वाला था कि इतने में एक गाय पास में आकर खड़ी हो गई। उसने हाथ में लिए पानी के लोटे को नीचे रखा और एक डोसा गाय को दे दिया। मैंने सोचा- तीन डोसे में से एक डोसा गाय को देगा बाकी बचे डोसे से वह सुबह का अपना नाश्ता करेगा। उसकी जगह मैं होता तो ऐसा ही करता।

पर यह क्या? उसने तो हद कर दी। दूसरा डोसा भी गौमाता को बड़े प्रेम से खिला दिया। मैं देखता ही रह गया। सोचने लगा। इतने में उसने न मालूम गौमाता की आंखों में कातरता की कौनसी झलक देखी या गौमाता ने मौन भाषा में उससे कौनसी अनकही बात कह दी कि अपना तीसरा डोसा भी गौमाता को अर्पित कर दिया। मैं खड़ा का खड़ा ही रह गया। एक पल के लिये तो गद्‌गद् हो गया।

देखकर ऐसी बातें, फूल मन के खिल जाते हैं।
अचानक ऐसे कई उदाहरण, हमें मिल जाते हैं।।

विचार होने लगा कि अपनी कड़ी मेहनत से, पसीने की कमाई करने वाला मजदूर, दो जून की रोजी-रोटी का इन्तजाम करने वाला रोजगार, दया-करुणा के अर्थ से अनभिज्ञ, ज्ञान-ध्यान, धर्म की बातों से भी अनभिज्ञ इस इन्सान के मन के किस कोने से दया आई होगी, करुणा की ऐसी कौनसी लहर प्रवाहित हुई होगी, मैं निश्चित नहीं कर पाया।

मैं क्या आप भी इस घटना को देखकर, पढ़कर यह निर्णय करने में समय लगायेंगे। मैं अपनी तुलना उससे करने लगा। उसकी जगह हम होते तो यह देखते कि गाय को डोसा खिलाते हुए आसपास कोई देख रहा है या नहीं? अगर कोई परिचित दूर से आते दिखाई देते तो ठहर जाते कि उनके नजदीक आने पर गाय को डोसा खिलाएँ ताकि वे आगे जाकर इस बात का दूसरों से जिक्र करें, सभी को बतायें। हमारे पास देने को कम, कहने को ज्यादा है। लेकिन उस देवदूत ने तो अपना डोसा खिलाया, संतोष प्राप्त किया और चल दिया।

किसी ने सच कहा है कि-

कुछ लोग जेब से गरीब, पर दिल के अमीर होते हैं।
कुल लोग जेब से अमीर पर, दिल के गरीब होते हैं।।

गति मिलेगी, कौनसे लोक में जायेगा, यह तो हमारे ग्रन्थों के ज्ञाता ज्ञानी लोग ही बता सकते हैं। पर वह हमें तो पाठ पढ़ा गया, सिखा गया।

यह समय आप और हम सभी के लिए चिन्तन करने का है। विचार करने योग्य है। क्योंकि-

हमारे पास कहने को ज्यादा, देने को कम है।
बांटने को खुशियाँ कम, देने को ज्यादा गम है।।

जब हम मन में शान्ति धारण कर, चित्त को एक जगह स्थिर कर, इस बात का मन्थन करेंगे तो हम भी चांदी जैसा दिल पाने में सफल हो सकते हैं।

५२- कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चैनई-७९

साधु साध्वी को सुपात्र दान बहराने से पूर्व उनके सम्मान में करने योग्य आचरण

श्री आनन्दराज धीसुलाल तलेसरा

१. घर में पधारते हुए साधु-साध्वी को देखकर अत्यंत हर्षित होना।
२. आसन से नीचे उतरना।
३. जूते-चप्पल आदि पहने हुए हों तो उतारना।
४. उत्तरासंग धारण करना।
५. अगवानी करने के लिए सामने जाना।
६. वन्दना नमस्कार करना।
७. स्वयं के हाथ से विपुल अशनादि का प्रतिलाभ देना।
८. आहार देने से पूर्व, देते समय व देने के बाद प्रसन्नता का भाव रखना।

दान देने की विधि की शुद्धता के साथ निम्नांकित शुद्धियों का भी ध्यान रखना चाहिए-

१. द्रव्य शुद्धि- जो आहार दिया जाए वह निर्दोष और प्रासुक होना चाहिए। वह आहार आधाकर्मी आदि दोषों से दूषित नहीं होना चाहिए।

२. पात्र शुद्धि-जिसको दान दिया जा रहा है वह योग्य होना चाहिए। पंच महाव्रतधारी अनगार को श्रेष्ठ पात्र बताया गया है।

३. दाता की शुद्धि-दान से पहले देते समय तथा देने के पश्चात् दाता का हर्षित होना दाता की शुद्धि है।

इस प्रकार इन तीन शुद्धियों वाला दान महाफलदायी होता है।

-गोरेगांव, मुम्बई (महा.)

सन्तान

श्रीमती शर्मिला जैन खींवसरा

आज मर चुकी संवेदना
इंसान के लिए इंसान की
क्या सुन पायेगा कोई
जानवर की सन्तान की?
अंतस व्याकुल होता नहीं
हृदय है पत्थर, रोता नहीं
पीड़ा हो जिसकी
सहता है वही
गैर का दुःख घर में
यहाँ कभी होता नहीं।
मूक पशु कहते नहीं
मैं और आप सुनते नहीं
होती है उन्हें भी पीड़ा
हम स्वीकार करते नहीं।
टुकड़े-टुकड़े कर खा जाना
पशु की संतान को
आज यही शोभा देता है
सभ्य आर्य सन्तान को
घर की वैदेही (सीता)
पकाती है उसे
और जिन हाथों से नित
संवारती है निज संतान को
उन्हीं हाथों से जिंदा ही
सेक देती है
चूल्हे की आग में
किसी नन्हीं सी जान को।
भला क्या समझेंगे
हम वह संवेदना
जो होती है पशु की संतान को
हम स्वयं ही
निरीह पशु हैं
सौंप देते हैं अपनी ही
अजन्मी कन्या संतान के टुकड़े
किसी नर्सिंग होम के कूड़ेदान को
फिर भी पुण्यशाली
मानते हैं शास्त्र
कहते है महान् इंसान को
सोचती हूँ बदला जाये
ग्रन्थों के इस फरमान को।
इंसान बड़ा नहीं होता
संवेदना बड़ी होती है
पर दुःख की बात है
उसका देहान्त हो चुका है
मेरे आपके हाथों उसका
दाह संस्कार हो चुका है
मैं राख देख के रोती हूँ
पर रोना यह बेकार है
यही दौर है
नया दौर है
और आज मांसाहार ही
आर्य संतान का संस्कार है।

-'अंकुर' एम-५१ ए, आना सागर लिंक रोड़
अजमेर (राज.)

सेवा और साधना के आठ आयाम

श्री दिलीप धींग 'जैन'

समाज में संगठनों की भरमार है। बड़ों, बच्चों, युवाओं, महिलाओं तथा अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रान्तीय, क्षेत्रीय, स्थानीय आदि विभिन्न वर्गों व स्तरों के अनेक संगठन और उप-संगठन हैं। यदि ये संगठन ईमानदारी और निष्ठा से कार्य करें तो समाज का कायाकल्प हो सकता है। परन्तु अधिकतर संगठनों में राजनीति, अहम्-तुष्टि और दिखावा अधिक दिखाई पड़ता है, असली काम कम। किसी भी संगठन के अन्तर्गत करने योग्य कार्यों की एक सुझावात्मक रूपरेखा यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

सन्त-सेवा:—साधु-साध्वी चलते-फिरते तीर्थ हैं । अपने आस-पास विचरणरत तथा नगर में प्रवासरत साधु-साध्वियों के बारे में जानकारी रखने से तथा उनके दर्शन व प्रवचन श्रवण करने से बहुत सारे उद्देश्य पूरे हो जाते हैं। कल्प और मर्यादा के अनुसार सन्तों का सहयोग करने से गृहस्थ अपना दायित्व तो पूरा करता ही है, साथ ही सन्तों को भी उनकी संयम की मर्यादाओं से रूबरू करवाने में निमित्त बन सकता है। सन्त-समागम से संस्कृति व संस्कारों की स्वच्छ सरिता सतत प्रवाहित होती रहती है।

धार्मिक पाठशाला :— हमारी महान् संस्कृति की जड़ें न सिर्फ सूखती जा रही हैं, अपितु उन्हें सींचने के बहाने उनमें विषाक्त-द्रव डाला जा रहा है। बाल-युवा पीढ़ी को धर्म-संस्कृति की सामान्य जानकारी (जनरल नोलेज) भी नहीं है। बुनियाद के कमजोर होने पर भवन की भव्यता का कोई मूल्य नहीं होता है। नई पीढ़ी को धर्म-संस्कारों और उदात्त सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों से अवगत कराने के लिए धर्म-शिक्षा की महती आवश्यकता है। प्रत्येक गाँव, कस्बे, नगर तथा नगर के उप-नगर, मौहल्ले या कॉलोनी में नैतिक-आध्यात्मिक शिक्षा की पाठशालाओं का नियमित संचालन समय की जरूरत भी है और मांग भी। हमारी प्राथमिकताओं में पाठशाला-संचालन को सर्वोपरि स्थान मिलना चाहिए। समय-समय पर संस्कार-शिविरों के आयोजन भी हमारी लक्ष्य-पूर्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अभिभावकों को सभी तरह के पूर्वाग्रह छोड़ इन पाठशालाओं और शिविरों में उनके लाडलों को अवश्य भेजना चाहिए।

स्वाध्याय-ध्यान-सामायिक:— पिछले कुछ वर्षों से धार्मिक-सामाजिक क्षेत्र में छल, प्रपंच और कुत्सित राजनीति की घटनाएँ बढ़ी हैं। इसके मूल कारण हैं- ज्ञान-ध्यान, स्वाध्याय और साधना का अभाव। आवश्यकता है- स्वाध्याय, ध्यान,

सामायिक, प्रतिक्रमण, व्रत-नियम और जप-तप की साधनाएँ-आराधनाएँ घर-घर में हों। सामूहिक आराधनाओं का भी एक अलग आनन्द और प्रभाव होता है। इन छोटे किन्तु महत्त्वपूर्ण प्रयासों से हमारे जीवन और समाज को नित नई दिशाएँ प्राप्त होंगी। आपसी सौहार्द्र बढ़ेगा।

शाकाहार और व्यसन मुक्ति :— शाकाहार के पक्ष में देश-दुनिया में पर्याप्त अनुकूल वातावरण बना है। अहिंसा, स्वास्थ्य , मानवता और पर्यावरण की दृष्टि से शाकाहार की उपादेयता असंदिग्ध है। व्यसनमुक्ति की शुरुआत की अवहेलना से भी व्यक्ति व्यसनों की अन्धी खाई में गिर जाता है। मांसाहार और मदिरापान के अतिरिक्त पर-स्त्री गमन, वेश्यागमन, शिकार, जुआ और चोरी, इन सांत बुराइयों को जैनाचार्यों ने व्यसनों के अन्तर्गत परिगणित किया है। वर्तमान में धूम्रपान, गुटखा, नशीले पदार्थों का सेवन जैसे अनेक व्यसन चल पड़े हैं, जो शरीर और समाज के लिए घातक हैं। अशालीनता बढ़ाने वाली फैशनवृत्ति भी व्यसन की भाँति छोड़ने योग्य है। हमें शाकाहार, सदाचार और व्यसनमुक्ति के कार्य को आन्दोलन और अभियान की तरह आगे बढ़ाना है।

जीव-दया :— संसार में मनुष्येतर प्राणियों के लिए सोचने वाले लोग अत्यन्त थोड़े हैं। जैन धर्म ने अहिंसा की सर्वआयामी और गहनतम व्याख्याएँ की हैं तथा अपने इस सिद्धान्त को प्राणिमात्र तक विस्तारित किया है। पारिस्थितिकी-सन्तुलन और जैविक विविधता के नाम पर आधुनिक विज्ञान भी सभी जीव-जन्तुओं और उनकी विभिन्न प्रजातियों की रक्षा की बात करने लगा है। शाकाहार से जीव-दया का उद्देश्य पूरा होता है, परन्तु जीव-दया में उससे भी आगे कार्य करने का अवकाश रहता है। अहिंसा-दिवसों का पालन करवाना, बूचड़खानों व अवैध बूचड़खानों के संचालन को रुकवाना, कत्लखानों में ले जाये जाते पशुओं को रुकवाना-छुड़वाना, पशु-बलि की कुप्रथा समाप्त करवाना, पशु-पक्षियों व मवेशियों को दाना, चारा, पानी देने की व्यवस्थाएँ करवाना, पशु-पक्षियों की चिकित्सार्थ शिविर लगवाना, सीमित जल-प्रयोग करना-करवाना, अहिंसक वस्तुओं का उपयोग करना-करवाना आदि अनेक कार्य जीव-दया और प्राणि-रक्षा के अन्तर्गत सम्मिलित किये जा सकते हैं। अकाल और यांत्रिक-कत्लखानों के दौर में जीव दया, गो-सेवा और पशु-पक्षियों की रक्षा का दायित्व बढ़ जाता है। जीव-दया के ऐसे कार्यों को नियोजित ढंग से करने पर अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

मानव-सेवा:—सेवा-कार्यों में जैन समाज हमेशा से अग्रणी रहता आया है। इस समाज द्वारा पोषित और अनुदानित लाखों छोटी-बड़ी पारमार्थिक संस्थाएँ

और प्रकल्प देशभर में चल रहे हैं। भूकम्प, तूफान, बाढ़, अकाल और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ितों तथा युद्धवीर शहीदों के परिजनों के लिए जैनों ने दिल खोलकर दिया है। अकाल और जल-संकट से पैदा हुई स्थितियों का भयावह प्रभाव गांवों और सुदूरवर्ती गांवों में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। विभीषिका के समय में हमारे कार्यों और कार्यक्रमों का लाभ अन्तिम जरूरतमन्द व्यक्ति तक पहुँचना चाहिये। इसके अलावा रोग-जाँच,निदान, चिकित्सा शिविर, अहिंसक-चिकित्सा पद्धतियों के माध्यम से रोग-निवारण शिविर आदि माध्यमों से मानव-सेवा के कार्य किये जा सकते हैं। नेत्र-दान-संकल्प तथा आवश्यकता पड़ने पर रक्त-दान जैसे मानवोचित कर्त्तव्य-निर्वहन में भी हम पीछे नहीं रहें। किसी भी सेवा-कार्य के प्रभाव और परिणाम की समीक्षा होनी चाहिये।

साधर्मी-वात्सल्य :— सम्पन्न माने जाने वाले जैन समाज में भी अभावों में जीने वालों की कमी नहीं है। अभावग्रस्त साधर्मी बन्धुओं, माताओं और बहिनों की सहायता करना हमारा परम कर्त्तव्य होना चाहिये। यह सहयोग शिक्षा, चिकित्सा, जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं तथा बेहतर जीवन के लिए किसी भी प्रकार से हो सकता है। साधर्मी-सहयोग का कार्य बिना किसी विज्ञापन, प्रचार अथवा समारोह के होना चाहिए, जिससे हमारे भाई-बहिनों का आत्म-सम्मान/ स्वाभिमान किंचित् भी खण्डित नहीं हो। समाज के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों तथा किसी क्षेत्र विशेष में उल्लेखनीय कार्य करने वालों का यथेष्ट मूल्यांकन और सम्मान करने से संबंधित व्यक्ति को प्रोत्साहन और दूसरों को प्रेरणा मिलती है। प्रतिभा सम्मान का कार्य समारोहपूर्वक होता ही है।

कुरीति-त्याग :— प्रगतिशील समाज वही है, जिसमें रूढ़ियों, कुरीतियों और गलत परम्पराओं से खिलाफत करने की ताकत हो। हम एक बहु-रस्मी समाज में जी रहे हैं। रीति-रिवाजों की अधिकता से रचनात्मकता तो कम होती ही है, अनौपचारिक प्रेमभाव व सहजता भी खण्डित होती है। परम्परा नई हो या पुरानी, जो अर्थपूर्ण, प्रासंगिक व तर्कसंगत हो उसे ही स्वीकार करना चाहिये। दहेज, मृत्युभोज, मौसारे जैसी अनेक सामाजिक परम्पराओं तथा इन परम्पराओं के पालन में दिखावे और टीका-टिप्पणियों की मनोवृत्ति से समाज की मूल सामाजिक-चेतना मर जाती है। खर्चीली शादियाँ, सामूहिक रात्रि-भोज, सामूहिक भोज में अनाप-शनाप आइटम जैसी बढ़ती विकृतियों के विरुद्ध कुछ कारगर उपाय करने की जरूरत है। आजकल साधु-साध्वी भी किसी बहाने खर्चीले और प्रदर्शनकारी आयोजन खूब करवाने लगे हैं। समाज इन्हें हतोत्साहित करे। हर जगह सादगी, मितव्ययता व त्याग को महत्त्व दे।

हमारे पास धन शक्ति भी पर्याप्त है और जनशक्ति भी। बौद्धिक और

नैतिक बल भी खूब है। अभाव है- नियोजन, प्रबन्धन, समन्वय और सहकार का। जन शक्ति है, परन्तु कर्मठ कार्यकर्ताओं का टोटा है। हम आत्म- केन्द्रित नहीं बनें, समाज व संस्कृति के लिए जीना सीखें, दूसरों के लिए कुछ त्याग करें। ऊपर सुझाए गये कार्य व कार्यक्रम अन्तिम नहीं हैं, मार्गदर्शक हैं।

-बम्बोरा-३१३७०६, जिला-उदयपुर (राज.)

सम्यक् बनो मन

श्री अशोक बोहरा

परिग्रह-अपरिग्रह की परिभाषा में मत पड़ो मन
सहज बनो, सरल बनो
सौम्य बनो, सम्यक् बनो मन
परिग्रह-अपरिग्रह के वाक्जाल में भरमाता है मन
ग्रन्थियाँ सुलझा सकती है बुद्धि
द्वन्द्व में यह भटकता, अटकता व हठ करता है मन
स्थिर कर सकता है सम्यक् विवेक और आत्मानुशासन
परिग्रह-अपरिग्रह की परिभाषा में मत पड़ो मन
इच्छाओं को निरंकुश मत उड़ने दो
मन के घोड़े हेतु नीलाकाश भी कम
असीम अपार कैलाश पर्वत भी बौना है
आत्म समीक्षा की पतंग और सुचिन्तन की डोर ही बहुत है मन
परिग्रह-अपरिग्रह की परिभाषा में मत पड़ो मन
तन के वास्ते समयोन्मुख वसन
उतना ही चाहो/लो जितना तुम
अदीन/अकिंचन बन पहन सको।
मनोजित बन सहन कर सको
परिग्रह-अपरिग्रह की परिभाषा में मत पड़ो मन
वस्तुओं को उतना ही भोगो जो रोग न बन जाय
ओढ़ा हुआ मन भटकती हुई आत्मा सा न लगे
यदि मनाकाश में चतु:कषाय के कलुषित भाव हैं
तो दोषारोप होगा सीमा लंघन होगा
आत्म निजाम स्खलित होगा मन
परिग्रह-अपरिग्रह की परिभाषा में मत पड़ो मन
सहज बनो, सरल बनो
सौम्य बनो, सम्यक् बनो मन!

-दिव्यहृदय, १०, प्रताप नगर, कोटा (राज.)

सम्यग्दर्शन

डॉ. बिमला भण्डारी

जैनागमों में सम्यक् ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र को मोक्षमार्ग के रूप में स्वीकार किया गया है। अतः इसे त्रिविध योग कहते हैं। त्रिविध साधना-मार्ग मात्र जैनागमों में ही नहीं, अपितु बौद्धागमों के साथ हिन्दू धर्म की विभिन्न विधाओं ने भी स्वीकारा है। बौद्धागमों में उसे प्रज्ञा, शील एवं समाधि की संज्ञा दी गई है, तो हिन्दू धर्म की विभिन्न साधना पद्धतियों में ज्ञान, कर्म एवं भक्ति के रूप में स्वीकारा है। साधना त्रय मनोवैज्ञानिक एवं नैतिक दृष्टि से सार्वभौम है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मानवीय चेतना के तीन पक्ष माने गये हैं- ज्ञान, भाव और संकल्प। नैतिक जीवन का साध्य चेतना के इन तीनों पक्षों का विकास माना गया है। अतः यह आवश्यक ही था कि इन तीनों पक्षों के विकास के लिए त्रिविध साधना पथ का विधान किया जाय। चेतना के भावात्मक पक्ष को सम्यक् बनाने के लिए एवं उसके सही विकास के लिए सम्यग्दर्शन या श्रद्धा की साधना का विधान किया गया। इसी प्रकार ज्ञानात्मक पक्ष के लिए ज्ञान का और संकल्प पक्ष के लिए सम्यक् चारित्र का विधान है। इस प्रकार हम देखते हैं कि त्रिविध साधनापक्ष के विधान के पीछे एक मनोवैज्ञानिक दृष्टि रही है।

जैनागमों के अनुसार सम्यग्दर्शन ही ज्ञान एवं चारित्र को सम्यक् रूप प्रदान करता है। सम्यग्दृष्टि, तत्त्वरुचि, तत्त्वश्रद्धा, विश्वास, प्रतीति, रुचि इसके अनेक पर्याय हैं। यह तर्कजन्य विचारणा का फल न होकर अपरोक्ष बोध है। सम्यक् दर्शन सामान्यतः सात तत्त्वों का या विशेष रूप से आत्म-अनात्म का यथार्थ बोध है। यह आत्मस्वरूप की ओर उन्मुखता है। सम्यक् दर्शन देव-गुरु-शास्त्र के प्रति श्रद्धा है। यह व्यावहारिक जीवन में शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्तिकता इन्हीं पाँच रूपों में अभिव्यक्त होता है। शम, क्रोधादि कषायों को शान्त करता है तो संवेग मोक्षप्राप्ति की तीव्र अभिलाषा है। निर्वेद भोगों के प्रति अनासक्ति पैदा करता है, तो अनुकम्पा समस्त जीवों के प्रति मैत्री भाव।

सम्यक् दर्शन का कुछ-कुछ साम्य पातंजल योग दर्शन के ईश्वर प्रणिधान से है। किन्तु पातंजल योग का ईश्वर साधक के विघ्नों को दूर करता है, जबकि जैन योग में स्वीकृत अरिहन्त या गुरु मात्र प्रेरणा करते हैं। जैन योग में ईश्वरार्पण की अवधारणा न होने पर भी सम्यक्दर्शनजनित निष्काम कर्म की अवधारणा उपलब्ध है, क्योंकि यह माना गया है कि सम्यग्दर्शनयुक्त पुरुषार्थ

बन्धन का कारण नहीं है। पातंजल योग की विवेकख्याति से सम्यग्दर्शन में एक साम्य यह है कि दोनों ही आत्मानात्म भेदरूप हैं।

सम्यक् दर्शन प्राप्त करने के लिए लोकमुदा, देवमुदा एवं पाखंडिमुदा से बचना चाहिए। ये तीन अंधविश्वास हैं। कुछ नदियों में स्नान करने से पुण्य मिलता है, पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाने से पुण्य मिलता है, इत्यादि लोकमुदा है। देवी-देवताओं की पूजा करना जिससे बीमारी दूर होती है, मुकदमें में विजय होती है, आदि देवमुदा है। पाखण्डियों को संत, साधु, ऋषि-मुनि मानना ही पाखण्डिमुदा है। इन तीनों अन्धविश्वासों से बचने पर ही साधक में सम्यकूत्व की योग्यता आती है।

सम्यग्दर्शन के आठ आचार

सम्यग्दर्शन साधना के आठ अंग हैं-

१. **निश्शंकता**– जिनप्रणीत तत्त्वदर्शन में शंका न करना, उसे सत्य एवं यथार्थ मानना।

२. **निष्कांक्षता**–साधनात्मक जीवन में भौतिक वैभव, ऐहिक तथा पारलौकिक सुख को लक्ष्य बनाना जैन दर्शन के अनुसार आकांक्षा है। ऐहिक एवं पारलौकिक कामना जैन विचारणा को मान्य नहीं।

३. **निर्विचिकित्सा**– इसके दो अर्थ हैं-पहला अर्थ क्रिया या साधना का फल मिलेगा या नहीं, मेरी साधना व्यर्थ तो नहीं जायेगी, ऐसी आशंका ही निर्विचिकित्सा है। दूसरा, कुछ जैनाचार्यों के अनुसार तपस्वी एवं मुनियों के दुर्बल, जर्जर शरीर अथवा मलिन वेशभूषा को देखकर मन में ग्लानि निर्विचिकित्सा है।

४. **अमूढ़ दृष्टि**– मूढता अज्ञान है। हेय एवं उपादेय, योग्य एवं अयोग्य के मध्य भेद न करना ही मूढता है। मूढताएँ तीन प्रकार की है- देव मूढता, लोक मूढता तथा समय मूढता।

५. **उपबृंहण**– वृद्धि या पोषण करना। आध्यात्मिक गुणों का विकास उपबृंहण है।

६. **स्थिरीकरण**– भौतिक प्रलोभनों एवं कठिनाइयों में साधना से च्युत न होना ही स्थिरीकरण है।

७. **वात्सल्य**–आचार्य समन्तभद्र कहते हैं, "स्वधर्मियों के प्रति निष्कपट भाव से प्रीति करना उनकी यथोचित सेवा-सुश्रूषा करना वात्सल्य है।"

८. **प्रभावना**– साधना के क्षेत्र में स्व-पर के कल्याण की भावना। पुष्प अपनी सौरभ से स्वयं तो सुवासित होता ही है, साथ ही जगत् को भी सुरभित

करता है।

सम्यग्दर्शन की साधना के छह स्थान

बौद्ध साधना के जैसे चार आर्य सत्य हैं, वैसे ही जैन साधना के भी छह स्थान हैं-

१. आत्मा है,
२. आत्मा नित्य है,
३. आत्मा अपने कर्मों की कर्त्ता है,
४. आत्मा अपने कर्मों के फल को भोगती है,
५. आत्मा मुक्ति प्राप्त कर सकती है, और
६. मुक्ति का उपाय (मार्ग) है।

इसी प्रकार बौद्ध परम्परा में भी सम्यग्दर्शन के समानार्थी सम्यक्दृष्टि, सम्यक् समाधि, श्रद्धा, चित्र आदि शब्द मिलते हैं। बुद्ध का भी त्रिविध साधना मार्ग है, प्रज्ञा, शील एवं समाधि। समाधि, चित्र एवं श्रद्धा का प्रयोग सामान्यतः समानार्थी है।

जिस प्रकार जैन-परम्परा में सम्यग्दर्शन तत्त्व-श्रद्धा है, उसी प्रकार बौद्ध दर्शन में भी सम्यग्दृष्टि चार आर्य सत्यों की सम्यक् अवधारणा एवं उनके प्रति श्रद्धा है।

इसी प्रकार गीता में भी श्रद्धा का माहात्म्य है-श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः। जैन परम्परा में संशय दोष है, उसी प्रकार गीता में संशय को दोष माना गया है। जिस प्रकार जैन-परम्परा में फलाकांक्षा सम्यक् दर्शन का दोष माना गया है, उसी प्रकार गीता में भी मान्य है। गीता का सम्पूर्ण संदेश ही निष्काम कर्म है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि जैन दर्शन का सम्यक् दर्शन मानव जाति के उत्थान का संदेश है। सम्यक् दर्शन आध्यात्मिक साधना के भव्य भवन में प्रवेश हेतु प्रवेश द्वार है। जैन आचार-व्यवस्था का मूल आधार है, जैन साधना मार्ग की आधारशिला है। सभी जैनाचार्यों ने एकमत से इस बात को स्वीकार किया है कि सम्यक् दर्शन समस्त लोक का भूषण है।

-एसोशिएट प्रोफेसर, दर्शन विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

दुर्गुणों और अवनति से बचने के लिए विवेकपूर्ण प्रवृत्ति करना आवश्यक है। विवेकपूर्ण प्रवृत्ति से आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। - *आचार्य हस्ती*

जिनवाणी पर अभिमत

पिछले छह माह से अमेरिका में थे हम दोनों। कुछ भाषण आदि का कार्यक्रम था। अभी हाल वापस आये हैं। 'जिनवाणी' का आगम विशेषांक देखकर मन प्रसन्न हो उठा। बहुत अच्छे आलेख आपने एकत्रित किए हैं। हार्दिक बधाइयाँ स्वीकारें। इसी तरह से हर विद्या पर अंक आना चाहिए।

दिनांक 03.4.03 *डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर'*

जिनवाणी मासिक पत्रिका का फरवरी २००३ का अंक पढ़ने में बड़ा आनन्द आया। ऋषि परम्परा पर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा फरमाया गया प्रवचन पढ़ते हुए अच्छी जानकारी हुई। आस्था में मजबूती हुई। यह वीर प्रभु का शासन २१ हजार वर्ष तक सुन्दर गति से चलेगा ही।

दिनांक 11.3.03 *जयन्तिलाल कानूंगा जैन, सिवाना*

जिनवाणी मासिक मार्च २००३ का अंक पढ़ा। 'गुरु के प्रति समर्पण भाव' प्रवचन में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. नें अपनी वाणी के माध्यम से बताया कि बिना समर्पण भाव के कल्याण संभव नहीं है। 'स्थानकवासी परम्परा की मान्यताएँ' लेख में सौ. मंगलाबाई चोरड़िया के विचार पढ़े। इस लेख के माध्यम से स्थानकवासी परम्परा में बढ़ती अन्ध श्रद्धा, मूर्तिपूजा, सन्त-मुनिराजों के फोटों पर करारी चोट कर दर्पण का काम किया है। श्री उदयमुनि जी म.सा. के 'देव तो मेरे अरिहन्त हैं' लेख से ज्ञात हुआ कि उपासना शुद्धि तो हमसे कोसों दूर है। कुदेव, कुगुरुओं का बोलबाला बढ़ रहा है। 'वन्दन है अभिनन्दन है' सम्पादकीय में वाणी के जादूगर आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के संबंध में, गुरु के प्रति उनकी श्रद्धा, निष्ठा, समर्पण आदि पर प्रकाश डाला गया है। भक्तों को आचार्य श्री ने किस प्रकार प्रेरित किया, यह भी बताया गया है। जिनवाणी के माध्यम से जन-जन तक आपके विचार पहुँच रहे हैं। वीतरागदर्शन पर आपका महान् उपकार है। वीतराग देव से प्रार्थना है कि जिनवाणी पत्रिका इस तरह जागृतिकारक लेख प्रकाशित करती रहे, वीतराग दर्शन के माध्यम से आगे बढ़ती रहे।

दिनांक २९.3.03 *कन्हैयालाल बोरदिया,संयोजक-नानेश ज्ञान भंडार, रायपुर, जिला- भीलवाड़ा (राज.)*

जिनवाणी मासिक पत्रिका कई वर्षों से लोकप्रिय पत्रिका बन गई हैं। जिनवाणी पत्रिका में प्रवचन, लेख व भजन कई हृदय स्पर्शी आते हैं।

-अशोक कुमार जैन, रामनगर, सोड़ला, जयपुर

प्रतिमाह जिनवाणी बराबर प्राप्त हो रही है। दिलचस्पी के साथ पढ़ता हूँ। जब तक पूरी नहीं पढ़ लेता चैन नहीं पड़ती है। इससे बहुत सी समस्याएँ हल हो जाती है, ज्ञान भी प्राप्त होता है। पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. का चातुर्मास था तब ही मैंने गुरुदेव से ही गुरु आमना ले ली थी। पूज्य श्री गुरुदेव के प्रति मेरी पूरी श्रद्धा व लगाव रहा है। अब तो पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र

जी म.सा. के प्रति पूरी श्रद्धा रहती है। पूज्य श्री आचार्यदेव के प्रवचन जिनवाणी में बराबर आते हैं उन्हें मैं बड़ी श्रद्धा के साथ पढ़ता हूँ। बार-बार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती। ऐसा मालूम होता है कि गुरुदेव के प्रवचन को पढ़ नहीं, सुन रहा हूँ। मेरी अवस्था क़रीब ८२ साल की हो गई है। मैं चौरासी लाख जीवयोनि व मानव मात्र से क्षमायाचना करता हूँ। मेरे को सब क्षमा करें, मैं सबको क्षमा करता हूँ, पता नहीं किस वक्त चला चली का समय आ जाय।

दिनांक २९.३.०३ *बुद्धराज कोचरी, मेड़ता सिटी*

जिनवाणी का हर सम्पादकीय लेख आपके व्यापक आगम ज्ञान, गहरी सूझबूझ तथा गंभीर चिंतन का द्योतक है अधिकांशतः आध्यात्मिक ज्ञानवर्द्धक होने के कारण मैं इसे प्रतिमाह आद्योपान्त पढ़ता हूँ तथा मेरे पारिवारिक सदस्य प्रतिमाह रुचि सहित पढ़ते हैं। इस पत्रिका का स्तर बढ़ाने में आपका परिश्रम अभिनन्दनीय है।जिनवाणी की निरन्तर बढ़ती संख्या पत्रिका की लोकप्रियता में वृद्धि का प्रतीक है।

दिनांक ०१.४.०३ *जवरीमल छाजेड़, जोधपुर*

आओ पर्यावरण सुधारें

विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्रसागर प्रचंडिया

मैले तन–मैले मन सारे,
मैले वातावरण हमारे।
आखिर कैसे उजियाले हों, पूछूँ किससे, किसे पुकारें,
आओ पर्यावरण सुधारें।।1।।

सुघर हमारा घर–बाहर हो,
त्रेता हो या फिर द्वापर हो।
धनुष और बंशी संग लाये, राम और घनश्याम पधारें,
आओ पर्यावरण सुधारें।।2।।

खान–पान हो शाकाहारी,
कभी न कोई हो लाचारी।
लाचारों की हरें पीर सब, जीते सदा, कभी नहीं हारें,
आओ पर्यावरण सुधारें।।3।।

कोई हरे वृक्ष नहीं काटें,
नहीं निरीह को कोई डांटे।
जियें सभी निज जीवन पूरा, नहीं किसी का काम बिगाड़ें,
आओ पर्यावरण सुधारें।।4।।

नित्य लतायें जीभर हरषें,
बन–उपवन लहराये सरसें।
सारा वातावरण मधुर हो, प्राणदायिनी बहें बयारें,
आओ पर्यावरण सुधारें।।5।।

-'मंगल कलश' ३९४, सर्वोदय नगर, आगरा रोड़ अलीगढ़

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

निर्जरा तत्त्व—*कन्हैयालाल लोढ़ा* ***प्रकाशक***— *प्राकृत भारती अकादमी, 13—ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर—302017* ***पृष्ठ*** *22+137,* ***मूल्य*** *50 रुपये, सन् 2002*

आत्मप्रदेशों से कर्म-पुद्गल का पृथक् होना ही निर्जरा है। जब समस्त कर्मपुद्गल आत्मप्रदेशों से पृथक् हो जाते हैं अर्थात् कर्मों का क्षय हो जाता है तो मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। कर्मों की निर्जरा दो प्रकार से होती है। एक तो कर्म स्वयं उदय में आकर निर्जरित हो जाते हैं, जिसे अकाम निर्जरा कहा जाता है तथा दूसरी सकाम निर्जरा है, जिसमें तपाराधनपूर्वक कर्मों की निर्जरा की जाती है। मोक्षोपाय की दृष्टि से सकाम निर्जरा या अविपाक निर्जरा ही उपयोगी है। जैन दर्शन में निर्जरा तत्त्व के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बांधे गए सब कर्मों को उसी रूप में भोगना आवश्यक नहीं होता है, द्वादशविध तप के आराधन द्वारा कर्मों की स्थिति एवं रस की तीव्रता को कम करके मात्र प्रदेशोदय के रूप में कर्म का वेदन कर कर्म-पुद्गलों को शीघ्रता से निर्जरित किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक में जैन आगम एवं कर्मसिद्धान्त के मर्मज्ञ मनीषी विद्वान् श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा ने निर्जरा तत्त्व को परिभाषित करते हुए 'तवसा धुणइ पुराणपावगं' आदि आगम-वाक्यों के आधार पर स्पष्ट किया है कि जैनदर्शन में पापकर्मों की ही निर्जरा अभीष्ट है, पुण्य कर्मों की नहीं। पुस्तक में कुल १७ अध्याय हैं। इन अध्यायों में निर्जरा के स्वरूप की चर्चा करने के साथ तप-साधना का महत्त्व उजागर करते हुए तप के भेदों का कर्म-निर्जरा के परिप्रेक्ष्य में सूक्ष्म विवेचन किया गया है। लेखक का कथन है कि शुभ एवं शुद्ध भाव से कर्म क्षय होते हैं। सम्यक्त्व, देशविरति, सर्वविरति आदि ग्यारह गुणश्रेणियों के स्थान हैं, जिनमें क्रमशः असंख्यातगुणी असंख्यातगुणी निर्जरा होती है। उपवास, विनय, वैयावृत्त्य, स्वाध्याय, ध्यान एवं तप की पृथक् अध्यायों मे विस्तृत चर्चा की गई है। स्वाध्याय पर ३ एवं ध्यान पर ६ अध्यायों में प्रकाश डाला गया है। लेखक श्वेताम्बर एवं दिगम्बर आगमों के अभ्यासी होने के साथ ध्यान साधक एवं मौलिक चिन्तक भी हैं, जिसका बोध पाठक को सहज ही प्राप्त हो सकता है। लेखक ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि दया, दान, सेवा, परोपकार आदि समस्त सद्प्रवृत्तियाँ गुण रूप होने से शुभ होती हैं, अतः कर्मक्षय में ही हेतु हैं, बन्ध में नहीं। इसके पूर्व लोढ़ा साहब की प्राकृत भारती अकादमी से ही प्रकाशित 'पुण्य-पाप तत्त्व' एवं 'आस्रव तत्त्व' पुस्तकें भी चर्चित रही हैं।

समाचार-संकलन

आचार्यप्रवर का चातुर्मास इचलकरंजी में

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने रत्नसंघ के संत-सतियों के निम्नांकित चातुर्मास साधु मर्यादा के अनुसार स्वीकृत किए हैं-

इचलकरंजी- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा

अहमदाबाद- व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा

चौथ का बरवाड़ा- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा

कुस्तला- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा

आचार्यप्रवर के विचरण से महाराष्ट्र के ग्राम- नगरों में अपूर्व धर्मप्रभावना

- **परम श्रद्धेय आगममर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,** महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ महाराष्ट्र प्रान्त की गौरवशाली पुण्यभूमि में ग्रामानुग्राम विचरण कर अपनी पावन चरणरज के स्पर्शन से उसे धन्य-धन्य बनाते हुए सम्पर्क में आने वाले और सेवा में उपस्थित होकर पुनीत दर्शनलाभ करने वाले जैन एवं जैनेतर भव्यजनों को अपने प्रभावी प्रवचनों से निरन्तर लाभान्वित कर रहे हैं। आपके हितकारी उद्बोधन एवं पियूषवर्षिणी गंभीरगिरा से जिनवाणी का रसास्वादन करते हुए जन-जन आह्लादित है। आचार्यप्रवर के प्रबल पुरुषार्थ एवं अथक परिश्रम से जन-जीवन धर्म से जुड़ रहा है। कई बन्धु-भगिनी आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार कर रहे हैं तथा सामायिक-स्वाध्याय को अपनाकर व कुव्यसनों का त्याग कर आत्मोत्थान की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। महाराष्ट्र प्रदेश की महानगरी मुम्बई की उपनगरी से २६ मार्च को विहार कर आप नाला सुपारा, कामण, खारबाप में धर्म की प्रभावना करते हुए ३१ मार्च को भिवण्डी पधारे। २ अप्रेल को कल्याण के लिए विहार करते हुए गांधी चौक बाजार, पद्मावती कॉलोनी, जैन सोसायटी आदि छोटे-बड़े स्थानों को चरण स्पर्शन द्वारा पावन किया। वहाँ से डोम्बीवली (वेस्ट) पधारे, जहाँ सुश्रावक श्री

रतनलाल जी सिसोदिया एवं डॉ. दिलीप जी मुणोत ने गुरु भगवन्त के चरणों में उपस्थित होकर सेवा का लाभ लिया। वहाँ से डोम्बीवली (ईस्ट) पधारे जहाँ बालकेश्वर से श्री मंगलप्रभात जी लोढ़ा एम.एल.ए. ने दर्शन कर धर्मलाभ लिया। सुश्रावक श्री रूपराजजी बम्ब के नेतृत्व में इचलकरंजी का श्रीसंघ परमाराध्य आचार्य भगवन्त के चातुर्मासार्थ विनति लेकर उपस्थित हुआ। वहाँ से गुणविहार धाम में रात्रि विश्राम कर कलंबोली पधारे, जहाँ चौथ का बरवाड़ा श्रीसंघ की आग्रहपूर्ण भावभरी विनति पर व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की और कुस्तला के श्रीसंघ की विनति पर महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की। ६ अप्रेल को पनबेल पधारे जहाँ श्री माणकचन्द जी मुणोत 'रियाँ वाले' एवं श्री कांतिलाल जी पन्नालाल जी बांठिया ने गुरु भगवन्त की सेवा में पधारकर सेवा का लाभ लिया। वहाँ पर ही व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ३ राजस्थान से उग्र विहार करते हुए महाराष्ट्र प्रान्त की धरती पर प्रथम बार गुरुदर्शन का सुयोग प्राप्त कर प्रमुदित हुए। पनबेल बड़ा क्षेत्र होने से एवं धर्मप्रभावना के निमित्त से आचार्यप्रवर ८ अप्रेल तक विराजे। वहाँ से मंगल विहार कर विला कलेक्शन, रायगढ़ पेट्रोल पम्प, चौक, पद्मावती पेट्रोल पम्प होते हुए ११ अप्रेल को खोपोली पधारे। यहाँ से खंडाला के लिये आपका विहार हुआ। यह साढ़े आठ किलोमीटर का सम्पूर्ण मार्ग घाट युक्त है। घाट की दुरूह चढ़ाई के दौरान परमाराध्य आचार्यभगवन्त का रक्तचाप न्यून हो जाने से कतिपय घण्टे यहाँ विश्राम किया तथा स्वविवेक एवं अनुभव आधारित श्रमणोचित औषधोपचार लेकर प्रबल पुरुषार्थ एवं आत्मबल के धनी परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त यहाँ से सायं ५ बजे साढ़े चार किलोमीटर की चढ़ाई प्रारम्भ कर सूर्यास्त के पूर्व खंडाला पधार गये। वहाँ पर सतारा का श्रीसंघ पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ। १३ अप्रेल को प्रातः राजाबाबू कॉलोनी, ओल्ड खंडाला रोड़ होते हुए लोनावला के जैन स्थानक भवन पधारे। वहाँ श्री मनसुखलाल जी गुगलिया ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर गुरुचरणों में श्रद्धाभक्ति के सुमन समर्पित किए। श्री माणकचन्द जी टाटिया, श्री सुमतिलाल जी चोरड़िया, श्री सुभाषचन्द जी गांधी ने लोनावला प्रवास के दौरान संतों की सेवा का अपूर्व लाभ लिया। धुलिया से गुरुभक्त श्रावक श्री कांतिलाल जी चोरड़िया ने सपरिवार उपस्थित होकर धर्मलाभ लिया। विजयनगर से उत्कृष्ट श्रद्धावान श्रावक श्री प्रकाशचन्द जी सांड, श्री अमीचन्द जी सांड आदि सुश्रावक दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

महावीर जयन्ती का पर्व लोनावला में मनाया गया। यहाँ प्रियदर्शिनी संकुल में स्थानकवासी, तेरापंथी, मंदिरमार्गी आदि सभी परम्पराओं के अनुयायी श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति में तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि

जी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. एवं पूज्य आचार्य भगवन्त ने भगवान महावीर का जीवन दर्शन वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हुए तदनुरूप चिन्तन शैली एवं जीवन शैली बनाने पर बल दिया। प्रवचन सभा में वहाँ विराजित मन्दिरमार्गी महासतियाँ जी भी उपस्थित थे। इसी दिन बीजापुर का श्रीसंघ अध्यक्ष श्री नेमीचन्द जी लुणवाल के नेतृत्व में चातुर्मास की विनति लेकर सेवा में उपस्थित हुआ। १३ अप्रेल से १६ अप्रेल तक पूज्य आचार्यप्रवर ने लोनावला में धर्मप्रभावना करते हुए विराजने की कृपा की। यहाँ पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री ईश्वरलाल जी ललवानी, जलगांव एवं शासन सेवा समिति के सदस्य श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने गुरु दर्शन, स्वास्थ्य-पृच्छा एवं सेवा का लाभ लिया। १७ अप्रेल को प्रातः विहार कर आपश्री कारला पधारे जहाँ श्री जैन रत्न युवक परिषद् के जलगांव शाखा के अध्यक्ष श्री मनीष जी ललवानी ने दर्शन लाभ लिया। १८ अप्रेल को कामशेट पधारे। यहाँ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना एवं श्री बंशीलाल जी बोथरा, जलगांव ने गुरु दर्शन एवं स्वास्थ्य-पृच्छा के साथ सेवा का लाभ लिया। वहाँ से बड़गांव पधारने पर दीक्षा समिति के संयोजक श्री अजितराज जी बिरानी ने सेवा का लाभ लिया। यहाँ से तलेगांव होते हुए देहू रोड़ पधारे। श्री आत्माराम जी हरिराम जी अग्रवाल (पंजाबी) ने अटूट श्रद्धा भक्ति का परिचय देते हुए सेवा का अनूठा लाभ लिया। आपश्री २२ अप्रेल को आकुर्डी, २३ अप्रेल को चिंचवड़ स्टेशन पधारे एवं सिद्धि विनायक धाम मंदिर में विराजे। वहाँ पर छः दिन पूर्व संथारा ग्रहण की हुई सौ. इचरज देवी जी धर्मपत्नी श्री शंकरलाल जी बागमार को मरणसुधार हेतु मंगल पाठ एवं आलोचना पाठ सुनाया तथा उपयोगी भोलावण दी। यहाँ पर श्री संजय जी मुथा एवं परिवार ने सेवा का लाभ लिया। २४ अप्रेल को मंगल विहार कर चिंचवड़ गांव पधारे। जहाँ से ३० अप्रेल को शिवाजी नगर के साधना सदन होते हुए १ मई को पुणे शहर के नानापेठ में मंगल प्रवेश किया। पुणे में अक्षय तृतीया, वैशाख शुक्ला अष्टमी (आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्य तिथि) और १२ मई को ४ दीक्षाओं का आयोजन है।

- **परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.,** सेवाभावी श्री मंगलमुनि जी म.सा., विद्याभिलाषी श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ठाणा ३ अक्षयतृतीया के पूर्व ३ मई को कंवलियास पधार गये हैं। कंवलियास के श्रीसंघ की विनति को लक्ष्य में रखते हुए वैशाख शुक्ला अष्टमी तक यहाँ विराजने की संभावना है। बड़ा नया गांव से विहार करते समय चारे से भरे ट्रक की टक्कर लग जाने से उपाध्यायप्रवर के नाक, घुटने आदि स्थानों पर मामूली चोटें आई थी। किन्तु उपाध्यायप्रवर ने विहार का क्रम जारी रखा। आपश्री देवली से केकड़ी पधारे तथा महावीर जयन्ती पर यहाँ आपके सान्निध्य में

तप-त्याग एवं धर्मआराधन का प्रभाव रहा। यहाँ से सरवाड़ पधारने पर व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. एवं महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा ६ ने उपाध्यायप्रवर के दर्शनों का लाभ लिया। सरवाड़ से कंवलियास पधारने पर व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. (सोहनजी म.सा.) आदि ठाणा ने उपाध्यायप्रवर का सान्निध्य-लाभ लिया। कंवलियास से ब्यावर होते हुए जोधपुर की ओर विहार की संभावना है।

- **मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.**, तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा २ से जोधपुर नगर एवं उपनगरों के लोग निरन्तर लाभान्वित हो रहे हैं। संतप्रवर सरस्वती नगर के पश्चात् नेहरू पार्क, सिंहपोल, उपरला बास आदि क्षेत्रों को अपनी पीयूषवाणी से पावन करते हुए पावटा स्थानक में पधारे हैं। अक्षय तृतीया पर प्रवचन रेनबो हाउस के प्रांगण में हुआ।
- **साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ३ घोड़ों का चौक स्थान में सुख-शान्ति पूर्वक विराजमान हैं।
- **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** आदि ठाणा नेहरू पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में विराज रहे हैं।
- **सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ४ जोधपुर नगर के पावटा क्षेत्र को लाभान्वित कर रहे हैं।
- **शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शान्तिकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ४ स्वास्थ्य संबंधी कारणों से भोपालगढ़ विराजते हुए भोपालगढ़वासियों में धर्म-भावना की वृद्धि कर रहे हैं। बीच में आपका विहार नाड़सर तक हुआ, किन्तु विहार में तकलीफ के कारण पुनः भोपालगढ़ ही विराजने का मानस बनाया है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा महाराष्ट्र की धरा को पावन करते हुए पूना पधार गए हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ५ अहमदाबाद सुखशांति पूर्वक विराजमान हैं। महासती श्री उषाजी म.सा. के स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ६ विभिन्न ग्राम-नगरों में धर्मप्रभावना करते हुए पूना पधार गये हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी(सोहनजी) म.सा.** आदि ठाणा ४ गिरी, ब्यावर होते हुए अजमेर पधारे। आपके सान्निध्य में महावीर जयन्ती पर धर्माराधन हुआ। अजमेर से आप कंवलियास पधार गए हैं,

जहाँ उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में अक्षय तृतीया पर विराज कर कोटा की ओर विहार करने की संभावना है।

- **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा.** के संघाड़ों ने सरवाड़ में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दर्शनों का लाभ लेकर पोरवाल क्षेत्र की ओर विहार किया है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** आदि ठाणा ३ विभिन्न ग्राम-नगरों को पावन करते हुए पूना पधार गये हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा.** आदि ठाणा ३ हिण्डौन से महुवा, मण्डावर आदि क्षेत्रों को पावन कर विचरण कर रहे हैं।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में पुणे शहर में १२ मई को चार दीक्षाएँ

रत्नवंश के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में वैशाख शुक्ला एकादशी, सोमवार दिनांक १२ मई २००३ को पुणे शहर के कात्रज कोंढवा रोड़ स्थित आनन्द तीर्थ पर चार मुमुक्षु बहनें पावन प्रव्रज्या पूर्वक श्रमणी-जीवन अंगीकार कर रही हैं-

१. मुमुक्षु वीरमाता श्रीमती पिस्तादेवी जी कांकरिया, धर्मपत्नी सुश्रावक वीरपिता स्व. श्री रिखबचन्द जी कांकरिया(भोपालगढ़ निवासी), चेन्नई, आयु-६१वर्ष।

२. मुमुक्षु बहिन सुश्री बबिता गुगलिया, सुपुत्री वीरपिता श्री सुकनराज जी गुगलिया एवं वीरमाता श्रीमती कमलादेवी जी, हैदराबाद, आयु-१६ वर्ष।

३. मुमुक्षु बहिन सुश्री माला जैन, सुपुत्री वीरपिता श्री श्रवणकुमार जी जैन एवं वीरमाता श्रीमती कमलादेवी जी जैन, गंगापुर सिटी, आयु-१६ वर्ष।

४. मुमुक्षु बहिन सुश्री नूतन जैन, सुपुत्री वीरपिता श्री श्रवणकुमार जी जैन एवं वीरमाता श्रीमती कमलादेवी जी जैन, गंगापुर सिटी, आयु-१८ वर्ष।

-अरुण मेहता, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

तीर्थंकर आदिनाथ के जन्म-कल्याणक एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के जन्म-दिवस पर तप-त्याग

चैत्र कृष्णा अष्टमी दिनांक २५ मार्च २००३ को देश के विभिन्न स्थानों पर प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म-कल्याणक एवं रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का ६५वाँ जन्म-दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। कुछ स्थानों के समाचार संकलित हैं-

चेन्नई— तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म-कल्याणक एवं परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का ६५वाँ जन्म-दिवस तप-त्याग के साथ मनाते हुए यहाँ

सामूहिक सामायिक एवं नवकार मन्त्र का जाप किया गया तथा तीर्थंकर प्रभु व आचार्यश्री का गुणगान किया गया। इस अवसर पर श्री पी.एम. चोरड़िया ने आचार्य श्री का जीवन परिचय दिया। श्री जवाहरलाल जी बागमार, श्री महावीरचन्द जी तातेड़ ने गीतिका के माध्यम से आचार्यश्री का गुणगान किया। श्री भंवरलाल जी गोठी, श्री हरकचन्द जी ओस्तवाल, श्री गौतमराज जी सुराणा, श्री ज्ञानचन्द जी बागमार, मंत्री श्री अखेचन्द जी आदि ने भी विचार प्रकट किए एवं आचार्यश्री के दीर्घायु होने की कामना की। श्री चम्पालाल जी बोथरा ने गीतिका के माध्यम से कहा-

गुरु हस्ती ने दिया हीरा बड़े काम का।
जग में चमके सितारा हीरा गणि नाम का।।

श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा भजन प्रतियोगिता आयोजित की गई तथा वस्त्र एकत्रित कर जरूरतमंद भाई-बहनों को वितरित किए गए। गुणगान सभा में ३५० से ४०० की उपस्थिति थी, लगभग सभी सामायिक वेश में थे।

–चम्पालाल बोथरा

भोपालगढ़– शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा., महासती श्री इन्दुबालाल जी म.सा. आदि ठाणा ४ के सान्निध्य में भगवान आदिनाथ का जन्म- कल्याणक एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का ६५वाँ जन्म-दिवस तप-त्याग साधना के साथ मनाया गया । महासती श्री इन्दुप्रभा जी म.सा., महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. एवं महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने दोनों महान् आत्माओं के जीवन एवं गुणों पर प्रकाश डाला। सुश्रावक श्री कल्याणमल जी बाफना, श्रीमती सुधा जैन एवं महिला मण्डल की सदस्याओं ने भी गुणगान किए। अपराह्न में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. से संबंधित प्रश्नमंच का कार्यक्रम रखा गया। **–नरेश जैन**

श्री स्थाकनवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा ग्रीष्मकालीन स्थानीय शिविरों का आयोजन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं उसकी विभिन्न शाखाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन अवकाश का सदुपयोग करने हेतु दिनांक १७ मई २००३ से ३० जून २००३ तक विभिन्न स्थानों पर बालक और बालिकाओं में धार्मिक एवं नैतिक संस्कार प्रदान करने हेतु स्थानीय शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। जो भी संघ अपने यहाँ शिविर आयोजित करवाना चाहते हैं वे प्रधान कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- **संयोजक/सचिव–स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक,जोधपुर–342001(राज.) फोन नं. 2624891 फैक्स :2636763**

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षाएँ २७ जुलाई को

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की आगामी परीक्षा **27 जुलाई 2003, रविवार** दोपहर १२ से ३ बजे तक कक्षा १ से ११ तक के

लिये आयोजित होगी। जिन्होंने १६ जनवरी २००३ की परीक्षा के लिये आवेदन पत्र भरा था, उन्हें अब पुनः फार्म भरने की आवश्यकता नहीं है। जो इस परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए हैं, उन्हें पुनः उसी कक्षा का तथा उतीर्ण होने वालों को अगली कक्षा का एवं जो इस परीक्षा में अनुपस्थित रहे उनको भी पुनः उसी कक्षा का प्रवेश-पत्र बोर्ड कार्यालय द्वारा भिजवाया जा रहा है। १६ जनवरी २००३ की परीक्षा देने वालों के अतिरिक्त जो नये अथवा पुराने परीक्षार्थी हैं उन्हें ही ३१ मई २००३ तक आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय को भिजवाना आवश्यक है।

–विमला मेहता, संयोजक

उत्तर भारतीय श्री वर्द्ध. स्था. जैन श्रमण श्रमणी सेवा समिति का शुभारम्भ तथा परीक्षा बोर्ड एवं विद्यापीठ की स्थापना

दिल्ली– यहाँ कोल्हापुर रोड़ के जैन स्थानक में श्रमणसंघीय आचार्य श्री डॉ. शिवमुनि जी म.सा. के आशीर्वाद एवं उत्तरभारतीय प्रवर्त्तक श्री सुमनमुनि जी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-श्रमणी सेवा समिति का प्रारम्भ हुआ है। श्रमण संघ के उत्तर भारतीय संगठन में श्रमण- श्रमणी की सेवा, चिकित्सा, उच्च शिक्षा एवं धर्म प्रभावक साहित्य के प्रकाशन का दायित्व इस समिति ने लिया है, इससे समाज में उठने वाली अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान होगा। समिति का उद्घाटन एवं विद्यापीठ की स्थापना का शुभारम्भ दानवीर समाजसेवी एवं जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री आर.डी. जैन ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जैन कॉन्फ्रेंस के प्रमुख मार्गदर्शक मण्डल के सदस्य एवं वरिष्ठ समाजसेवी लाला सलेकचन्द जी जैन (कागजी) ने की। कार्यक्रम को जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मन्त्री श्री शेरसिंह जी जैन ने संबोधित किया। समिति के अध्यक्ष श्री श्रीराम जी जैन ने भरोसा दिलाया कि यह संस्था दीर्घकाल तक अपनी सेवाएँ प्रदान करेंगी। समिति का यह स्वरूप पाँच-छह माह के प्रयासों का परिणाम है। समारोह का संचालन एवं निर्देशन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुभाष जी ओसवाल ने किया।

जैन विद्या-विद्वान निर्माण योजना

जैन विद्या में स्नातक उपाधि, सनातकोत्तर उपाधि, उच्च अध्ययन एवं शोध कार्य करने के इच्छुकों से आवेदन पत्र आमंत्रित हैं।

अर्हताएँ–

१. जैन विद्या में स्नातक उपाधि (बी.ए.) के लिये १०+२ से हायर सैकेण्डरी की परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिये। अन्यथा स्थिति में वह प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् ही स्नातक उपाधि परीक्षा में बैठने के लिए पात्र होगा।

२. जैन विद्या में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए.) के लिये किसी भी संकाय की स्नातक उपाधि परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

३. उच्च अध्ययन एवं शोध कार्य के लिये किसी भी संकाय की स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

शर्तें एवं सुविधाएँ

१. जैन विद्या में स्नातक एवं स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षाओं में बैठने के इच्छुकों को प्रवेश आवेदन शुल्क, प्रवेश शुल्क, परीक्षा फार्मस् शुल्क, परीक्षा शुल्क आदि व्यय स्वयं वहन करने होंगे। वस्तुतः ये परीक्षाएँ जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित की जाती हैं और वही उपाधि प्रदान करता है। प्राच्य विद्यापीठ दुपाड़ा रोड़ शाजापुर इस विश्वविद्यालय का अध्ययन-अध्यापन एवं परीक्षा केन्द्र है जो आपके प्रवेश आवेदन पत्र, परीक्षा आवेदन पत्र को विश्वविद्यालय को प्रेषित करने के लिये अग्रेषित करेगा। इस हेतु आपको अग्रेषण शुल्क देना होगा। साथ ही यह केन्द्र आपको अध्ययन, मार्गदर्शन एवं पुस्तकालय की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध करवायेगा। आवास एवं भोजन की सुविधा सशुल्क रहेगी। इस संबंध में सीमित आय वाले योग्य विद्यार्थियों को परीक्षा एवं आवास शुल्क में सहयोग राशि प्रदान की जा सकती है।

२. छात्रवृत्ति (स्कॉलरशिप)-जैन विद्या में उच्च अध्ययन के इच्छुकों को संस्था में रहकर ही उच्च अध्ययन करना होगा। जैन विद्या के इस उच्च अध्ययन के साथ-साथ वे जैन विद्या में एम.ए. एवं शोध कार्य कर सकेंगे। किन्तु इसके कारण उनके उच्च अध्ययन में कोई व्यवधान नहीं होना चाहिए। इस हेतु उन्हें रु. ३०००/- प्रतिमाह छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। जिसमें से रु. १०००/- प्रतिमाह भोजन और आवास सुविधा के लिए काटा जाएगा। यह छात्रवृत्ति तीन वर्ष की अवधि के लिये होगी। छात्रवृत्ति की निरन्तरता जैन विद्या के अध्ययन के क्षेत्र में उसकी प्रगति के मूल्यांकन पर निर्भर होगी जिसके लिये विद्यापीठ प्रति तीसरे माह परीक्षा आयोजित करेगा, जिसमें प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना अपरिहार्य होगा। छात्रवृत्ति के लिये चयनित विद्यार्थियों को प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर के अकादमिक, पुस्तकालय एवं प्रबंध संबंधी कार्यों को रुचिपूर्वक करना होगा। इन कार्यों में उसकी योग्यता क्षमता आदि को भी उसकी प्रगति के मूल्यांकन का एक अंश माना जाएगा।

३. उम्र एवं जाति का बंधन नहीं, किन्तु जैन धर्म दर्शन का पूर्व ज्ञान आवश्यक है एवं इस हेतु अभ्यर्थियों के मूल्यांकन हेतु पूर्व में एक परीक्षा आयोजित की जाएगी।

कोई भी इच्छुक अपना आवेदन (जिसमें नाम, पता, शैक्षणिक योग्यता तथा अन्य कोई विशेष योग्यता की जानकारी हो तथा राजपत्रित अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित अंकसूचियों, प्रमाण-पत्रों की सत्य प्रतिलिपियां संलग्न करते हुए) निम्न पते पर ३१ मई २००३ तक प्रेषित कर सकता है।–**डॉ. सागरमल जैन, निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (म.प्र.)465001**

सन् २००१ एवं २००२ के महावीर पुरस्कार अर्पित

मार्च २००३ को चेन्नई में पांडिचेरी के उपराज्यपाल महामहिम श्री के. आर. मलकानी ने अहिंसा एवं शाकाहार, शिक्षा एवं स्वास्थ्य तथा समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए भगवान महावीर फाउण्डेशन , चेन्नई द्वारा प्रदत्त सन् २००१ एवं २००२ के महावीर पुरस्कार प्रदान किये। समारोह का आयोजन चयन समिति के अध्यक्ष सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री एम.एन. वेंकटाचलय्याजी की अध्यक्षता में व डॉ. एल.एम. सिंघवी-राज्यसभा सदस्य, आचार्य श्री चन्दनाजी, श्री दीपचन्द जी गार्डी, डॉ. बी.एम. हेगड़े के सान्निध्य में हुआ।

वर्ष २००१ के लिए निम्न संस्थानों व व्यक्तियों को पुरस्कार प्रदान किये गये-

१. डॉ. नेमीचन्द जैन, इंदौर (मध्यप्रदेश) : अहिंसा एवं शाकाहार
२. डॉ. एच. सुदर्शन, येलन्दूर, चामराजनगर(कर्नाटक) : शिक्षा एवं चिकित्सा
३. भारत सेवाश्रम संगठन, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) : समाज सेवा

वर्ष २००२ के लिए निम्न संस्थानों व व्यक्तियों को पुरस्कार प्रदान किये गये-

१. विवेकानन्द राक मेमोरियल केन्द्र, कन्याकुमारी(तमिलनाडु): शिक्षा एवं चिकित्सा
२. मरुधर महिला शिक्षण संघ, विद्यावाड़ी, जिला-पाली (राज.) : शिक्षा
३. डॉ. एस.वी. आदिनारायणराव, विशाखापट्टनम (आन्ध्रप्रदेश) : चिकित्सा

प्रत्येक पुरस्कार विजेता को पाँच लाख रुपये नगद, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न (भगवान महावीर की मूर्ति) दिया गया।

– सुगालचन्द जैन, प्रबन्ध न्यासी, भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई

राष्ट्रस्तरीय चौदह अहिंसा पुरस्कारों की घोषणा

अहिंसा, सदाचार, शाकाहार, निर्व्यसनता एवं रचनात्मक कार्यों के प्रोत्साहन के लिए कार्यरत अखिल भारतीय सुधर्म अहिंसा प्रचार समिति द्वारा वर्ष २००२ के लिए घोषित चौदह राष्ट्रस्तरीय अहिंसा पुरस्कारों की घोषणा महावीर जयन्ती के पावन अवसर पर समिति के संयोजक कालूलाल सालेचा, संस्थापक श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन एडवोकेट एवं संचालक श्री नितेश नागोता जैन द्वारा अहिंसा समिति के एक कार्यक्रम में की गई।

चौदह राष्ट्रीय अहिंसा पुरस्कारों में ग्यारह पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड २००२ के रूप में दिये जा रहे हैं जबकि तीन पत्रकारों के श्रेष्ठ अहिंसात्मक कार्य सहयोग के लिए उन्हें इस वर्ष का श्रेष्ठ रचनाकार अवार्ड दिया जा रहा है। उक्त चौदह पुरस्कार के लिए देश के विभिन्न प्रांतों से १५७ आवेदन प्राप्त हुए थे जिन पर १५ सदस्यों की निर्णायक समिति ने विचार करके उत्कृष्ट कार्य सम्पादित करने वाले चौदह लोगों का चयन किया है।

सर्वश्रेष्ठ अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड के लिए श्री ईशाक अली भटौनवी-भटौना(उ.प्र.), श्री नीरज गुप्ता-किशनगंज, श्री देवेन्द्र शर्मा- बारां, डॉ. श्री

कृष्णकुमार जैन-नीमच, श्री संजीम शर्मा-बकानी, श्री राजेन्द्र सोनी-रिझोन, श्री दौलतसिंह जैन-उदयपुर, श्री सचिनकुमार सेन-बूँदी, डॉ. श्री मंगेशकुमार-उदगीर (महा.), श्री पवन विश्वकर्मा-सीहोर तथा श्री घनश्याम वर्मा अध्यापक-गंगधार का चयन किया गया है। जबकि पत्रकारिता के क्षेत्र में श्रेष्ठ अहिंसात्मक कार्य सहयोग के लिए श्री ओम पारदर्शी-उदयपुर, श्री रणवीर सिंह चौहान-भवानीमण्डी, श्री मुकेश हिंगड़-दरोली का चयन किया गया है।

उपर्युक्त चौदह अहिंसा पुरस्कारों के अन्तर्गत प्रत्येक कार्यकर्ता को पाँच हजार रुपये नकद, स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र समिति द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में प्रदान किये जायेंगे। इसके अतिरिक्त स्थानीय विभिन्न पत्रकारों को भी श्रेष्ठ सहयोगी सम्मान से सम्मानित किया जायेगा।–**नितेश नागोता**

जैन पांडुलिपियों के संरक्षण का अपूर्व अवसर

भगवान महावीर २६००वाँ जन्म जयन्ती महोत्सव कार्यक्रमों की शृंखला में संस्कृति मंत्रालय-भारत सरकार ने राष्ट्रीय अभिलेखागार-दिल्ली के नेतृत्व में सम्पूर्ण देश में विकीर्ण जैन पांडुलिपियों के सूचीकरण की महत्त्वाकांक्षी योजना क्रियान्वित की है। सम्पूर्ण देश को ५ भागों में विभाजित कर प्रत्येक क्षेत्र की जैन पांडुलिपियों की जानकारी शासन द्वारा स्वीकृत प्रारूप में तैयार कर उनका e-Catalogue कम्प्यूटर पर तैयार किया जा रहा है। म.प्र. एवं महाराष्ट्र प्रान्त में इस कार्य को सम्पादित करने हेतु कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर का चयन नोडल एजेन्सी के रूप में किया गया है। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर ने जैन समाज के सभी सम्प्रदायों/वर्गों/विचारधाराओं के नियंत्रण में उपलब्ध पांडुलिपियों के सूचीकरण का कार्य निर्धारित प्रारूप में १ मार्च २००३ से प्रारम्भ कर दिया है अतः समस्त शास्त्र भण्डारों के प्रबंधकों से अनुरोध है कि वे निम्नांकित जानकारी हमें अविलम्ब उपलब्ध कराने का कष्ट करें जिससे म.प्र. एवं महाराष्ट्र अंचल के समस्त भंडारों में उपलब्ध जैन पांडुलिपियों के सूचीकरण के कार्य को यथाशीघ्र पूर्ण कर महत्त्वपूर्ण पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्मिंग, स्केनिंग, संरक्षण, अनुवाद आदि का पथ प्रशस्त किया जा सके।
१. भंडार का नाम एवं पता २. भंडार के प्रबंधक का नाम एवं पता ३. भंडार में उपलब्ध पांडुलिपियों की संख्या ४. क्या केटेलाग (सूची) प्रकाशित है? (हां/नहीं) ५. पत्राचार हेतु पूर्ण पता पिन कोड सहित ६. फोन नं. कोड सहित।

ज्ञातव्य है कि कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ १९९३ से इस क्षेत्र में कार्यरत है। अतः म.प्र. एवं महाराष्ट्र के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों के प्रतिनिधिगण भी अपनी पांडुलिपियों के सूचीकरण हेतु हमसे सम्पर्क कर सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।

–डॉ. अनुपम जैन, सचिव, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ,
584, महात्मा गांधी मार्ग, तुकोगंज, इन्दौर–452001

अहिंसा, संस्कृति एवं जीवकल्याण समिति, अलीगढ़ द्वारा वर्ष भर वैचारिक गोष्ठियाँ

अलीगढ़(उ.प्र.)- अहिंसा, संस्कृति एवं जीवकल्याण समिति दिल्ली रोड़, अलीगढ़ ने ३ नवम्बर २००२ से ३१ मार्च २००३ तक विभिन्न प्रसंगों पर १४ गोष्ठियों एवं बैठकों का आयोजन किया। दीपावली, विश्व एड्स दिवस, विश्व मानवाधिकार दिवस, अल्पसंख्यक अधिकार दिवस, राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस, गणतन्त्र दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस, भगवान आदिनाथ जयन्ती आदि अवसरों पर गोष्ठियों एवं बैठकों में सुन्दर विचार उभर कर आए। मानवाधिकार दिवस पर गर्भपात के विरोध में संस्था सचिव श्री मनोजकुमार जैन निर्लिप्त ने कहा- **"गर्भपात के नाम पर की जाने वाली भ्रूण हत्या को मानव हत्या माना जाए एवं इसे मानव को जीवित रहने के अधिकार से वंचित करने रूप अपराध माना जावे, क्योंकि गर्भावस्था वाला जीव जन्म लेकर बालक बनता और फिर धीरे-धीरे पूर्ण मानव बनकर सम्पूर्ण जीवन जी सकने योग्य हो सकता था।"**

विजयनगर क्षेत्र का गोधन लाभान्वित

अकालग्रस्त गोधन के संरक्षण हेतु विजयनगर का श्रावक समाज सजग है। अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष माननीय श्री रतनलाल जी बाफना के सौजन्य से गोधन की रक्षा हेतु लाखों रुपये के चारे की सहायता प्राप्त हुई है।**-प्रतापचन्द सांड**

श्राविका मण्डल द्वारा कैंसर जांच शिविर का आयोजन

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय के तत्त्वावधान में IARC टीम के सहयोग से १२ अप्रेल २००३ को निःशुल्क कैंसर जांच शिविर का आयोजन नारायण सिंह सर्किल, बीमा कार्यालय में किया गया। शिविर में ६० महिलाओं की जांच की गयी। शिविर की व्यवस्था में श्रीमती मीना जी गोलेछा का विशेष सहयोग रहा। भविष्य में ऐसे शिविरों की उपयोगिता का अनुभव किया गया। शिविर का संचालन डॉ. निशा नरूका एवं उनकी टीम द्वारा किया गया।**-उर्मिला बोथरा, मंत्री श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर**

उत्तराध्ययन सूत्र भाग-३ की परीक्षा अब २८ सितम्बर को

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा अनूदित उत्तराध्ययन सूत्र भाग-३ की परीक्षा श्री रतनलाल सी. बाफना ट्रस्ट, नयनतारा, सुभाष चौक, जलगांव (महा.) द्वारा ८ जून २००३ को लेने का निश्चय किया गया था। परन्तु अनेक भाई-बहनों व महासतियाँ जी की विशेष मांग पर इस परीक्षा को अब २८ सितम्बर २००३ रविवार को लेने का निश्चय किया गया है। फार्म भेजने की अन्तिम तारीख ३१ अगस्त २००३ है।

सुश्रावक श्री चुन्नीलाल जी ललवानी पर पुस्तक का प्रकाशन

अखिल भारतीय सामायिक संघ के पूर्व संयोजक प्राणिसेवा में समर्पित कर्मठ व्यक्तित्त्व के धनी सुश्रावक श्री चुन्नीलाल जी ललवानी, जयपुर ने जीवन के

८१ बसन्त देख लिए हैं। आप पर शीघ्र ही एक पुस्तक का प्रकाशन हो रहा है। जो भी महानुभाव अपने संदेश, विचार आदि प्रेषित करना चाहें, वे अपने फोटो के साथ इस पते पर भिजवाएँ- **सी.एल. ललवानी, बी-2, भवानीसिंह मार्ग, क्रय-विक्रय संघ के सामने, जयपुर (राज.)**

संक्षिप्त समाचार

बोलारम (सिकन्द्राबाद)—श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बोलारम की विनति पर श्री गोंडल सम्प्रदाय के आचार्य तपस्वी श्री रतिलाल जी म. सा. की सुशिष्याएँ तपस्विनी महासती श्री राजेमति जी आदि ठाणा ३ ने बोलारम में चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की है।- **वी. दीपेश सुराणा**

रत्नागिरि—भारतीय जैन संघटना, रत्नागिरि द्वारा सिविल हास्पिटल रत्नागिरि में २४ से २६ मार्च २००३ तक पद्मश्री डॉ. शरदकुमार दीक्षित (अमेरिका) मोफत प्लास्टिक सर्जरी शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में लगभग ३०० रोगी आये एवं ११५ रोगियों के १६० आपरेशन किए गए। आगामी कार्यक्रमों में कृत्रिम अंग, नेत्र-चिकित्सा एवं योग से संबंधित शिविर लगाये जायेंगे।

भोपाल—अ.भा. वैश्य महासम्मेलन म.प्र. के प्रचार मंत्री, वयोवृद्ध कर्मठ समाजसेवी भाई घनश्यामदास गुप्ता ने वैश्य बंधुओं द्वारा संचालित/प्रकाशित/संपादित सभी प्रकार की दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक पत्र-पत्रिकाओं की जानकारी का संग्रह कर उसे प्रदेश-नगर वार छांट कर पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करने की अनूठी योजना बनाई है। इस कार्य में उन्होंने सभी भाइयों का सहयोग मांगते हुए अपील की है कि जिस भाई के पास जो भी जानकारी हो वह उनको **200, प्रभुनगर, अंकुर, नर्सिंगहोम मार्ग, भोपाल (म.प्र.) -462001, दूरभाष (0755) 542413** पर भिजवाने का कष्ट करें।

मेड़ता शहर— श्री जयमल्ल जैन छात्रावास, मेड़ता शहर, जिला- नागौर (राज.) में प्रवेश हेतु कक्षा ३ से १२ तक के केवल जैन छात्रों से आवेदन पत्र आमंत्रित हैं। छात्रावास में शैक्षणिक अध्ययन के साथ कम्प्यूटर एवं धार्मिक ज्ञान भी करवाया जाता है। समस्याग्रस्त बच्चों पर विशेष ध्यान देकर उन्हें सुधारने का प्रयास किया जाता है। इच्छुक अभिभावक शीघ्र सम्पर्क करें-**अधीक्षक, श्री जयमल्ल जैन छात्रवास, मेड़ता शहर, जिला- नागौर (राज.) फोन नं. 01590-231160**

बधाई/चुनाव

डॉ. कुमारपाल देसाई को जैन गौरव अलंकरण

सम्पूर्ण जैन समाज की केन्द्रीय प्रतिनिधि संस्था भारत जैन महामण्डल द्वारा प्रदत्त एवं चैतन्य काश्यप फाउण्डेशन द्वारा संस्थापित 'जैन गौरव' अलंकरण से २३ मार्च २००३ को डॉ. कुमारपाल देसाई, अहमदाबाद को आचार्य श्री महाप्रज्ञ की निश्रा में मुम्बई में सम्मानित किया गया। इस सम्मान के अन्तर्गत सवा लाख रुपये की राशि तथा मानपत्र प्रदान किया जाता है।

उदयपुर—समता युवा संस्थान, उदयपुर के एक कार्यक्रम में श्रमण संस्कृति एवं नवोदय पत्रिका के सम्पाद डॉ. सुभाष कोठारी को 'युवारत्न' की उपाधि से अलंकृत किया गया। आप अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी , लेखक, सम्पादक एवं सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं।

मेड़ता शहर-श्री जयमल्ल जैन छात्रावास के छात्र सुनील कुमार जैन को

"राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर की ओर से इस वर्ष का "भतमाल जोशी पुरस्कार" देने की घोषणा हुई है। श्री जैन मात्र १७ वर्ष की आयु में साहित्य की सभी विधाओं में लिखते हैं। इससे पूर्व आपको "अर्चना नवोदित साहित्यकार पुरस्कार २००२" भी मिल चुका है।

चेन्नई-दिनांक १३ मार्च २००३ को श्री एस.एस. जैन युवक संघ, साहुकार पेठ, चेन्नई के पदाधिकारियों का चयन सर्वानुमति से सम्पन्न हुआ। श्री एम. शान्तिलाल तातेड़ को अध्यक्ष, श्री राजेन्द्रकुमार बाघमार एवं श्री बाबूलाल जी बोकड़िया को उपाध्यक्ष, श्री सूरजमल जी कोठारी को मन्त्री, श्री एस. संजय खाबिया को सहमंत्री एवं श्री शेखरचन्द जी चोरड़िया को कोषाध्यक्ष चुना गया।– **सूरजमल कोठारी**

श्रद्धांजलि

श्रमणसंघ के सलाहकार श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. का स्वर्गगमन

श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. के प्रमुख शिष्य एवं वर्तमान आचार्य श्री शिवमुनि जी म.सा. के **गुरुदेव श्री ज्ञानमुनिजी म.सा.** का २४ अप्रेल २००३ को मण्डी गोविन्दगढ़ में समाधिपूर्वक स्वर्गवास हो गया। आप ८१ वर्ष के थे आप पंजाब संघ के लोकप्रिय सन्तरत्न थे। बंसल गोत्रीय अग्रवाल वंश में संवत् १९७९ की अक्षय तृतीया को जन्मे आपने आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. के चरणों में दीक्षा ग्रहण कर अनेक भजनों एवं पुस्तकों की रचना की। १३ मई १९८७ से आप श्रमणसंघ के सलाहकार थे। समाज में आपकी प्रेरणा से सेवा के कई कार्य चल रहे थे। –**सुभाष ओसवाल, महामंत्री**

स्वतन्त्रता सेनानी श्री बलवन्तसिंह जी मेहता का निधन

जयपुर—स्वतन्त्रता सेनानी, समाजसेवी और भारतीय संविधान सभा के सदस्य श्री

बलवन्त सिंह जी मेहता का ३१ जनवरी २००३ को १०३ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप केन्द्रीय विधानसभा एवं लोकसभा के सदस्य, राजस्थान के उद्योग, खनिज एवं विकासमन्त्री तथा मेवाड़ प्रजामण्डल (कांग्रेस का देशी रियासत में प्रतिरूप) के संस्थापक अध्यक्ष रहे। श्री मेहता जी के प्रस्ताव पर भारत का संविधान पारित किया गया। आप वर्द्धमान जैन स्थानकवासी शिक्षण संस्था के वर्षों तक प्रधानाध्यापक रहे, तभी से आप मास्टर साहब (माडसाब) के नाम से लोकप्रिय हुए। आपने जैन धर्म का गहन अध्ययन अनुशीलन एवं चिन्तन मनन किया था। **–कुसुम मेहता 'प्रियदर्शिनी'**

जोधपुर– श्री सुखसम्पतराजजी भण्डारी सुपुत्र श्री बिलमराजजी भण्डारी का १६ अप्रेल २००३ को कोलकाता में देहावसान हो गया। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित आपका जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप संघ-सेवा और सन्त-सेवा में सदैव समर्पित रहे। आपकी आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी।

जोधपुर–सरलमना सुश्राविका श्रीमती सूरजकंवर जी सावां धर्मपत्नी श्री

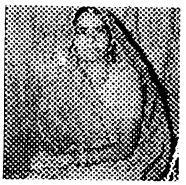

उगमराजजी सावा (सुपुत्री स्व. श्री सम्पतराज जी मेहता) का ७८ वर्ष की आयु में दिनांक ३.४.२००३ को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आपकी धर्मनिष्ठा एवं सन्त-सतियों की सेवा सराहनीय थी। आप प्रतिदिन ५-७ सामायिकें करती तथा नन्दीसूत्र का स्वाध्याय करती थीं। समय-समय पर महासतियाँ जी की सेवा में संवर, पौषध, उपवास, आयम्बिल, रात्रि चौविहार त्याग आदि धर्मक्रियाओं का पूरा लाभ लेती रहती थी। आप स्वावलम्बी, श्रमशील एवं स्पष्ट वक्त्री थी। आपने त्याग-प्रत्याख्यान पूर्वक नश्वर देह का परित्याग किया। आपकी भावनानुसार नेत्र दान किये गये। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ कर गयी हैं।

धुलिया– सुश्रावक श्री सुभाषचन्द जी लोढ़ा (बाबूजी) सुपुत्र श्री हीरालाल जी

लोढ़ा का २३ मार्च २००३ को ४५ वर्ष की उम्र में आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ, सेवाभावी एवं कर्त्तव्यपरायण श्रावक थे। देव, गुरु एवं धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा-भक्ति थी। आप अपने पीछे पत्नी सुनन्दा सुपुत्र भूषण व आकाश, सुपुत्री भावना लोढ़ा आदि का परिवार छोड़कर गए हैं।

बालोतरा– सुश्रावक श्री सोहनराज जी भंसाली का ७० वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं समर्पित गुरुभक्त श्रावक थे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती पांची देवी, आठ पुत्रों एवं एक पुत्री का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

बालोतरा—सुश्राविका श्रीमती चुकी देवी जी धर्मपत्नी सुश्रावक श्री मांगीलाल जी वेदमेहता का ३१ मार्च २००३ को स्वर्गगमन हो गया। आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति आपकी अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-मुनिराजों के वि.सं. २०४६ के चातुर्मास में लब्ध प्रतिष्ठित मेहता परिवार ने चार माह स्वधर्मी वात्सल्य सेवा का समर्पणभाव से लाभ लिया। संघ-सेवा, सन्त-सेवा और स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में आप सदैव तत्पर रहीं। प्रतिदिन कम-से-कम तीन सामायिक, प्रतिक्रमण और चार-चार माह तक एकाशन व्रत में आपका उत्साह प्रेरणादायी रहा। सेवाभावी सुश्राविका की तप-त्याग के प्रति विशेष रुचि थी। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

कटक—तपस्वी सुश्रावक श्री मुन्नालाल जी नाबरिया (सोजत निवासी) का ७६ वर्ष

की आयु में निधन हो गया। आप सरलस्वभावी, सेवाभावी एवं समाजसेवी व्यक्तित्व के धनी थे। आपने कई संस्थाओं की तन, मन एवं धन से सेवा की तथा अनेक पदों को सुशोभित किया। कटक में आपने स्थानकवासी, श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, तेरापंथी एवं दिगम्बर समाज को एकता के सूत्र में बांधकर वात्सल्यभाव जागृत किया। आपने तेला, पाँच,आठ, नौ, ग्यारह, पन्द्रह दिवसीय तथा मासखमण की तपस्या की। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।—**मणराज धोका**

अहमदाबाद—श्रद्धाशील सुश्रावक श्री पारसमल जी बांठिया का देहावसान हो गया। संघ-सेवा, संत-सेवा और स्वधर्मी-वात्सल्य में बांठिया जी की सदा शुभ भावना रहती थी। वे रत्नसंघ के सुज्ञ श्रावकरत्न थे। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सन्त-सतियों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपके अग्रज भ्राता सुश्रावक श्री दौलतराज जी बांठिया एवं समस्त परिवार जन समर्पित एवं श्रद्धाभक्ति से सम्पन्न हैं।

जोधपुर—सुश्रावक श्री पदमचन्द जी खिंवसरा सुपुत्र स्व. श्री पारसमल जी

खिंवसरा का १० अप्रेल २००३ को कोयम्बटूर में देहावसान हो गया। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका संस्कारशील जीवन संघ-सेवा और सन्त-सेवा में समर्पित था। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की स्पष्टता आपके जीवन की अंग थी।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत ५८ से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गांव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहां जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 24 अगस्त से 31 अगस्त 2003** तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **15 जुलाई 2003** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम व पता.....
4. संघ मंत्री का नाम व पता.....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहां धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहां स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10.अन्य विशेष विवरण.....

***आवेदन करने का पता*-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय–घोड़ों का चौक, जोधपुर– 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, फैक्स– 2636763**

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि आगामी पर्वाधिराज पर्युषण पर्व **24 अगस्त से 31 अगस्त 2003** तक मनाये जायेंगे। आप सभी स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गांव पधारने से आपकी धर्म-साधना सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। अतः आपसे निवेदन है कि आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) फोन नं. २६२४८६१ के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

सुशीला बोहरा
संयोजक

रिखबचन्द मेहता
सचिव

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

5000/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की संरक्षक-सदस्यता हेतु प्रत्येक
(अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अभियान के अन्तर्गत)

110 श्री अनिल जी बोहरा, जोधपुर
111 श्री अशोक जी चोरड़िया, जोधपुर
112 श्री उत्तमचन्द जी कांकरिया, जोधपुर।
113 श्री नवरतन जी डागा, जोधपुर (सुपुत्री पायल के विवाहोपलक्ष्य में)

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

9134 श्रीमती उम्मेदकंवरजी नरपतराजजी कांकरिया, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)
9135 श्री सतीश जी सायरचन्द जी जैन, जोधपुर (राज.)
9136 श्री अशोक कुमार जी कर्णावट, मुम्बई (महा.)
9173 श्री माणिकचन्द जी आर. पारख, मुम्बई (महा.)
9174 Shri Gyanchand Ji Soni, Mumbai (M.S.)
9175 Shri R.C.Surana Ji, Chennai (T.N.)
9176 Shri Rakesh Ji Gandhi, Surat (Gujarat)
9177 श्री अशोक जी लखमीचन्द जी भलगट, बोटा, अहमदनगर(महा.)
9178 Shri Subhash Ji Singhvi, Bangalore (K.T.)

श्रीमान अमरचन्द जी पी. मुणोत, मुम्बई के सौजन्य से

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

9137 Shri Hetal Ji Shah, Mumbai (M.S.)
9138 Ranjana Ji Mohanlal Ji Oswal, Kolahapur (M.S.)
9139 Shri Mohanlal Ji Oswal, Kolahapur (M.S.)
9140 Shri Ramprasad Surendra Ji Jain, Sawaimadhopur (Raj.)
9141 श्री सुरेशचन्द जी मूलचन्द जी चोरड़िया(मामाजी), मुडी, जलगांव (महा.)
9142 श्री विजयकुमार जी मूलचन्द जी चोरड़िया, पारोला, जलगांव (महा.)
9143 श्री प्रदीपचन्द जी मूलचन्द जी चोरड़िया, पारोला, जलगांव (महा.)
9144 श्री प्रमोदचन्द जी मूलचन्द जी चोरड़िया, पारोला, जलगांव (महा.)
9145 श्री प्रशान्तकुमार जी कन्हैयालाल जी बोथरा, डहाणूगांव, ठाणा (महा.)
9146 श्री महेन्द्रकुमार जी भीकचन्द जी खिंवसरा, मांडल, जलगांव(महा.)
9147 श्री अभयकुमार जी उत्तमचन्द जी खिंवसरा, मांडल, जलगांव (महा.)
9148 श्री गोकुलचन्द जी चंदनमल जी खिंवसरा, मांडल, जलगांव (महा.)
9149 श्री लालचन्द जी बंसीलाल जी ललवाणी, मांडल, जलगांव (महा.)
9150 श्री नरेन्द्र कुमार जी चन्द्रराज जी बोथरा(वकील), मांडल, जलगांव (महा.)
9151 श्री संजयकुमार जी इंदरचन्द जी कांकरिया, मांडल, जलगांव (महा.)
9152 श्री तेजमल जी नथमल जी गोठी, पांडेसरा, उधना,सूरत (गुजरात)
9153 श्री जितेन्द्रकुमार जवरीलाल जी बरड़िया, बोरखेड़ा (पिरचि), जलगांव(महा.)
9154 श्री प्रवीणकुमार जी शोभाचन्द जी बोरा, वणी, नाशिक (महा.)
9155 श्री जितेन्द्रकुमार जी सवाईचन्द जी गेलड़ा, शहादा, नंदुरबार (महा.)
9156 श्री माणकलाल जी चंपालाल जी बोथरा, इगतपुरी, नाशिक (महा.)

9157 श्री पारसमल जी नथमल जी गोठी, पांडेसरा, उधना, सूरत (गुजरात)
9158 श्री उम्मेदसिंह जी मेहता, जोधपुर (राज.)
9159 श्री कंवरलाल जी गोखरू, कंवलियास, भीलवाड़ा (राज.)
9160 श्री प्रकाशचन्द जी जैन, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)
9161 श्री मोहनलाल जी जैन, मंडावर–महुआ रोड़, दौसा (राज.)
9162 श्री कुलदीप कुमार जी जैन, मण्डावर, महुआ रोड़, दौसा (राज.)
9163 श्री बसन्त जी डॉ. पन्नालाल जी लोढ़ा, भिंवड़ी (महा.)
9164 श्री रिखबचन्द जी सुगनसिंह जी मुणोत, खामगांव, बुलढाणा (महा.)
9165 श्री गणपतसिंह जी मोहनसिंह जी मुणोत, खामगांव, बुलढाणा (महा.)
9166 श्री अशोक कुमार डांगी, मुम्बई (महा.)
9167 श्री पारसमल जी अमोलकचन्द जी वैदमुथा, डोंबिवली (पूर्व), ठाणे (महा.)
9168 श्री पंकज जी संतोषचन्द जी रांका, डोंबिवली(पश्चिम), ठाणे (महा.)
9169 श्री (डॉ.) दिलीप जी सुगनसिंह जी मुणोत, डोंबिवली (पश्चिम), ठाणे (महा.)
9170 श्री विजयकुमार जी बोथरा, डोंबिवली (पश्चिम), ठाणे (महा.)
9171 श्री शान्तिलाल जी चोरड़िया, डोंबिवली (पूर्व), ठाणे (महा.)
9172 श्री देवराज जी कोठारी, कल्याण (वेस्ट), ठाणे (महा.)

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

1101/– गुप्तदान, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा के जोधपुर में दर्शन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/– श्रीमती चंचलबाई जी पुखराजजी कोचर, विशाखापट्टनम की ओर से आर्थिक सहयोग सप्रेम भेंट।

501/– श्री महावीरचन्द जी ललित कुमार जी सुराणा, पूज्य पिताश्री जी मांगीलाल जी सुराणा की पावन स्मृति में भेंट।

500/– श्री शान्तीलाल जी खाबिया, भोपाल, चेरिटेबल ओबजेक्ट के लिए सप्रेम भेंट।

500/– श्री गणेशमल जी मेहता, जोधपुर द्वारा सप्रेम भेंट।

500/– श्री सोहनलाल जी सुमेरमल जी देसरला, सांवलाकलां, पूज्य पिताश्री रायचन्द जी देसरला का 13.03.2003 को देहावसान होने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

500/– श्री मानराज जी मेहता, जोधपुर, अपनी बहन श्रीमती सूरजकंवर जी (मिश्री बाईसा) की पावन स्मृति में भेंट।

500/– श्रीमती पुष्पादेवी पत्नी श्री शान्तिचन्द जी बगानी, सूरत, अपनी सुपुत्री सौ. कां नीतू का चि. रीतेश पुत्र श्री ज्ञानचन्द जी जैन, रायपुर के संग विवाह होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/– श्री महावीरचन्द सा पारख, जोधपुर, पूज्य काकीसा पारसबाई जी धर्मपत्नी श्री अजीतमल जी पारख की पावन स्मृति में सप्रेम भेंट।

251/– श्री हनुमान प्रसाद जी, चौथमल जी, पारसमल जी जैन, सवाईमाधोपुर, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मोतीलाल जी बोहरा (श्यामपुरा वाले) का दिनांक 14 मार्च 2003 को आकस्मिक निधन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

251/– श्री गणपतराज जी अबानी, जोधपुर, सुपुत्री सौ. कां. प्रतिभा का शुभविवाह आ. आनन्द सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार जी कटारिया, पाली, हाल भायन्दर, मुम्बई के संग जोधपुर में 27 मार्च 2003 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम

भेंट।

251/– श्री शुभराज जी मेहता, जोधपुर, पूज्य भाईसाहब श्री भभूतराजजी पुत्र श्री बलवन्तराजजी मेहता की दिनांक 19.4.2003 को प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर भेंट।

200/– श्री प्यारेलाल जी महेन्द्रकुमार जी मुणोत, नागपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

200/– श्री प्रकाशमल जी बोथरा, चेन्नई, सांवटा में परम पूज्य आचार्य भगवन्त के होली चातुर्मास पर पावन दर्शनों के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

150/– श्री प्रभुचन्द सा अब्बानी, जोधपुर, पूज्य पिताश्री स्वर्गीय श्री चंचलचन्द सा अब्बानी की पुण्य तिथि पर श्री प्रभुचन्दजी, चन्द्राजी, तमन्नाजी अब्बानी एवं विशाल जी, तृप्ति जी, मुस्कान जी भंडारी द्वारा सप्रेम भेंट।

101/– श्री सोभागमल जी धर्मचन्द जी जैन, कुस्तला, सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य पर सप्रेम भेंट।

100/– श्रीमती मोहनबाई जी लुणिया एवं श्री सज्जनराज जी लुणिया, जोधपुर, आयम्बिल ओली के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

51/– श्री पी.सी. कोठारी जी, चेन्नई की ओर से पुत्ररत्न के जन्म के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

जीव-दया हेतु साभार-प्राप्त

1001/– श्री महेन्द्र जी गांग, अहमदाबाद, श्री मनमोहनलाल जी गांग, जोधपुर के सुपौत्र चि. अनुपम सुपुत्र श्री महेन्द्रमल जी–श्रीमती लता जी गांग का शुभ–विवाह दिनांक 10.2.2003 को जोधपुर में सौं. कां. स्वाति (सुपुत्री श्री महावीरचन्द जी–श्रीमती बैला जी जैन) के साथ सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

साहित्य प्रकाश हेतु साभार-प्राप्त

10000/–श्री घेवरचन्द जी लोढ़ा, जयपुर की ओर से पुस्तक 'पथ की रुकावटें' के प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग प्राप्त।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर की साभार-प्राप्त

1200/– श्री जवरीमल जी छाजेड़, जोधपुर।

5000/– श्री कल्याणमल चंचलमल चोरड़िया ट्रस्ट, जोधपुर, साहित्य अनुदान सहायतार्थ।

500/– श्री ज्ञानराज जी अब्बाणी सेवा ट्रस्ट, जोधपुर।

500/– श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, अजीत, पर्युषण सहायतार्थ।

500/– श्री महावीरचन्द सा पारख, जोधपुर, पूज्य काकीसा पारसबाई जी धर्मपत्नी श्री अजीतमल जी पारख की पावन स्मृति में सप्रेम भेंट।

250/– श्री मोहनराज जी रणजीतराज जी मेहता, जाधेपुर।

स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया की साभार-प्राप्त

251/– श्रीमान हनुमान प्रसाद जी जैन (पत्रकार) श्री चौथमल जी जैन, श्री पारसचन्द जी जैन(पार्षद) सवाईमाधोपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री मोतीलाल जी बोहरा की पुण्य स्मृति में स्वाध्याय संघ सहायतार्थ।

251/– श्री कल्याणमल जी जैन, कैथुदा वाले, अपने पुत्र की शादी के उपलक्ष्य में।

151/– राधेश्याम जी जैन, जटवाड़ा खुर्द, सवाईमाधोपुर, सुपुत्र की शादी के उपलक्ष्य में स्वाध्याय संघ को सहायतार्थ।

''आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान'' के लिए कृतियाँ आमन्त्रित

परमश्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्य स्मृति में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रायोजित ''आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान'' के लिए कृतियाँ आमंत्रित हैं। इसके नियम आदि इस प्रकार हैं-

१. यह सम्मान प्रतिवर्ष सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से जैन धर्म संबंधी दर्शन, इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य (काव्य, कथा, निबन्ध, नाटक, जीवनी आदि विधाएँ) विषयक किसी प्रकाशित अथवा अप्रकाशित ग्रन्थ पर दिया जाता है। रचनाओं का मौलिक होना अनिवार्य है। मौलिकता का प्रमाण-पत्र लेखक/ प्रकाशक को देना होगा। सम्पादित (संकलित) ग्रन्थ स्वीकार्य एवं मान्य नहीं होंगे। सम्मान राशि रुपये २१,०००/- (अक्षरे रुपये इक्कीस हजार मात्र) के साथ प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति चिह्न भी प्रदान किया जायेगा।

२. मण्डल यह राशि सम्मानार्थ उस विद्वान् को भी भेंट स्वरूप दे सकता है जिसने जैन धर्म संबंधी दर्शन, इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य आदि क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है।

३. इस सम्मान के लिए देश-विदेश के विद्वान् समान रूप से अधिकारी होंगे।

४. प्रकाशित अथवा अप्रकाशित ग्रन्थ हिन्दी भाषा में होना चाहिए।

५. सम्मान-वर्ष के पूर्व की अवधि में प्रकाशित ग्रन्थ ही विचारार्थ स्वीकार्य होंगे।

६. ग्रन्थ की (प्रकाशित अथवा अप्रकाशित) चार प्रतियाँ मण्डल कार्यालय को भेजना आवश्यक है।

७. ग्रन्थ ३१ जुलाई २००३ तक मण्डल कार्यालय में पहुँच जाने चाहिए। इस तिथि के बाद प्राप्त ग्रन्थों पर विचार नहीं किया जायेगा।

८. मण्डल की सम्मान चयन समिति का निर्णय सर्वमान्य होगा।

९. ऐसे ग्रन्थों पर विचार नहीं किया जायेगा जो खण्डों में प्रकाशित हो रहे हों और अभी तक अपूर्ण हों, लेकिन अपने आप में पूर्ण, किन्तु खण्डों में प्रकाशित ग्रन्थ पर विचार किया जा सकता है।

उक्त सम्मान के लिए विचारार्थ अपनी कृतियां निम्न पते पर भेंजे-

प्रकाशचन्द डागा
मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन नं. 0141-2565997

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है। - आचार्य श्री हस्ती

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

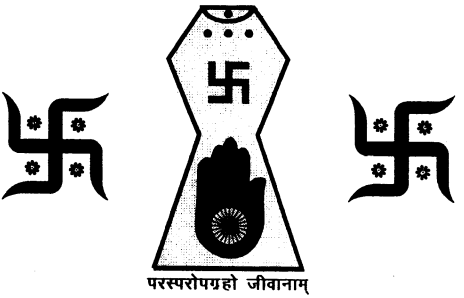

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, Chandrappan Street
Chennai-600079(T.N.)
Ph.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960
Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66
Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077
Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI MAHAVEER

JAI GURU HASTI JAI GURU HIRAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

LIVE & LET LIVE

Lord Mahaveer

With Best Compliments from

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SECURITIES LIMITED

Regd. Office : 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600 008, Ph : 855 3185/3059. Website : www.prithvifx.com

CHENNAI	BANGALORE	PANJIM GOA
044-8553185	080-5327812	0832-231190
044-8553059	080-5327813	0832-420675

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD NAVARATHAN KAVAD

RAVINDRA KAVAD ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056.

Ph : 044-627 3165, 627 4165

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्ता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

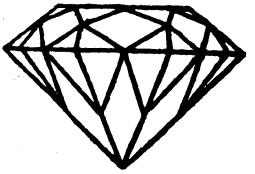

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
✆ 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान॥

JAI GURU HASTI

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 3, Car Street
Poonamallee, Chennai-600 056
Phone : 26272609

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
(Banker)

No. 3A, Car Street
Poonamallee Chennai- 600 056
Phone : 26272906

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

☆ Bangalore ☆ Coimbatore ☆ Ernakulam ☆
☆ Kollidam ☆ New Delhi ☆

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

With Best Compliments From :

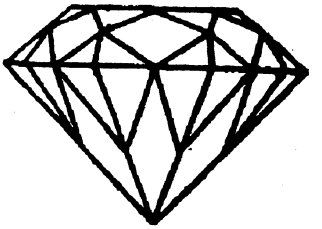

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
- आचार्य श्री हस्ती

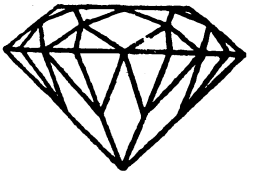

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

कलात्मक गहनोंकी सुवर्ण सृष्टी...
आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !
सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...
A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854
राजमल लखीचंद™
ज्वेलर्स
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (महाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३
All major credit cards accepted...
GRACE

आर. एन. आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

Home next to everything you need.
And far from everything you don't.

KALPATARU HABITAT
DR. S.S. RAO ROAD, PAREL

- Twin 23 storeyed luxury apartment blocks
- 2 &3 BHK apartments and 4 BHK penthouses
- Swimming pool, clubhouse & gym
- Squash court & tennis court
- Landscaped gardens & modern security systems

KALPATARU RESIDENCY
OPPOSITE CINE PLANET, SION CIRCLE

- Premium 18 storeyed towers with 2 & 3 BHK flats
- Swimming pool, squash court & gym
- Clubhouse, party lounge & landscaped gardens
- Basement and open car parking
- Tower A nearing completion

KARMA KSHETRA
NEAR SHANMUKHANANDA HALL, KING'S CIRCLE

- 25 storeyed tower with 2 wings
- 2 BHK apartments
- Landscaped gardens
- Ample car parking and modern security systems

Centrally located, they are near schools, banks, supermarkets, movie halls... And once you step in, you'll leave the hectic world outside. There'll be just you and a feeling that says, 'Relax, you are home'.

The projects are under construction/nearing completion. For details call 281 7171/282 2679/284 4102.

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 02
Fax: 204 1548/288 4778. E-mail: sales@kalpataru.com
visit us at www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।